सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्ठाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

संपहि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो। परूवणा णाम किं उत्तं होदि? ओघादेसेहि गुणेसु जीवसमासेसु पज्जत्तीसु पाणेसु सण्णासु गदीसु इंदिएसु काएसु जोगेसु वेदेसु कसाएसु णाणेसु संजमेसु दंसणेसु लेस्सासु भविएसु अभविएसु सम्मत्तेसु सण्णि-असण्णीसु आहारि-अणाहारीसु उवजोगेसु च पज्जत्तापज्जत्त-विसेसणेहि विसेसिऊण जा जीव-परिक्खा सा परूवणा णाम। उत्तं च—

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवजोगो वि य कमसो वीस तु परूवणा भणिया ॥२१७॥

सत्प्ररूपणाके सूत्रोंका विवरण स हो जानेके अनन्तर अब उनकी प्ररूपणाका वर्णन करते हैं—

शंका—प्ररूपणा किसे कहते हैं?

समाधान—सामान्य और विशेषकी अपेक्षा गुणस्थानोंमें, जीवस ोंमें, पर्याप्तियोंमें, प्राणोंमें, संज्ञाओंमें, गतियोंमें, इन्द्रियोंमें, कायोंमें, योगोंमें, वेदोंमें, कषायोंमें, ज्ञानोंमें, संयमोंमें, दर्शनोंमें, लेश्याओंमें, भव्योंमें, अभव्योंमें, सम्यक्त्वोंमें, संज्ञी-असंज्ञियोंमें, आहारी-अनाहारियोंमें और उपयोगोंमें पर्याप्त और अपर्याप्त विशेषणोंसे विशेषित करके जो जीवोंकी परीक्षा की जाती है, उसे प्ररूपणा कहते हैं। कहा भी है—

गुणस्थान, जीव स, पर्याप्ति, , , चौदह मार्गणाएं और उपयोग, प्रकार क्रमसे बीस प्ररूपणाएं कही गई हैं ॥ २१७ ॥

१ गो. जी २.

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवंति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः; चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात् । नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः; चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात् । न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति; मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति; आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नायाः भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति; वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिन द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनबल ; वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है; क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका भी मनःपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक मानने में विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर का अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल-रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिः पर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार-भय-मेहुण-परिग्गह-सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति; लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति; ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति; सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या-

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसं । वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनो वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय-विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रहसंज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अ स-गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । यह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है ।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा रही आओ, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है । और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

प्युपयोगसंज्ञानां मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति । न द्वितीयपक्षोक्तदोषोऽनभ्युपगमात् । प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्चेदुच्यते । पर्याप्तिजीवसमासाः कायेन्द्रियमार्गणयोर्निलीनाः; एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदानां तत्र प्रतिपादितत्वात् । उच्छ्वासभाषामनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीनाः; तेषां पर्याप्तिकार्यत्वात् । यबलप्राणोऽपि योगमार्गणातो निर्गतः; बललक्षणत्वाद्योगस्य । आयुःप्राणो गतौ निलीनः; द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात्। इन्द्रियप्राणा ज्ञानमार्गणायां निलीनाः; भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात्[1]। आहारे या तृष्णा काक्षा साहारसंज्ञा । सा च रतिरूपत्वान्मोहपर्यायः । रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति । ततः कषायमार्गणायामाहारसंज्ञा द्रष्टव्या । भयसंज्ञा भयात्मिका । भयञ्च क्रोधमानयोरन्तर्लीनम्; द्वेषरूपत्वात् । तो भयसंज्ञापि कषायमार्गणाप्रभवा । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाप्रभेदः; स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां तीव्रोदयरूपत्वात् । परिग्रहसंज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता; बाह्यार्थालीढलोभरूपत्वात्[2] । साका-

---

जिसप्रकार अन्तर्भाव होता है उसप्रकार कथन करना चाहिये ?

समाधान—दूसरे पक्षमें दिया गया दूषण तो यहां पर आता नहीं है, क्योंकि, वैसा माना नहीं गया है । तथा प्रथम पक्षमें जो जीवसमास आदिके चौदह मार्गणाओंमें अन्तर्भाव करनेकी बात कही है, सो कहा जाता है । पर्याप्ति और जीवसमास प्ररूपणा काय और इन्द्रिय मार्गणामें अन्तर्भूत हो जाती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्तरूप भेदोंका उक्त दोनों मार्गणाओंमें प्रतिपादन किया गया है । उच्छ्वासनिःश्वास, वचनबल और मनोबल, इन तीन प्राणोंका भी उक्त दोनों मार्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, ये तीनों प्राण पर्याप्तियोंके कार्य हैं । कायबलप्राण भी योगमार्गणासे निकला है, क्योंकि, योग काय, वचन और मनोबलस्वरूप होता है । आयुप्राण गतिमार्गणामें अन्तर्भूत है, क्योंकि, आयु और गति ये दोनों परस्पर अविनाभावी हैं । अर्थात् विवक्षित गतिके उदय होने पर तज्जातीय आयुका उदय होता है और विवक्षित आयुके उदय होने पर तज्जातीय गतिका उदय होता है । इन्द्रियप्राण ज्ञानमार्गणामें अन्तर्लीन हो जाते हैं, क्योंकि, भावेन्द्रियां ज्ञानावरणके क्षयोपशमरूप होती हैं । आहारके विषयमें जो तृष्णा या आकांक्षा होती है उसे आहारसंज्ञा कहते हैं । वह रतिस्वरूप होनेसे मोहकी पर्याय (भेद) है । रति भी रागरूप होनेके कारण माया और लोभमें अन्तर्भूत होती है । इसलिये कषायमार्गणामें आहारसंज्ञा समझना चाहिये । भयसंज्ञा भयरूप है, और भय द्वेषरूप होनेके कारण क्रोध और मानमें अन्तर्भूत है, इसलिये भयसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई समझना चाहिये । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाका प्रभेद है, क्योंकि, वह मैथुनसंज्ञा स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके तीव्र उदयरूप है । परिग्रहसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है, क्योंकि, यह संज्ञा बाह्य पदार्थोंमें व्याप्त लोभरूप है । साकार उपयोग ज्ञानमार्गणामें और अनाकार उपयोग दर्शनमार्गणामें

---

१ इंदियकाए लीणा जीवा पज्जत्ति आणमासमणो । जोगे काओ णाणे अक्खा गदिमग्गणे आऊ ॥ गो. जी. ५

२ मायालोहे रदिपुव्वाहार कोहमाणगम्हि भय । वेदे मेहुणसण्णा लोहम्हि परिग्गहे सण्णा ॥ गो. जी. ६.

रोपयोगो ज्ञानमार्गणायामनाकारोपयोगो दर्शनमार्गणायां (अन्तर्भवति) तयोर्ज्ञानदर्शनरूपत्वात्[1]। न पौनरुक्त्यमपि; कथञ्चित्तेभ्यो भेदात्। प्ररूपणायां किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते, सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते।

तत्थ 'ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी सिद्धा० चेदि' एदस्स ओघ-सुत्तस्स ताव परूवणा वुच्चदे। तं जहा- *अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि चोद्दस-गुणट्ठाणादीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि। अत्थि चोद्दस जीवसमासा। के ते? एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा।

अन्तर्भूत होते हैं, क्योंकि, वे दोनों ज्ञान और दर्शनरूप ही हैं। ऐसा होते हुए भी उक्त प्ररूपणाओंके स्वतन्त्र कथन करनेमें पुनरुक्ति दोष भी नहीं आता है, क्योंकि, मार्गणाओंसे उक्त प्ररूपणाएं कथंचित् भिन्न हैं।

शंका—प्ररूपणा करनेमें क्या प्रयोजन है?

समाधान—सूत्रके द्वारा सूचित पदार्थोंके स्पष्टीकरण करनेके लिये बीस प्रकारसे प्ररूपणा कही जाती है।

'सामान्यसे मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरणप्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक, अनिवृत्तिकरण प्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक, सूक्ष्मसांपराय-प्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक, उपशांतकषाय-वीतराग-छद्मस्थ, क्षीणकषाय-वीतराग छद्मस्थ, सयोगकेवली और अयोगकेवली जीव होते हैं। तथा सिद्ध भी होते हैं।' पहले इस सामान्य सूत्रकी प्ररूपणा कहते हैं। वह इसप्रकार है-चौदहों गुणस्थान हैं और चौदह गुणस्थानोंसे अतीत-गुणस्थान भी है। चौदहों जीवसमास हैं।

शंका—वे चौदहों जीवसमास कौनसे हैं?

१ सागारो उवजोगो णाणे मग्गम्हि दसणे मग्गे। अणगारो उवजोगो लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥ गो. जी. ७.
२ जी स तू ९-२३

* सामान्य जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो	वे.	क.	ज्ञा.	स	द	ले	भ.	स.	स.	आ	उ.
१४ क. उ	१४ जी स	६प ६अ. ५प ५अ ४प ४अ अ. प.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १ अ प्रा	४ क्षीण क.	४ कि. ना	५ अ. जा.	६ अ का	१५ अ. यो	३ अपग. वे.	४ अकषा	८	७ अनु	४	द्र. ६ भा ६ लेप.	२ भ. अ. अनु	६	२ स. अस. अनु	२ आहा. अना	२ साका. अना. तथा यु उ.

बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। बीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। तीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि'। एदे चोद्दस जीवसमासा अदीद-जीवसमासा वि अत्थि। अत्थि छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीद-पज्जत्ती वि अत्थि। आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणापाणपज्जत्ती भासापज्जत्ती मणपज्जत्ती चेदि। एदाओ छ पज्जत्तीओ सण्णिपज्जत्ताणं। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असमत्ताओ छ अपज्जत्तीओ भवंति। मणपज्जत्तीए विणा एदाओ चेव पंच पज्जत्तीओ असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं एदाओ चेव अणिप्पण्णाओ पंच अपज्जत्तीओ वुच्चंति। एदाओ चेव भासा-मणपज्जत्तीहि विणा चत्तारि पज्जत्तीओ एइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असंपुण्णाओ चत्तारि अपज्जत्तीओ भवंति। एदासिं छण्हम-

समाधान—' एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, संज्ञी और असंज्ञी। संज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। असंज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त'। इसप्रकार ये चौदह स होते हैं।

अतीत-जीवसमास भी जीव होते हैं। छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच ि ं, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां और चार अपर्याप्तियां हैं। तथा अतीतपर्याप्ति भी है। आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आनापानपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और मनःपर्याप्ति ये छह पर्याप्तियां हैं। ये छहों पर्याप्तियां संज्ञी-पर्याप्तके होती हैं। इन्हीं ं ं जीवोंके अपर्याप्त-कालमें पूर्णताको प्राप्त नहीं हुई ये ही छह अपर्याप्तियां होती हैं। मनःपर्याप्तिके विना उक्त पांचों ही पर्याप्तियां असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तोंसे लेकर द्वीन्द्रिय-पर्याप्तक जीवोंतक होती हैं। अपर्याप्तक अवस्थाको प्राप्त उन्हीं जीवोंके अपूर्णताको ये ही पांच अपर्याप्तियां होती हैं। भाषापर्याप्ति और मनःपर्या ं विना ये ही चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके होती हैं। इन्हीं एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालमें अपूर्णताको ये ही चार अपर्याप्तियां होती हैं। इन छह पर्याप्तियोंके अभावको अतीतपर्याप्ति

१ जी.सं. सू. ३४-३५.

भावो अदीद-पज्जत्ती णाम । उत्तं च—

आहार-सरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाण-भास-मणो ।
चत्तारि पंच छव्वि य एइंदिय-विगल-सण्णीणं[1] ॥२१८॥

जह पुण्णापुण्णाइं गिह-घड-वत्थाइयाइं दव्वाइं ।
तह पुण्णापुण्णाओ पज्जत्तियरा मुणेयव्वा[2] ॥ २१९ ॥

अत्थि दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छप्पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दोण्णि पाण एक्क पाण अदीद-पाणो वि अत्थि । चक्खु-सोद-घाण-जिब्भ-फासमिंदि पंचिंदियाणि, मणबल वचिबल यबल इदि तिण्णि बला, आणापाणो आऊ चेदि एदे दस पाणा । उत्तं च—

पंच वि इंदिय-पाणा मण-वचि-काएण तिण्णि बलपाणा ।
आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा[3] ॥ २२० ॥

क ` हैं । । भी है—

आहार, शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मन ये छह पर्याप्तियां हैं । उनमेंसे एकेन्द्रिय जीवोंके चार, वि अय और असंज्ञी-पंचेन्द्रियोंके पांच और संज्ञी जीवोंके छह पर्याप्तियां होती हैं ॥ २१८ ॥

वि प्रकार गृह, भट और आदि द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकारके होते हैं, उसीप्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दो प्रकारके होते हैं उनमेंसे पूर्ण जीव पर्याप्तक और अपूर्ण जीव अपर्याप्तक कहलाते हैं ॥ २१९ ॥

दश प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण होते हैं तथा अतीतप्राणस्थान भी है । चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ये पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल ये तीन बल, श्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण होते हैं । कहा भी है—

पांचों इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल और कायबल श्वासोच्छ्वास और आयु, ये दश प्राण हैं ॥ २२० ॥

१ गो. जी. ११९.
२ गो. जी ११८
३ गो. जी. १३०.

एदे दस पाणा पंचिंदिय-सण्णिपज्जत्ताणं । आणापाण-भासा-मणेहि विणा सण्णि-पंचिंदिय-अपज्जत्ताणं सत्त पाणा भवंति । दसण्हं पाणाण मज्झे मणेण विणा णव पाणा असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं भासा-आणापाण-पाणेहि विणा सत्त पाणा भवंति । पुव्विल्ल-णव-पाणेसु सोदिंदिय-पाणे अवणिदे चदुरिंदिय-पज्जत्तस्स अट्ठ पाणा भवंति। एदेसिं चेव चदुरिंदिय-अपज्जत्ताणं आणावाण-भासाहि विणा छप्पाणा भवंति । पुव्विल-अट्ठण्हं पाणाणं मज्झे चक्खिंदिए अवणिदे तीइंदिय-पज्जत्तयस्स सत्त पाणा भवंति । तेसु सत्तसु आणावाण-भासापाणे अवणिदे तीइंदिय-अपज्जत्तयस्स पंच पाणा भवंति । तीइंदियस्स वुत्त-सत्तण्हं पाणाणं मज्झे घाणिंदिए अवणिदे बीइंदिय-पज्जत्तयस्स छप्पाणा भवंति । तेसु छसु आणावाण-भासाहि विणा बीइंदिय-अपज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । बीइंदिय-पज्जत्तयस्स वुत्त-छण्हं पाणाणं मज्झे जिब्भिंदियपाणे भासापाणे अवणिदे एइंदिय-पज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । तेसु आणावाणपाणे अवणिदे एइंदिय अपज्जत्तयस्स तिण्णि पाणा भवंति[1] । उत्तं च—

दस सण्णीण पाणा सेसेगूणंतिमस्स वे ऊणा ।
पज्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेगूणा[2] ॥ २२१ ॥

पूर्वोक्त दश [illegible]न्द्रिय-संज्ञी-पर्याप्तकोंके होते हैं । आनापान, वचनबल और मने इन तीन [illegible]के विना शेष सात प्राण संज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्या [illegible]के होते हैं । दश प्राणोंमेंसे [illegible]लके विना शेष नौ प्राण असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं । और अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त इन्हीं जीवोंके वचनबल और आनापान प्राणके विना शेष सात प्राण होते हैं। पूर्वोक्त नौ प्राणोंमेंसे श्रोत्रेन्द्रिय प्राणको कम कर देने पर शेष आठ प्राण चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । इन्हीं चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आनापान और वचनबलके विना शेष छह प्राण होते हैं । पूर्वोक्त आठ प्राणोंमेंसे चक्षु इन्द्रियके कम कर देने पर शेष सात प्राण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । उन सात प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबल प्राणके कम कर देने पर शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । त्रीन्द्रिय जीवोंके कहे गये सात प्राणोंमेंसे घ्राणेन्द्रियके कम कर देने पर शेष छह प्राण द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं। उन छह प्राणोंमेंसे आनापान और व [illegible]लके कम कर देने पर शेष चार प्राण द्वीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । द्वीन्द्रिय-पर्याप्तकोंके कहे गये छह प्राणोंमेंसे रसनेन्द्रिय-प्राण और वचनबल-प्राणके कम कर देने पर शेष चार प्राण एकेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं। उनमेंसे आनापान प्राणके कम कर देने पर शेष तीन प्राण एकेन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं। कहा भी है—

संज्ञी जीवोंके दश प्राण होते हैं। शेष जीवोंके एक एक प्राण कम करना चाहिये।

१ इंदियकायाऊणि य पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा। वीइंदियादिपुण्णे वचीमणो सण्णिपुण्णेव ॥ गो. जी. १३२

२ गो. जी. १३३

दसण्हं पाणाणमभावो अदीदपाणो णाम। अत्थि चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि। काओ चत्तारि सण्णाओ इदि चे? वुच्चदे–आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा चेदि। एदासिं चउण्हं सण्णाणं अभावो खीणसण्णा णाम। अत्थि चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी वि अत्थि। एइंदियादी पंच जादीओ, अदीद-जादी वि अत्थि। अत्थि पुढविकायादी छक्काया, अदीदकाओ वि अत्थि। अत्थि पण्णरह जोगा, अजोगो वि अत्थि। अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि। अत्थि चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि। अत्थि अट्ठ णाणाणि। अत्थि सत्त संजमा, णेव संजमो णेव संजमासंजमो णेव असंजमो वि अत्थि। अत्थि चत्तारि दंसणाणि। दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि। भवसिद्धिया वि अत्थि, अभवसिद्धिया वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि। छ सम्मत्ताणि अत्थि। सण्णिणो वि अत्थि, असण्णिणो वि अत्थि, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि। आहारिणो

किन्तु अन्तिम अर्थात् एकेन्द्रिय जीवोंके दो प्राण कम होते हैं। यह पर्याप्तकोंका है। किन्तु अपर्याप्तक जीवोंमें संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात, सात प्राण होते हैं। तथा शेष जीवोंके उत्तरोत्तर एक एक कम प्राण होते हैं॥ २२१॥

विशेषार्थ—केवली भगवान्‌के पांच इन्द्रियां और मनोबलको छोड़कर शेष चार होते हैं। तथा योग निरोधके समय वचनबलका अभाव हो जाने पर कायबल आन और आयु ये तीन होते हैं और अन्तमें कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं। तथा चौदहवें गुणस्थानमें केवल एक आयुप्राण होता है।

इन दशों प्राणोंके अभावको अतीत-प्राण कहते हैं। चारों संज्ञाएं होती हैं और क्षीण-संज्ञा भी होती है।

शंका—वे चार संज्ञाएं कौनसी हैं?

समाधान—आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ये चार ं एं हैं। इन चारों संज्ञाओंके अभावको क्षीणसंज्ञा कहते हैं।

चार गतियां होती हैं और सिद्धगति भी है। एकेन्द्रियादि पांच जातियां होती हैं और अतीत-जातिरूप स्थान भी है। पृथिवीकाय आदि छह काय होते हैं और अतीतकाय स्थान भी है। पन्द्रह योग होते हैं और अयोग स्थान भी है। तीन वेद होते हैं और अपगतवेद स्थान भी है। चार कषायें होती हैं और अकषाय स्थान भी है। आठ ज्ञान होते हैं। सात संयम होते हैं और संयम, संयमासंयम और असंयम रहित भी स्थान है। चार दर्शन होते हैं। द्रव्य और भावके भेदसे छह लेश्याएं होती हैं और अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक जीव होते हैं, अभव्य-सिद्धिक जीव होते हैं और भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। छह सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी भी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं और संज्ञी तथा, असंज्ञी

वि अत्थि, अणाहारिणो वि अत्थि । सागारुवजुत्ता वि अत्थि, अणागारुवजुत्ता वि अत्थि, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि ।

पज्जत्त-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, अदीदगुणट्ठाणं णत्थि; पज्जत्तेसु तस्स संभवाभावादो । सत्त जीवसमासा, अदीदजीवसमासो णत्थि; छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, अदीदपज्जत्ती णत्थि; दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, अदीदपाणो णत्थि; चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी णत्थि; एइंदियादी पंच जादीओ अत्थि, अदीदजादी णत्थि; पुढवीकायादी छक्काया अत्थि, अकाओ णत्थि; ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेहि विणा एक्कारह जोग, अजोगो वि अत्थि; तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि; अट्ठ णाण, सत्त संजम, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो णत्थि; चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि

विकल्प रहित भी स्थान होता है। आहारक भी होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगसे युक्त भी होते हैं अनाकार उपयोगसे भी युक्त होते हैं और साकार उपयोग तथा अनाकार उपयोग इन दोनोंसे युगपत् युक्त भी होते हैं।

पर्याप्त अवस्थासे युक्त जीवोंके ओघालाप कहने पर—चौदहो गुणस्थान होते हैं। अतीत-गुणस्थानरूप स्थान नहीं होता है, क्योंकि, पर्याप्तकोंमें अतीत-गुणस्थान अर्थात् सिद्ध अवस्थाकी संभावना नहीं है। पर्याप्तसंबन्धी सातो जीवसमास होते हैं, किन्तु अतीत जीव-

(सिद्ध अवस्था) रूप स्थान नहीं है। संज्ञी जीवोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकल-त्रयोंके पांच पर्याप्तियां और एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां होती हैं, किंतु अतीत-पर्याप्तिरूप स्थान नहीं होता है। संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, और एकेन्द्रियके चार प्राण होते हैं, किंतु अतीत प्राणरूप स्थान नहीं हैं। चारो संज्ञाएं होती हैं और क्षीणसंज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं, किंतु सिद्धगति नहीं होती है। एकेन्द्रियादि पांचों जातियां होती हैं, किंतु अतीत-जातिरूप स्थान नहीं होता है। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं, किंतु अकाय-रूप स्थान नहीं होता है। औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगके विना ग्यारह योग होते हैं और अयोग-स्थान भी होता है। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेद-स्थान भी होता है। चारों कषाय होती हैं और अकषाय-स्थान भी होता है। आठों ज्ञान होते हैं। सातों संयम होते हैं किंतु संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान नहीं होता है। चारों दर्शन होते हैं। द्रव्य और भावके भेदसे छहों लेश्याएं होती

छ लस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि; दव्वेण छ लेस्सेत्ति भणिदे सरीररस छव्वण्णा घेत्तव्वा×। भावेण छ लेस्सा त्ति भणिदे जोग-कसाया छब्भेदं दिट्ठा घेत्तव्वा*। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया णत्थि; छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि; आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा, सागारणगारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि'।

संपहि अपज्जत्ति-पज्जाय-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी पमत्तसंजदा सजोगिकेवलि त्ति पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण

हैं और अलेश्यास्थान भी होता है। द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर शरीरसंबन्धी छह वर्णोंका ग्रहण करना चाहिये। भावसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर योग और कषायोंकी छह भेदोंको प्राप्त मिश्रित अवस्थाका ग्रहण करना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक होते हैं, किंतु भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान नहीं होता है। छहों सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं, तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानकी अपेक्षा संज्ञी और असंज्ञी विकल्प रहित भी जीव होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अब अपर्याप्ति-पर्यायसे युक्त अपर्याप्तक जीवोंके, ओघालाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तरूप सात जीवसमास होते हैं। अपर्याप्त संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, अपर्याप्त असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंके चार अपर्याप्तियां होती हैं। संज्ञी, असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय,

× वण्णोदयेण जणिदो सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा ॥ गो जी ४९४

* जोगपउत्ती लेस्सा कसायउदयाणुरंजिया होई ॥ गो जी ४९०.

नं. १ पर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	प	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	७ प.	६ प. ५ प ४ प	१०।९ ८।७ ६।४	४	४	५	६	११ औ मि वै मि आ मि कार्म के बिना	३ स्त्री पुरु क	४ क्रो मा लो	८	७	४	द्र ६ भा ६	२ भ अभ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अनाका यु उ

छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, अदीदसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेत्ति चत्तारि जोगा, तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि; मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छण्णाण, चत्तारि संजम सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादासंजमेहि, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; जम्हा सव्व-कम्मस्स णिस्ससोवचओ सुक्किलो भवदि तम्हा विग्गहगदीए वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरीरस्स सुक्कलेस्सा भवदि। पुणो सरीरं घेत्तूण जाव पज्जत्तीओ समाणेदि ताव छव्वण्ण-परमाणु-पुंज-णिप्पज्जमाण-सरीरत्तादो तस्स सरीरस्स लेस्सा काउलेस्सेत्ति भण्णदे[1], एवं दो सरीर-साओ भवंति। भावेण छ लेस्सेत्ति वुत्ते णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवाणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ भवंति। सोधम्मादि-उवरिम-

---

श्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी अपेक्षा क्रमसे सात प्राण, प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं होती हैं और अतीत-संज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं। एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां होती हैं। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं। औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाय इसप्रकार चार योग होते हैं। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेदरूप भी स्थान होता है। चारों कषायें होती हैं और कषायरहित भी स्थान होता है। मनःपर्यय और विभंग-ज्ञानके विना छह ज्ञान होते हैं। सूक्ष्मसांपराय, परिहार-विशुद्धि और संयमासंयमके विना सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाख्यात और असंयम ये चार होते हैं। चारों दर्शन होते हैं। द्रव्यलेश्याकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या होती है और भावलेश्याकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं। अपर्याप्त अवस्थामें द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं ही क्यों होती हैं, आगे इसीका समाधान करते हैं कि जिस कारणसे संपूर्ण कर्मोंका विस्रसोपचय शुक्ल ही होता है, इसलिये विग्रहगतिमें विद्यमान संपूर्ण जीवोंके शरीरकी शुक्ललेश्या होती है। तदनन्तर शरीरको ग्रहण करके जबतक पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है त छह वर्णवाले परमाणुओंके पुंजोंसे शरीरकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उस शरीरकी कापोत लेश्या कही जाती है। इसप्रकार अपर्याप्त अवस्थामें शरीर-संबन्धी दो ही लेश्याएं होती हैं। भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके अपर्याप्त-कालमें कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं। तथा सौधर्मादि ऊपरके देवोंके अपर्याप्त कालमें पीत, पद्म और

---

१ . .× सव्व विग्गहे सुक्का। सव्वो मिस्सो देहो वण्णोदयवण्णो हवे णियमा॥ गो. जी. ४९८

देवाणमपज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि[२]।

संपहि मिच्छाइट्ठीणं ओघालावे भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, आहार-दुगेण विणा तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

शुक्ल लेश्याएं होती हैं ऐसा जानना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक भी होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी होते हैं और संज्ञी, असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और युगपत् उन दोनों उपयोगोंसे युक्त भी होते हैं।

अब मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञीके दश प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रियके सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रियके चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, आहारकद्विक अर्थात् आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. २ अपर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	सं	ग	इ.	का	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि सा अवि प्र सयो	७ अप.	६ अप ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४ म. क	४	५	६	४ औ मि वै ,, आ ,, कार्म ,,	२ नपुंस क	४ अक	६ मन विभं विना	४ सामा छे यथा अस	४	३ का शु मा ६	२ म. अ	१ क्षा यि क	२ स. अस अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना यु-उ

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति[३]।

तेसिं[४] चेव मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी

द्रव्य और भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक और असंज्ञिक, आहारक और अनाहारक साकार (ज्ञान) उपयोगी और अनाकार (दर्शन) उपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, सज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दश प्राण, असज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, चारों

नं. ३ मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६ प ६ अप ५ प ५ अप ४ प ४ अप	१०।७ ९।७ ८।६ ७।५ ६।४ ४।३	४	४	५	६	१३ आ हि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	६ द्र ६ भा	२ भ अभ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना

नं. ४ मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ प ५ ,, ४ ,,	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	६ द्र ६ भा	२ भ अभ	१ मि.	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

तेसिं चेव अपज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-णाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय-आदि छहों काय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्र-योंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण, एकेन्द्रियोंके तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधि-ज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या, भ ी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५ मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-आलाप.

गु	जी	प	मा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ सू ल	६ अप ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु,	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ अभ	१ मि	२ स. अस.	२ आहा. अना	२ साका. आना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि[1]।

तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय , त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, दन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवस , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं ६ दन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६ प	१०	४	४	१	७	१३	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	२	२
सा	स प	६ अ	७			पंचे	त्रस	आ			अज्ञा	असं	चक्षु	भा ६	भ	सासा	स	आहा	साका
	म अ							द्वि					अच					अना	अना.
								विना											

वजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी णिरयगदीए विणा, पंचिंदियजादी तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रके विना अपर्याप्त-संबन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंग-ज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७ सासादन सम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ स प	६ प	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	१० म ४ व. ४ औ १ वै. १	३	४	२ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं ८ सासादन सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा	१ स अ	६ अप	७ अप.	४	३ न विना	१ पंच	१ त्रस	३ औ मि वै ,, कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा.६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा. अना	२ साका अना.

सम्मामिच्छाइट्ठीणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, अण्णाण-मिस्साणि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

असंजदसम्माइट्ठीणमोघ-परूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक तीसरा गुणस्थान, एक सञ्ज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, अज्ञान-मिश्रित आदिके तीनों ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेष—मिश्रगुणस्थानवाले जीव पर्याप्तक ही होते हैं, इसलिये मिश्रगुणस्थानके उक्त सामान्यालाप ही पर्याप्तकके समझना चाहिये।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, सञ्ज्ञी-पर्याप्त और सञ्ज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश , सात , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन

नं. ९ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सम्य.	१ स प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान अज्ञा. मिश्र	१ असं	२ चक्षु अचक्षु	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य.	१ सं	१ आहा	२ साका. अना

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

असंजदसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि. सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त एक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १० असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ स प स अ	६ प ६अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१३ आ द्वि विना	३	४	३ म श्रु अव	१ असं.	३ के विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ. क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ सा.का अना

नं. ११ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ स प	६ प	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व. ४ औ १ वै १	३	४	३ म श्रु अव	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ क्षा. क्षायो	१ स	२ आहा	२ साका. अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघपरूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; णिरयादो आगंतूण मणुस्सेसुप्पण्ण-असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ लब्भंति। भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, अणादिय-मिच्छाइट्ठी वा सादिय-मिच्छाइट्ठी वा चदुसु वि गदीसु उवसमसम्मत्तं घेत्तूण दिट्ठजीवा ण काल करेंति। तं कथं णव्वदि त्ति वुत्ते आइरिय-वयणादो वक्खाणदो य णव्वदि। चारित्तमोह उवसामगा मदा देवेसु उववज्जंति ते अस्सिदूण अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। वेदगसम्मत्तं पुण देव-मणुस्सेसु अपज्जत्तकाले लब्भदि, वेदगसम्मत्तेण सह गद-देव-मणुस्साणमण्णोण्णगमणागमण-विरोहाभावादो। कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं तिरिक्ख-णेरइयाणमपज्जत्तकाले लब्भदि। खइयसम्मत्तं पि चदुसु वि गदीसु पुव्वायु-बंधं पडुच्च अपज्जत्तकाले

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और आनापानके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु, अचक्षु और अवधि ये तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। छहों लेश्याएं होनेका यह कारण है कि नरकगतिसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले असयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं पायीं जाती हैं। लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व होते हैं, क्योंकि, अनादि मिथ्यादृष्टि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि जीव चारों ही गतियोंमें उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके पाये जाते हैं, किन्तु मरणको प्राप्त नहीं होते हैं।

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि, उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव मरण नहीं करते हैं?

समाधान—आचार्योंके वचनसे और (सूत्र) व्याख्यानसे जाना जाता है कि उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव मरते नहीं है। किन्तु चारित्रमोहके उपशम करने वाले जीव मरते हैं और देवोंमें उत्पन्न होते हैं, अतः उनकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्व पाया जाता है। वेदकसम्यक्त्व तो देव और मनुष्योंके अपर्याप्तकालमें पाया ही जाता है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वके साथ मरणको प्राप्त हुए देव और मनुष्योंके परस्पर गमनागमनमें कोई विरोध नहीं पाया जाता है। कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा तो वेदकसम्यक्त्व तिर्यंच और नारकी जीवोंके अपर्याप्त कालमें भी पाया जाता है। क्षायिक सम्यक्त्व भी सम्यग्दर्शनके पहले बांधी गई आयुके बंधकी अपेक्षासे चारों ही गतियोंके अपर्याप्तकालमें पाया जाता है, इसलिये असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके अपर्याप्तकालमें तीनों ही सम्यक्त्व होते हैं।

लब्भदि तेण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तकाले भवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा' ।

संजदासंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; केइं सरीर-णिव्वत्तणट्ठमागद-परमाणु-वण्णं घेत्तूण संजदासंजदादीण भावलेस्सं परूवयंति । तण्ण घडदे, कुदो ? दव्व-भावलेस्साणं भेदाभावादो ' लिम्पतीति लेश्या ' इति वचनव्याघाताच्च । कम्म-लेव-हेदूदो जोग-कसाया चेव भाव-लेस्सा त्ति गेण्हिदव्वं । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि,

सम्यक्त्वके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक पांचवा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाय ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भावकी अपेक्षा तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं होती हैं।

कितने ही आचार्य, शरीर-रचनाके लिये आये हुए परमाणुओंके वर्णको लेकर संयतासंयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंके भावलेश्याका वर्णन करते हैं। किन्तु यह उनका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, वैसा माननेपर द्रव्य और भावलेश्यामें फिर कोई भेद ही नहीं रह जाता है और 'जो लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं' इस आगम वचनका व्याघात भी होता है। इसलिये 'कर्मलेपका कारण होनेसे योग और कषायसे अनुरंजित प्रवृत्ति ही भावलेश्या है' ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिये।

लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

पृ १२ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	म	ई	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि को	१ स ज	६ अप	७ अप		४	१ प	१ पृ	२ औ मि १ वै. मि १ कार्म १	२ स्त्री बिना	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द बिना	द्र २ का शु भा. ६	१ भ	३ औ. क्षा क्षायो	१ स	१ आहा अना	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[13]।

पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, त ाओ, एक्कारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[14]।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक गुणस्थान, दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, ाय, ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ—यद्यपि टीकाकारने प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ गुणस्थानके सामान्या-

नं १३ संयतासंयतोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
गु	स	६	७		म	पचे	त्रस	म ४			मति	यथा.	के द.	भा ३	भ	औ	स.	आहा.	साका
स्था	प	अप	अप		ति			व ४			श्रुत		विना.	शुभ		क्षा			अना
								औ १			अव					क्षायो.			

नं. १४ प्रमत्तसंयत-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	३	४	४	३	३	द्र.६	१	३	१	१	२
गु	स	प	प		प	पचे.	त्रस	म. ८			के.	सा.	के.द.	भा.३	म.	ओ.	स.	आहा.	साका.
स्था	प.	६	७					व. ४			विना.	छे.	विना.	शुभ.		क्षा			अना.
	म अ	अप	अप					औ. १				परि.				क्षायो			
								आहा. २											

अप्पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, असादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहार-सण्णा अप्पमत्तसंजदस्स णत्थि । कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उवयारेण भय-मेहुण-परिग्गहसण्णा अत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद,

लापोंके अतिरिक्त उनके पर्याप्त और अपर्याप्त सबन्धी आलापोंका स्वतन्त्ररूपसे कथन किया है फिर भी छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका स्वतन्त्र कथन न करके केवल ओघालाप ही कहा गया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि धवलाकारकी दृष्टि विग्रह-गतिसंबन्धी गुणस्थानोंमें ही पृथक् रूपसे आलापोंके दिखानेकी रही है अन्य अपर्याप्त संबन्धी गुणस्थानोंमें नहीं। गोम्मटसार जीवकाण्डकी टीकामें भी अन्तमें आलापोंका कथन करते हुए टीकाकारने इसी सरणीको ग्रहण किया है। अतएव मूलमें छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका पृथक् रूपसे नहीं पाया जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। फिर भी सर्व साधारण पाठकोंके परिज्ञानार्थ वे यहां लिखे जाते हैं।

प्रमत्तसंयतके पर्याप्तसंबन्धी ओघालापके कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति-त्रसकाय, वैक्रियककाय और अपर्याप्तसंबन्धी चारों योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवल-ज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवल दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे पीत, और शुक्ल, ये तीन लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त उन्हीं प्रमत्तसंयतोंके ओघालाप कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मन, वचनबल और श्वासो-च्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, एक आहार-मिश्रकाययोग, एक पुरुष वेद, चारों कषाय, मन-पर्यय और केवलज्ञानके विना तीन , सामायिक और छेदोपस्थापना संयम, केवल दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यग्दर्शन, संज्ञी, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक सातवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार, भय और मैथुन ये तीन संज्ञाएं, होती हैं, क्योंकि, असातावेदनीय कर्मकी उदीरणाका अभाव हो जानेसे अप्रमत्तसंयतके आहारसंज्ञा नहीं होती है। किन्तु भय आदि संज्ञाओंके कारणभूत कर्मोंका उदय संभव है, इसलिये उपचारसे भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञाएं है। संज्ञाके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनो-योग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके

चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

अपुव्वकरणाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, ज्झाणणिमपुव्वकरणाणं भवदु णाम वचिबलस्स अत्थित्तं भासापज्जत्ति-सण्णिद-पोग्गलखंध-जणिद-सत्ति-सब्भावादो। ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि? न, अन्तर्जल्पप्रयत्नस्य कायगतसूक्ष्मप्रयत्नस्य च तत्र सत्त्वात्। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,

विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे तेज पद्म और शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक आठवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिक, काययोग ये नौ योग होते हैं।

शंका—ध्यानमें लीन अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके वचनबलका सद्भाव भले ही रहा आवे, क्योंकि, भाषापर्याप्तिनामक पौद्गलिक स्कन्धोंसे उत्पन्न हुई शक्तिका उनके सद्भाव पाया जाता है किन्तु उनके वचनयोग या काययोगका सद्भाव नहीं मानना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्यान-अवस्थामें भी अन्तर्जल्पके लिये प्रयत्नरूप वचनयोग और कायगत-सूक्ष्म-प्रयत्नरूप काययोगका सत्त्व अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके पाया ही जाता है इसलिये वहां वचनयोग और काययोग भी संभव हैं।

योगोंके आगे तीनों वेद, चारों कषायें, केवल ज्ञानके विना शेष चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

न. १५ अप्रमत्तसंयतोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्रा.	स	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	६	१	३	१	१	२
अप्र	स प			आहा	म	प	त्रस.	म. ८ व ४ औ. १			के	सा. छे. परि	के	३ भा शुभ.	भ.	औ. ज्ञा. क्षायो	स	आहा	साका. अना
				विना							विना		विना						

भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५] ।

पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, अपुव्वकरणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदयो णट्ठो तेण भयसण्णा णत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

केवल शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिन्, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर— नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं होती हैं। दो संज्ञाएं होने का कारण यह है कि अपूर्वकरण गुणस्थानके अन्तिम समयमें भयकी उदीरणा तथा उदय नष्ट हो गया है, इसलिये यहांपर भयसंज्ञा नहीं है । उसके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न. १६ अपूर्वकरण–आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१ अपू. क.	१ सं. प.	६	१०	२ आहा. विना	१ म	१ त्र	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ के विना	२ सा. छे	३ चक्षु अचक्षु अव.	६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ क्षा क्षा	१	२ आहा	२ साका अना

न. १७ अनिवृत्तिकरण–प्रथमभाग–आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सं	आ	उ.
१ अनि प्र भा	१ सं प	६	१०	२ मे. परि	१ म	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	४ के विना	२ सा. छे	३ के द विना	६ द्र. १ भा	१ भ	२ औ क्षा	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना

विदिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, अंतरकरणं काऊण पुणो अंतोमुहुत्तं गतूण वेदोदओ णट्ठो तेण मेहुणसण्णा णत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तादिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, तिण्णि कसाय, वेदेसु खीणेसु पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण कोधोदयो णस्सदि तेण कोधकसाओ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा होती है। एक परिग्रह संज्ञाके होनेका यह कारण है कि अन्तरकरण करनेके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर वेदका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये द्वितीय भागवर्ती जीवके मैथुनसंज्ञा नहीं रहती है। संज्ञा आलापके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, चारों कषाये, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवल-दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औप-शमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीयभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, क्रोधकषायके विना तीन कषायें होती हैं। तीन कषायोंके होनेका यह कारण है कि तीनों वेदोंके क्षय हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त जाकर क्रोधकषायका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये इस भागमें क्रोधकषाय नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और

नं. १८ अनिवृत्तिकरण-द्वितीयभाग-आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	सं	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनिवृत्तिभा	१ संपू	६	१०	१ पर्याप्त	१ मनु	१ पंचे	१ त्रस	९ म व औ १	० अपगत	४	४ केवल विना	२ सा छे	३ केव ल विना	६ द्र १ भा	१ भ	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

चउ-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, कोधोदए विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माणोदओ वि णस्सदि तेण माणकसाओ तत्थ णत्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषायें होती हैं। दो कषायोंके होनेका यह कारण है कि क्रोधकषायके उदय नष्ट होने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर मानकषायका उदय भी नष्ट हो जाता है इसलिये मानकषाय इस भागवर्ती जीवोंके नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९ अनिवृत्तिकरण-तृतीयभाग-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	सं	आ.	उ
१ अनि तृ मा	१ सं प	६	१०	१ पर्या	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	२ मा लो	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	६ द १ मा	१ म	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २० अनिवृत्तिकरण चतुर्थभाग-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१ अनि चतु मा	१ सं प	६	१०	१ प	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	२ माया लोभ	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	६ द १ मा	१ म	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

पंचम-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माओदओ वि णस्सदि तेण मायाकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

सुहुमसांपराइयाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय है। लोभकषाय होनेका यह कारण है कि मानकषायके उदयके नष्ट हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर माया-कषायका उदय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए मायाकषाय इस भागमें नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक दशवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक काययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायविशुद्धि संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक,

नं. २१ अनिवृत्तिकरण-पंचमभाग-आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	सं.	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	१	१	९	१	१	९	०	१	४	०	३	६	१	२	१	१	२
अनि.	स	प			प			त्र	म ४			के	मा	के द	द्र	भ	आ.	स	आहा	साका
पंच								स	व ४			विना	३	विना	१		क्षा			अना.
मा									आ १						मा					

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

उवसंतकसायाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; केण कारणेण सुक्कलेस्सा? कम्म-णोकम्म-लेव-णिमित्त-जोगो अत्थि त्ति । भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक ग्यारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा होती है। संज्ञाके उपशान्त होने का यह कारण है कि यहांपर मोहनीय कर्मका पूर्ण उपशम रहता है, इसलिये उसके निमित्तसे होनेवाली संज्ञाएं भी उपशान्त ही रहती हैं, अतएव यहां उपशान्तसंज्ञा कही। आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल-लेश्या होती है।

शंका—जब कि इस गुणस्थानमें कषायोंका उदय नहीं पाया जाता है, तो फिर यहां शुक्ललेश्या किस कारणसे कही?

समाधान—यहां पर कर्म और नो कर्मके लेपके निमित्तभूत योगका सद्भाव पाया जाता है, इसलिये शुक्ललेश्या कही है।

लेश्याके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. २२ सूक्ष्मसाम्परायआलापं

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सू	२ स.प	६	१०	१ सू.प	१ म	२ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	०	१ सू लो	४ के विना	१ सूक्ष्म.	३ के द विना	६ द्र १ भा शु	१ म	२ औ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अनाका

पंचम-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण मायोदओ वि णस्सदि तेण मायाकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

सुहुमसांपराइयाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुममांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय है। लोभकषाय होनेका यह कारण है कि मानकषायके उदयके नष्ट हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर माया-कषायका उदय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए मायाकषाय इस भागमें नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक दशवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक काययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायविशुद्धि संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक,

नं. २१ अनिवृत्तिकरण-पंचमभाग-आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	ई	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ अनि पंच भा	१ स.प	६	१०	१ प	१	१ पुरु	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० द्रव्य से पुरु	१	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	६ द्र १ भा	१ भ	२ औ. क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

उवसंतकसायाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; केण कारणेण सुक्कलेस्सा? कम्म-णोकम्म-लेव-णिमित्त-जोगो अत्थि त्ति । भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक ग्यारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा होती है। संज्ञाके उपशान्त होने का यह कारण है कि यहांपर मोहनीय कर्मका पूर्ण उपशम रहता है, इसलिये उसके निमित्तसे होनेवाली संज्ञाएं भी उपशान्त ही रहती हैं, अतएव यहां उपशान्तसंज्ञा कही। आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल-लेश्या होती है।

शंका—जब कि इस गुणस्थानमें कषायोंका उदय नहीं पाया जाता है, तो फिर यहां शुक्ललेश्या किस कारणसे कही?

समाधान—यहां पर कर्म और नो कर्मके लेपके निमित्तभूत योगका सद्भाव पाया जाता है, इसलिये शुक्ललेश्या कही है।

लेश्याके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक,

सं. २२ सूक्ष्मसाम्परायऽऽलापः

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सू.	१ स.प	६	१०	१ सू प	२ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	०	१ सू लो	४ के विना	१ सू सं.	३ के द विना	६ द्र १ भा शु	१ भ	२ औ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अनाका

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, खीणकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ,

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक बारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा होती है। क्षीणसंज्ञाके होनेका यह कारण है कि कषायोंका यहां पर सर्वथा क्षय हो जाता है, इसलिये संज्ञाओंका क्षीण हो जाना स्वाभाविक ही है। आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञानके बिना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके बिना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सयोगिकेवलियोंके ओघालाप कहने पर—एक तेरहवां गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां होती हैं।

नं २३ उपशान्तकषाय-आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ उप	१ सं प	६	१०	० उप	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपगत	० अक	४ के बि	१ यथा	३ के द विना	द्र ६ भा शु	१ भ	२ औ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. २४ क्षीणकषाय-आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ क्षी	१ सं प	६	१०	० क्षी	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपगत	० क्षी	४ के बिना	१ यथा	३ के द विना	द्र ६ भा शु	१ भ	२ क्षा	१ स	१ आ	२ साका अना

छ अपज्जत्तीओ, केवली कवाड-पदर-लोगपूरण-गओ पज्जत्तो अपज्जत्तो वा ? ण ताव पज्जत्तो, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'' इच्चेदेण सुत्तेण तस्स अपज्जत्तसिद्धीदो। सजोगिं मोत्तूण अण्णे ओरालियमिस्सकायजोगिणो अपज्जत्ता 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति सुत्त-णिद्देसादो। ण, आहारमिस्सकायजोगपमत्तसंजदाणं पि पज्जत्तयत्त-प्पसंगादो। ण च एवं, 'आहारमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं' त्ति सुत्तेण तस्स अपज्जत्तभाव-सिद्धीदो। अणवगासत्तादो[४] एदेण सुत्तेण

शंका—कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवली पर्याप्त हैं या अपर्याप्त ?

समाधान—उन्हें पर्याप्त तो माना नहीं जा सकता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे उनके अपर्याप्तपना सिद्ध है, इसलिये वे अपर्याप्तक ही हैं।

शंका—'सम्यग्मिथ्यादृष्टि, संयतासंयत और संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इसप्रकार सूत्र-निर्देश होनेके कारण यही सिद्ध होता है कि सयोगीको छोड़कर अन्य औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक हैं। यहां शंकाकारका यह अभिप्राय है कि औदारिकमिश्रयोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं यह सामान्य विधि है और सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयत जीव पर्याप्तक होते हैं यह विशेष विधि है और संयतोंमें सयोगियोंका अन्तर्भाव हो ही जाता है अतएव 'विशेषविधिना सामान्यविधिर्बाध्यते' इस नियमके अनुसार उक्त विशेष-विधिसे सामान्य-विधि बाधित हो जाती है जिससे कपाटादि समुद्घातगत केवलीको अपर्याप्त सिद्ध करना असंभव है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, यदि 'विशेष-विधिसे सामान्य-विधि बाधित होती है' इस नियमके अनुसार 'औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं' यह सामान्य-विधि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि पर्याप्तक होते हैं' इससे बाधी जाती है तो आहारमिश्रकाययोगवाले प्रमत्तसंयतोंको भी पर्याप्तक ही मानना पड़ेगा, क्योंकि, वे भी संयत हैं। किंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, 'आहारकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे वे अपर्याप्तक ही सिद्ध होते हैं।

शंका—'आहारमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र अनवकाश है,

१ जो म सू ७६ २ जी. स सू ९०. ३ जी. स. सू ७८

४ अन्तरंगादप्यपवादो बलीयान्। परि शे पृ ३५८ येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति। येन नाप्राप्ते इदस्य यत्कर्तृकाद्यवश्यकप्राप्ताविदंथा नपुंसकस्य प्रकृतार्थादर्थबोधकत्वात्। एवं च विशेषशास्त्रोद्दिष्यविशेषधर्मावच्छिन्नवृत्तिसामान्यधर्मावच्छिन्नोद्दिश्यकशास्त्रस्य विशेषशास्त्रेण बाध। तदप्राप्तियोग्येऽप्यारिप्यं तस्य बाधकत्वे बीजम्। परि शे ३५९, ३६८.

'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'[1] ति एदेण ण बाहिज्जदि सावगासत्तेण बलाभावादो[2]। ण, 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता'[3] त्ति एदस्स वि सुत्तस्स सावगासत्तदंसणादो। सजोगिट्ठाणं दोसु वि सुत्तेसु सावगासेसु जुगवं ढुक्केसु 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदेण सुत्तेण ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'[4] ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि परत्तादो[5]। ण, परसद्दो इट्ठवाचओ[6] त्ति घेप्पमाणे पुव्वेण बाहिज्जदि त्ति अणेयंतियादो। णियम-सद्दो

अर्थात् इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये कोई दूसरा स्थल नहीं है, अतः इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र बाधा जाता है। किंतु औदारिक-मिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र नहीं बाधा जाता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र सावकाश होनेके कारण, अर्थात्, इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये सयोगियोंको छोड़कर अन्य स्थल भी होनेके कारण, निर्बल है अतः आहारकसमुद्घातगत जीवोंके जिस-प्रकार अपर्याप्तपना सिद्ध किया जा सकता है उसप्रकार समुद्घातगत केवलियोंके नहीं किया जा सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होता है' यह सूत्र भी सावकाश देखा जाता है, अर्थात्, सयोगीको छोड़कर अन्य स्थलमें भी इस सूत्रकी प्रवृत्ति देखी जाती है, अतः निर्बल है और इसलिये 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रकी प्रवृत्तिको नहीं रोक सकता है।

शंका—पूर्वोक्त समाधानसे यद्यपि यह सिद्ध हो गया कि पूर्वोक्त दोनों सूत्र सावकाश होते हुए भी सयोगी गुणस्थानमें युगपत् प्राप्त हैं, फिर भी 'परो विधिर्बाधको भवति' अर्थात्, पर विधि बाधक होती है, इस नियमके अनुसार 'सयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रके द्वारा 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र बाधा जाता है, क्योंकि, यह सूत्र पर है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'परो विधिर्बाधको भवति' इस नियममें पर शब्द इष्ट अर्थात् अभिप्रेत अर्थका वाचक है, पर शब्दका ऐसा अर्थ लेनेपर जिसप्रकार 'सयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रसे 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता

१ जी स सू ९० २ जी स. सू ७८

३ अपवादो यदन्यत्र चरितार्थस्तर्हि अन्तरेण बाध्यते निरवकाशत्वरूपस्य बाधकत्वबीजस्याभावात्। परि. शे पृ ३८६

४ पूर्वापर बलवत् विप्रतिषेधशास्त्रात् (विप्रतिषेधे पर कार्यमिति सूत्रात्) पूर्वस्य पर बाधकमिति यावत्। परि शे पृ २३७

५ विप्रतिषेधसूत्रस्थपरशब्दस्येष्टवाचित्वम्। परि शे पृ २४५

सप्पओजणो णिप्पओजणो ? ण विदिय-पक्खो, पुप्फयंत-वयण-विणिग्गयस्स णिप्फलत्त-विरोहादो। ण चेदस्स सुत्तस्स णिच्चत्त[1]-पयासण-फलं, णियम-सद्द-वदिरित्त-सुत्ताणमणिच्चत्त-प्पसगादो। ण च एवं, 'ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं[2]' त्ति सुत्ते णियमाभावेण अपज्जत्तेसु वि ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-प्पसंगादो। तदो णियम-सद्दो णावओ। अण्णहा अणत्थयत्त-प्पसंगादो। किमेदेण जाणाविज्जदि ? 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तमणिच्चमिदि तेण[3] उत्तरसरीरमुट्ठाविद-सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद संजदाण कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीण च सिद्धम-

है' यह सूत्र बाधा जाता है, उसीप्रकार पूर्व अर्थात् 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, यह सूत्र भी बाधा जाता है, अतः शंकाकारके पूर्वोक्त कथनमें अनेकान्त दोष आ जाता है।

शंका— जब कि कपाट-समुद्घातगत केवली-अवस्थामें अभिप्रेत होनेके कारण 'औदारिक-मिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र पर है तो 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इस सूत्रमें आये हुए नियम शब्दकी क्या सार्थकता रह गई? और ऐसी अवस्थामें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उक्त सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द सप्रयोजन है कि निष्प्रयो ?

समाधान—इन दोनों विकल्पोंमेंसे दूसरा विकल्प तो माना नहीं जा सकता है, क्यों[4], पुष्पदन्तके वचनसे निकले हुए तत्त्वमें निरर्थकताका होना विरुद्ध है। और सूत्रकी नित्यताका प्रकाशन करना भी नियम शब्दका फल नहीं हो ता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर[5] सूत्रोंमें नियम शब्द नहीं पाया जाता है उन्हें अनित्यताका प्रसंग आ जायगा। परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर 'औदारिककाययोग पर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रमें नियम शब्दका अभाव होनेसे अपर्याप्तकोंमें भी औदारि ययोगके अस्तित्वका प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि इष्ट नहीं है। अतः सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द ज्ञापक है नियामक नहीं। यदि ऐसा न माना जाय तो उसको अनर्थकपनेका प्रसंग आ जायगा।

शंका—इस नियम शब्दके द्वारा क्या ज्ञापित होता है?

समाधान—इससे यह ज्ञापित होता है कि 'मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र अनित्य है। अपने विषयमें सर्वत्र समान प्रवृत्तिका नाम नित्यता है और अपने विषयमें ही कहीं प्रवृत्ति हो और कहीं न हो इसका नाम अनित्यता है। इससे उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि, और संयतासंयतोंके तथा कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवलियोंके अपर्याप्तपना

१ कृताकृतप्रसंगी नित्य तद्विपरीतमनित्यम्। परि. शे. पृ. २५०
२ जी. सं. सू. ७६. ३ जी. स. सू. ९०
४ प्रतिषु 'मि तेण' इति पाठ।

पज्जत्तं ।

अद्धारद्ध सरीरी अपज्जत्तो णाम । ण च सजोगम्मि सरीर-पट्ठवणमत्थि, तदो ण तस्स अपज्जत्तमिदि ण, छ-पज्जत्ति-सत्ति-वज्जियस्स अपज्जत्त-ववएसादो । छहि इंदिएहि विणा चत्तारि पाणा दो वा । दव्वेंदियाणं णिप्पत्तिं पडुच्च के वि दस पाणे भणंति[2] । तण्ण घडदे । कुदो ? भाविंदियाभावादो । भाविंदियं णाम पंचण्हमिंदियाणं खओवसमो । ण सो खीणावरणे अत्थि । अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपज्जत्तकाले सत्त पाणा पिंडिदूण दो चेव पाणा भवंति, पंचण्हं दव्वेंदियाणमभावादो । तम्हा

सिद्ध हो जाता है ।

विशेषार्थ—' सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ' इस सूत्रको अनित्य बतलाकर उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंको भी जो अपर्याप्तक सिद्ध किया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस कथनसे टीकाकारका यह अभिप्राय होगा कि तीसरे गुणस्थानमें उत्तरवैक्रियिक और उत्तर-औदारिक तथा पांचवें गुणस्थानमें उत्तर-औदारिकको उत्पन्न करनेवाले जीव जबतक उस उत्तर-शरीरकी पूर्णता नहीं कर लेते हैं तब तक अपर्याप्तक कहे गये हैं। जिसप्रकार तेरहवें गुणस्थानमें पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए और शरीरकी पूर्णता होते हुए भी योगकी अपूर्णतासे जीव अपर्याप्तक कहा जाता है, उसीप्रकार यहांपर भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए, योगकी पूर्णता रहते हुए और मूल शरीरकी भी पूर्णता रहते हुए केवल उत्तर शरीरकी अपूर्णतासे अपर्याप्तक कहा गया है।

शंका—जिसका आरंभ किया हुआ शरीर अर्ध अर्थात् अपूर्ण है उसे अपर्याप्त कहते हैं। परंतु सयोगी-अवस्थामें शरीरका आरंभ तो होता नहीं, अतः सयोगीके अपर्याप्तपना नहीं बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटादि समुद्घात-अवस्थामें सयोगी छह पर्याप्तिरूप शक्तिसे रहित होते हैं, अतएव उन्हें अपर्याप्त कहा है।

सयोगी जिनके पांच भावेन्द्रियां और भावमन नहीं रहता है, अतः इन छहके विना प्राण पाये जाते हैं। तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और काय ये दो ही प्राण पाये जाते हैं। परंतु कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियोंकी पूर्णताकी अपेक्षा दश प्राण कहते हैं, परंतु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं। पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं। परंतु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके वह क्षयोपशम नहीं होता है। और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंके स्थानपर कुल दो ही प्राण कहे जायंगे, क्योंकि, उनके द्रव्येंद्रियोंका अभाव होता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि सयोगी जिनके चार

१ प्रतिषु ' सरीरादवण ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' दव्वेंदियाणि . भवंति ' इति पाठ ।

सजोगिकेवलिस्स चत्तारि पाणा दो पाणा वा। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोग, सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्च-मोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो कवाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोग-पूरणेसु कम्मइयकायजोगो, एवं सजोगिकेवलिस्स सत्त जोगा भवंति। अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति"।

अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-त्तीओ, पुव्विल्ल-पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छ पज्जत्तीओ भणिदाओ। ण पुण पज्जत्ती-जणिद-कज्जमत्थि। आउअ-पाणो एक्को चेव। केण कारणेण? ण ताव णाणा-

अथवा दो ही प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सात योग होते हैं। वे सात योग कौनसे हैं? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— सत्यमनोयोग, अनुभय-मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, कपाट-समुद्घातगत केवलीके औदारिकमिश्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं। योग आलापके आगे अप-गतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातशुद्धि संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, और भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी, साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक चौदहवां गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां होती हैं। छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वसे आई हुई पर्याप्तियां तथैव स्थित रहती हैं, इसलिये यहांपर छहो पर्याप्तियां कही गई हैं। किन्तु यहांपर पर्याप्तिजनित कोई कार्य नहीं होता है, अतः आयुनामक एक ही प्राण होता है।

शंका—एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है?

समाधान—ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमस्वरूप पांच इन्द्रिय प्राण तो अयोगकेवलीके

नं. २५

सयोगिकेवलीके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	४।२	०	१	१	१	७	०	०	१	१	१	६	१	१	०	२	२
सयो.	स.प.	प.		क्षीण.	म.	पंचे.	त्रस.	म. २ व. २ औ. २ का. १	अपग.	अक.	के.	यथा.	के.द.	शु. ६ भा. १ शु.	भ.	क्षा.	अनु.	आहा. अना.	साका. अना. यु. उ.
	अप.	६ अप			प														

वरण-खओवसम-लक्खण-पंचिंदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमाभावादो। आणा-पाण-भासा-मणपाणा वि णत्थि, पज्जत्ति-जणिद-पाण-सण्णिद-सत्ति-अभावादो। ण सरीर-बलो वि अत्थि, सरीरोदय-जणिद-कम्म-णोकम्मागमाभावादो। तदो एक्को चेव पाणो। उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति। एस पाणो पुण

हैं नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मोंके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता है। इसीप्र आनापान, भाषा, और मनःप्राण भी उनके नहीं हैं, क्योंकि, पर्याप्तिजनित प्राण-ली शक्तिका उनके अभाव है। उसीप्रकार उनके कायबल नामका भी प्राण नहीं है, क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय-जनित कर्म और नोकर्मोंके आगमनका अभाव है। इस-लिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता है ऐसा समझना चाहिये। किन्तु उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ—वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये हैं। 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किन्तु कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहां पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहां चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरूप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है। फिर भी अयोगी जिनके पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पंचेन्द्रिय कहना बन जाता है। इसलिये उनके पांच इन्द्रिय प्राणोंका कथन भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पांच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं। यहां पर इन्द्रियोंसे अभिप्राय उस शक्तिसे है जिससे अयोगी जिनमें पंचेन्द्रिय पनेका व्यवहार होता है। परंतु उस शक्तिके सम्पादनका या पांच इन्द्रियोंका आधार शरीर है, अतः इस निमित्तसे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें बलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं। यद्यपि उनके पहलेकी छह पर्याप्तियां उसीप्रकारसे स्थित हैं, अतः वे पर्याप्तक कहे जाते हैं। तथा पर्याप्तक अवस्थामें मनःप्राण भी होता है, इसलिये उनके मनःप्राणका भी कथन करना चाहिये था। परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण प्रतीत होता है कि उनमें संज्ञीव्यवहार लुप्त हो गया है। औप-चारिक संज्ञीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है, अतः अयोगियोंके मनः प्राण नहीं कहा। इसीप्रकार वचनबल और श्वासोच्छ्वासके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये। ऊपर सयोगी जिनके जो पांच इंद्रियां और एक मन इसप्रकार छह प्राणोंका निषेध करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं वह मुख्य कथन है। अतः जिस उपचारकी अपेक्षा यहां छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार वहां भी लागू होता है। आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इसे कथनका विवक्षाभेद ही समझना चाहिये। यहां उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है

अप्पपाणो। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; लेव-कारण-जोग-कसायाभावादो। भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति"।

सिद्धाणं ति भण्णमाणे अत्थि एयं अदीद-गुणट्ठाणं, अदीद-जीवसमासो, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीद पाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अणिंदिया, अकाया, अजोगिणो, अवगदवेदा, खीणकसाया, केवलणाणिणो, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा, केवलदंसण, दव्व-भावेहिं अलेस्सिया, णेव भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो

वह यहां भी पाया जाता है, इसलिये तो वह मुख्य प्राण है। फिर भी जीवनका अवस्थान अल्प है। और अवस्थानके कारणभूत नये कर्मोंका आना, योगप्रवृत्ति आदि भी नष्ट हो गये हैं, अतः आयु भी इस अपेक्षासे औपचारिक प्राण कहा जाता है। इसप्रकार अयोगियोंके उपचारसे एक या छह या सात प्राण कहे गये हैं।

प्राण आलापके आगे-क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे लेश्यारहितस्थान होता है। लेश्याके नहीं होनेका यह कारण है कि कर्म-लेपके कारणभूत योग और कषाय, इन दोनोंका ही उनके अभाव है। लेश्या आलापके आगे-भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, अनाहारक, साकारोपयोग तथा अनाकारोपयोग इन दोनों ही उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

सिद्धपरमेष्ठीके ओघालाप कहनेपर—एक अतीत-गुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत-प्राण, क्षीण,संज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अकाय, अयोगी, अवेदी, क्षीणकषाय, केवलज्ञानी, संयत, असंयत और संयतासंयत विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शनी, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक-विकल्पातीत, क्षायिकसम्यग्दृष्टि संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों

नं २६ अयोगिकेवलीके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय	द.	ले	भ.	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	६	१	१	१	१	२
अयो.	प		अयो.		म	पंचे	त्रस	अयो	अपग.	अक.	के	यथा.	के द.	द्र. ० भा. अले	म	क्षा	अनु	अना.	साका अना
के.																			यु उ

णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति[1]।

एव मूलोघालावो समत्तो।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-आहार-आहारमिस्सेहिं विणा एगारह जोग, णवुंसयवेदो, णेरइया दव्व-भावेहिं णवुंसयवेदा चेव भवंति त्ति। चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, दव्वलेस्सा कालाकालाभासा सुट्ठुकण्हेत्ति जं वुत्तं होदि। एसा णेरइयाणं

विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसप्रकार मूल ओघालाप समाप्त हुए।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंके आलाप कहनेपर-आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालकी अपेक्षा दस प्राण और अपर्याप्तकालकी अपेक्षा सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग.औदारिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहार ^ श्रकाययोग, इन चारों योगोंके विना ग्यारह योग, नपुंसकवेद होता है। एक नपुंसकवेदके होनेका यह कारण है कि नारकी जीव द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षा नपुंसकवेदी होते है। वेद आलापके आगे चारों कषायें, तीनों अज्ञान और तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्तत्वकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या, और अपर्याप्तत्वकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या होती है। पर्याप्त-अवस्थामें जो कालाकालाभास लेश्या कही है उसके कहनेका यह तात्पर्य है कि पर्याप्त अवस्थामें कालाकालाभास अर्थात् अतिकृष्ण लेश्या होती है। नारकियोंकी पर्याप्त-अवस्थामें यह

१ प्रतिषु ' करणेति ' इति पाठ।

नं २७ सिद्धोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	भ	ग	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	१	२
अ.गु	अ जी.	अ प	अ प्रा	अ सं.	सि	अनि	अका	अयो	अवेदा	अकषा.	के	अनु	के द	अले	अनु	क्षा	अनु	अना	ताका. अना यु उ

पज्जत्तकाले सरीरलेस्सा भवदि। विग्गहगदीए पुण णेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेस्सा सुक्का चेव भवदि, कम्म-विस्ससोवचयस्स धवलवण्णं मोत्तूण अण्ण-वण्णाभावादो। सरीर-गहिद-पढम-समय-प्पहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सरीरस्स काउलेस्सा चेव, संवलिद-सयल-वण्णादो। भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, छण्णाण , असजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ

शरीरलेश्या होती है। किन्तु विग्रहगतिमें नारकी आदि सभी जीवोंकी द्रव्यलेश्या शुक्ल ही होती है, क्योंकि, कर्मोंके विस्रसोपचयका धवलवर्ण छोड़कर अन्यवर्ण नहीं होता है, तथा शरीर-ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर अपर्याप्तकालके चरम समयतक शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, उस समय शरीर संवलित सकल वर्णवाला होता है। भावकी अपेक्षा तो कृष्ण, नील और कापोतलेश्या होती है। लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या और भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. २८ नार सामान्य आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
४	२ स. प. स. अ.	६ प. ६ अ	१० ७	४	१ ना.	१ पं	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. २ कार्म. १	१ ना.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विभा	द्र. ३ कृ. का शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ	६	१ स	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्तं[१] मिच्छत्तं च। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०]।

आहारक, [रो]पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रि[यि]काययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदक [स]म्यक्त्व तो कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिकं क्षायोपशमिकं चास्ति। स. सि. १, ७

नं २९ नारकसामान्य पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि सा म अ	१ स प	६ प	१०	४	१ न	१ पं.	१ त्र.	९ म ४ व. ४ वै. १	१ न	४	६ अज्ञा ३ ज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	द्र १ कृ भा ३ अशु	२ भ. अ	६	१ स.	१ आहा	२ साका अना

नं ३० नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि अवि	१ स अ	६ अप	७	४	१ न	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ न	४	५ कुम कुश्रु ज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	३ मि सा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-

अब नारकी मिथ्यादृष्टिजीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व सहित, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और कार्मणकाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्ण-

नं ३१ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	म	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ स प म अ	६ प ६ अ	१० प ७ अ	४	१ न	१ पं	१ त्र.	११ म ४ व. ४ वै २ कार्म १	१ न	४	३ कुम	१ अस	२ च अ	द्र ३ क का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मिथ्या	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[9]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्तं[1] मिच्छत्तं च। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[10]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाये, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यासिद्धिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे सान्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिक क्षायोपशमिक चास्ति। स. सि. १, ७

नं २९ नारकसामान्य पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	१ स प	६ प	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस.	९ म ४ व. ४ वै. १	१ न	४	६ अज्ञा ३ ज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	द्र १ कृ भा ३ अशु	२ भ. अ	६	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

नं ३० नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि अवि	१ स अ अप	६ अप	७	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	१ न	४	५ कुम कुश्रु. ज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	३ मि क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-

अब नारकी मिथ्यादृष्टिजीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व सहित, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और कार्मणकाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्ण-

नं ३१ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ स प म अ	६ प ६ अ	१० प ७ अ	४	१ न	१ पं	१ त्र.	११ म ४ व. ४ वै २ कार्म. १	१ न	४	३ कुम.	१ अस	२ च. अ	द्र ३ क का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मिथ्या	२ स	२ आहा. अना	२ साका अना

भासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दोण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों , नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्यायें, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्यायें, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ३२ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ स अ.	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र १ कृ सा ३ अशु	२ भ अ	१ मिथ्या.	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. ३३ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ स अ	६ अप	७ अप	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	२ वै. मि कार्म	२ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मिथ्या	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तिहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ; भवसिद्धिया,

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक

न. ३४ नारकसामान्य-सासादन आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ सा	२ स प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व. ४ वै १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र १ क मा ३ अशु	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा.	२ साका. अना

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ३५ नारकसामान्य-सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य.	१ स प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	३ ज्ञान मिश्र अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र १ द्र भा ३ अशु	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका अनाका

नं ३६ नारकसामान्य-असंयत सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ स. स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न	१ पं	१ त्रस	११ म ८ व ४ वै २ कार्म	१ नपुं	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द बिना	द्र ३ द्र का, शु भा ३ अशु	१ भ	३ आ आ. क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण

उन्हीं नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाये, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक उपशमसम्यक्त्वके बिना दो सम्यक्त्व

नं. ३७ नारकसामान्य-असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा. सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१० ४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ पुं	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के द विना	द्र १ शु भा ३ अशु	१ भ	३ औ क्षा. क्षायो	१ सं	१ आहा	१ साका. अना

विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८] ।

पढमादि-सत्तण्हं पुढवीणं लेस्साओ जाणावेई एसा गाहा—

काऊ काऊ काऊ णीला णीला य णील-किण्हा य ।
किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं[1] ॥ २२२ ॥

पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय,

सहित, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रथमादि सातों पृथिवियोंकी लेश्याओंको यह निम्न गाथा बतलाती है—

कापोत, कापोत, कापोत और नील, नील, नील और कृष्ण, कृष्ण तथा परमकृष्ण लेश्या प्रथमादि पृथिवियोंमें क्रमशः जानना चाहिये ॥ २२२ ॥

विशेषार्थ—प्रथम पृथिवीमें जघन्य कापोतलेश्या होती है । दूसरी पृथिवीमें मध्यम कापोतलेश्या होती है । तीसरी पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या होती है । चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या होती है । पांचवीं पृथिवीमें उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या होती है । छठी पृथिवीमें मध्यम कृष्णलेश्या होती है और सातवीं पृथिवीमें परमकृष्णलेश्या होती है ॥

प्रथम-पृथिवी गत नारकोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह

१ गो. जी. ५२९ प्रतिषु ' काउ काउ तह काओ णील णीला य णील किण्हा य ' इति पाठ ।

नं. ३८ नारकसामान्य-असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स.अ	६ अ	७ अ	४	१ न.	२ पं	१ त्रस	२ वै मि कार्म	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र २ का. शु मा ३ अशु	१ भ	२ सा क्षायो	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकाला-भासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

योग, नपुंसकवेद, चारों कषाये, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याए, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी गत नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्य-

नं. ३९ प्रथमपृथिवी–नारकसामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा. सम्य अवि	१ स प स अ	६ प. ६ अ	१० ७	४	१ न	१ पुं	१ कु	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ पुं	४	६ ज्ञान ३, अज्ञा ३	८ अस.	३ के द. विना	३ कृ का शु मा १ का.	२ भ अभ	६	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना.

मण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक. छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—मिथ्यादृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या. भव्यसिद्धिक. अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४०

प्रथमपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	म	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा म अ	२ सं अ	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म व वै	१ कि	४	९ ज्ञा अज्ञा	१ असं ३	३ तिन्ना ७	१ द्र कृ भा १ का	२ भ अभ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. ४१

प्रथमपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	म	संज्ञि	आ	उ
२ मि अवि	१ स अ	६	७	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	१ कि	४	५ कुम कुश्रु ज्ञा. ३	१ असं	३ के द विना	२ का गु भा ३ का	२ भ अभ	३ मि क्षा क्षायो	१ म	२ आहा अना	२ साका आना

संपहि पढम-पुढवि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउ-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण

अब प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर-एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर-एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. ४२ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ स प म अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न.	२ पं.	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै २ का १	१ पुं.	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अच	द्र ३ कृ. का शु भा १ का.	२ भ. अभ	१ मि.	१ स	२ आहा. अना.	२ साका अना.

कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' अभवसिद्धिया ' इति पाठो नास्ति

नं. ४३ प्रथमपृथिवी–नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सप	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ न	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र १ कृ मा १ का	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना.

नं. ४४ प्रथमपृथिवी–नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स	६	७	४	१ न	१ पं	१ त्रस	२ वै मि का मि	२ न	४	२ कु श्रु	१ असं	२ च अच	द्र २ का शु मा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया,

प्रथम-पृथिवी-गत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम-पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान-मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

नं ४१ प्रथमपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	२	६ १	२	१	१	१	२
मा	प				न.	पंचे	त्रस	म ४ व ४ वै १	नपुं		अज्ञा	असं	च अच	कृ मा १ का	भ.	सासा	स	आहा	साका. अना

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९]।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०]।

सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ४६ प्रथमपृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	२	२	द्र १	१	१	१	१	२
मिश्र	स प				न	पंचे	त्रस	म ४ व ४ वै १	नपुं		ज्ञान अज्ञा. मिश्र	असं	च अ	क मा. १ का		सम्य	स	आहा	साका अना

नं. ४७ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६ प	१०	४	१	१	१	११	१	४	३	१	३	द्र ३	१	३	१	२	२
मिश्र	स प, ६ अ		७		न	पंचे	त्रस	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	नपुं.		मति. श्रुत. अव	असं.	के. द. विना	ट का शु मा १ का	म	औ क्षा क्षायो	स	आहा. अना.	साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, उप-शमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

ल. ४८ प्रथमपृथिवी–नारक असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले.	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि.	१ स प	६	१०	४	१ न	१ पृ	१ त्र	९ म ४ व. ४ वै. १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र १ कृ मा १ का	१ म.	२ औ. क्षा क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

विदियाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला काला भास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमकाउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवी-गत नारकोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४९ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स अ	६ अप	७	४	१ न	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ३ का शु मा १ का	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ सा.का अना

नं. ५० द्वितीयपृथिवी-नारक सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सा सम्य अ	२ स अ.	६ अ	१० ७	४	१ न.	१ पं	१ त.	११ म. ४ व ४ वै २ का १	१ न	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ असं.	३ के द. विना	द्र ३ का शु मा १ का	२ भ. अ	५ जी क्षायो. मि. सासा सम्य	१ स	२ आहा अना	२ सा.का. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्म-त्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर–आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पन्चेन्द्रियजाति त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत नारकोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और

नं ५१ द्वितीयपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग	इ	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
४ मि सा अ	१ सं.	६	१०	४	१ न	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	६ म ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	६ कृ भा १ का.	२ म अ.	५ मि सासा सम्य. औप क्षायो.	१ स	२ आहा	२ साका अना

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवस , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण. प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२ द्वितीयपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ.	उ
१ मि	१ सं प	६ अ	७	४	१ न	१ पं.	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का. शु भा. १ का	२ भ. अ	१ मि.	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं ५२ द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि सामान्य आलाप

गु	जी.	प.	प्रा	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ मि	२ सं प. अ	६ प ६ अ	१० ७	१ न	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ३ ल का. शु भा १ पद्मा	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्य-

म. ५४ द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स प	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म ४ व. ४ वै १	१ पुं.	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र १ कृ भा १ का	२ भ अ.	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा[1], भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवी गत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर-एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५५ द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग.	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ स अ	६ अप	७	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	२ वै. मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अचक्षु.	द्र २ का शु मा १ का	२ भ अ	१ मि	१ भ	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. ५६ द्वितीयपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	म	संज्ञि	आ	उ
१ मा	१ सं.	६ अप	१०	४	१ न	१ पंचें	१ त्रस	९ म. ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र १, २ भ मा १ का	१ भ	१ सास	१ भ	१ आहा	२ साका अना

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७]।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो

द्वितीय-पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाय-योग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानमिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोत-लेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रि-यिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक,

नं. ५७ द्वितीयपृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मिश्र.	१ सं.प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं.	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ असं	२ च अच	द्र १ क मा १ का	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका. अनाका

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८]।

एवं तदिय-पुढवि-आदि जाव सत्तम-पुढवि त्ति चदुण्हं गुणट्ठाणाणमालावो वत्तव्वो। णवरि विसेसो तदियाए णवण्हं इंदयाणं मज्झे उवरिम अट्ठसु इंदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि। हेट्ठिमए णवमे इंदए केसिंचि जीवाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिंचि जहण्णिया णीललेस्सा। कुदो? जहण्णुक्कस्स-णील-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल-णिद्देसादो। तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहण्णिया णीललेस्सा च वत्तव्वा। चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीललेस्सा। पंचमीए पुढवीए चउण्हमुवरिम-इंदयाणं उक्कस्सिया णीललेस्सा चेव भवदि। पंचए उक्कस्सिया णीललेस्सा जहण्णा किण्हलेस्सा च भवदि। कुदो? जहण्णुक्कस्स-किण्ह-णीललेस्साणं सत्तारस-सागरोवम-काल-णिद्देसादो।

क्षायिकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार तृतीय-पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक नारकियोंमें चारों गुणस्थानोंके आलाप कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि तृतीय पृथिवीके नौ इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके आठ इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है और नीचेके नौवें इन्द्रक बिलमें कितने ही नारकी जीवोंके उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है, तथा कितने ही नारकोंके जघन्य नीललेश्या होती है, क्योंकि, जघन्य नीललेश्या और उत्कृष्ट कापोतलेश्याकी सात सागरोपम स्थितिका आगममें निर्देश है। अतएव तीसरी पृथिवीके नौवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट कापोत और जघन्य नीललेश्या बन सकती है। इसप्रकार तृतीय पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या कहना चाहिए। चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या है। पांचवीं पृथिवीके पांच इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके चार इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट नीललेश्या ही है, और पांचवें इन्द्रक बिलमें उत्कृष्ट नीललेश्या तथा जघन्य कृष्णलेश्या है, क्योंकि, जघन्य कृष्णलेश्या और उत्कृष्ट नीललेश्याका आगममें सत्रह सागरप्रमाण कालका निर्देश किया

नं. ५८ द्वितीयपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	२	१	९	१	४	३	१	३	१	१	२	१	२	२
मि	सं	प			न	पंचे	त्रस	म ४ व ४ म १	पुं		मति श्रुत अव	अस	चक्षु अचक्षु अवधि	का	म	औप क्षायो	स	आहा	साका अना

एदाओ दो लेस्साओ पंचम-पुढवी-णेरइयाणं भवंति। छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं मज्झिम-किण्हलेस्सा भवदि। सत्तमीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कस्सिया किण्हलेस्सा भवदि।

तिरिक्खगईए तिरिक्खाणं भण्णमाणे तिरिक्खा पंचविधा भवंति, तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता चेदि। तत्थ तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु-

गया है। अतएव पांचवी पृथिवीके पांचवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या बन सकती है। इसप्रकार ये दोनों ही लेश्याएं पांचवीं पृथिवीके नारकी जीवोंके होती हैं। छठी पृथिवीके नारकोंके मध्यम कृष्णलेश्या होती है। सातवीं पृथिवीके नारकोंके उत्कृष्ट कृष्णलेश्या होती है।

इसप्रकार नरकगतिके आलाप समाप्त हुए।

अब तिर्यंचगतिके आलापोंको कहते हैं। तिर्यंच पांच प्रकारके होते हैं, १ तिर्यंच, २ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, ३ पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच, ४ पंचेन्द्रिय योनिमती तिर्यंच, और ५ पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंच। इनमेंसे सामान्य तिर्यंचोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, चार प्राण, और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण, तीन प्राण, क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों ' ाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवी आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देश-संयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; ीपयोगी

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं तदिय-पुढवि-आदि जाव सत्तम-पुढवि त्ति चदुण्हं गुणट्ठाणाणमालावो वत्तव्वो। णवरि विसेसो तदियाए णवण्हं इंदयाणं मज्झे उवरिम अट्ठसु इंदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि । हेट्ठिमए णवमे इंदए केसिंचि जीवाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिंचि जहण्णिया णीललेस्सा । कुदो ? जहण्णुक्कस्स-णील-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल-णिद्देसादो । तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहण्णिया णीललेस्सा च वत्तव्वा। चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीललेस्सा। पंचमीए पुढवीए चउण्हमुवरिम-इंदयाणं उक्कस्सिया णीललेस्सा चेव भवदि । पंचए उक्कस्सिया णीललेस्सा जहण्णा किण्हलेस्सा च भवदि । कुदो ? जहण्णुक्कस्स-किण्ह-णीललेस्साणं सत्तारस-सागरोवम-काल-णिद्देसादो ।

क्षायिक कत्वके विना औपशमिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार तृतीय-पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक नारकियोंमें चारों गुणस्थानोंके आलाप कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि तृतीय पृथिवीके नौ इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके आठ इन्द्रक [illegible]में उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है और नीचेके नौवें इन्द्रक बिलमें कितने ही नारकी जीवोंके उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है, तथा कितने ही नारकोंके जघन्य नीललेश्या होती है, क्योंकि, जघन्य नीललेश्या और उत्कृष्ट कापोतलेश्याकी सात सागरोपम स्थितिका आगममें निर्देश है। अतएव तीसरी पृथिवीके नौवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट कापोत और जघन्य नीललेश्या बन सकती है। इसप्रकार तृतीय पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या कहना चाहिए। चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या है। पांचवी पृथिवीके पांच इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके चार इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट नीललेश्या ही है, और पांचवें इन्द्रक बिलमें उत्कृष्ट नीललेश्या तथा जघन्य कृष्णलेश्या है, क्योंकि, जघन्य कृष्णलेश्या और उत्कृष्ट नीललेश्याका आगममें सत्रह सागरप्रमाण कालका निर्देश किया

नं. ५८ द्वितीयपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं य	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	१ न	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ व १	१ पुं	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	३ कृ मा १ का	१ भ	२ औप क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

एदाओ दो लेस्साओ पंचम-पुढवी-णेरइयाणं भवंति। छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं मज्झिम-किण्हलेस्सा भवदि। सत्तमीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कस्सिया किण्हलेस्सा भवदि।

तिरिक्खगईए तिरिक्खाणं भण्णमाणे तिरिक्खा पंचविधा भवंति, तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता चेदि। तत्थ तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारु-

गया है। अतएव पांचवी पृथिवीके पांचवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या बन सकती है। इसप्रकार ये दोनों ही लेश्याएं पांचवीं पृथिवीके नारकी जीवोंके होती हैं। छठी पृथिवीके नारकोंके मध्यम कृष्णलेश्या होती है। सातवीं पृथिवीके नारकोंके उत्कृष्ट कृष्णलेश्या होती है।

इसप्रकार नरकगतिके आलाप समाप्त हुए।

अब तिर्यंचगतिके आलापोंको कहते हैं। तिर्यंच पांच प्रकारके होते हैं, १ तिर्यंच, २ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, ३ पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच, ४ पंचेन्द्रिय योनिमती तिर्यंच, और ५ पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंच। इनमेंसे सामान्य तिर्यंचोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, चार प्राण, और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण, तीन प्राण, क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों [illegible]एं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देश-संयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं[10] चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगई, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, दो संजम,

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सामान्य तिर्यंचोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय तिर्यंचोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंचोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियादि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-

नं. ५९ सामान्य तिर्यंचोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा स अ. देश.	१४	६ प ६ अ ५ प. ५ अ ४ प ४ अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति	५	६	११ म ४ व ४ औ २ कार्म. १	३	४	६ ज्ञा ३ अ.३	२ अस देश	३ के द विना	द्र. ६ भा.६	२ भ अ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ६० सामान्य तिर्यंचोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ.
५ मि सा सम्य अवि देश	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति	५	६	९ म ४ व ४ औ १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा.३	२ अस. देश	३ के द. विना	द्र ६ भा ६	२ भ क्षा	६	२ स. अस	१ आहा.	२ साका. अना

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काया, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-णाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ । किं कारणं ? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया वि देवा तिरिक्खे-सुप्पज्जमाणा णियमेण णट्ठ लेस्सा भवंति त्ति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं एवं चत्तारि सम्मत्तं,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीव-समास, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं, होती हैं।

शंका—सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालमें तीनों अशुभ लेश्याएं ही क्यों होती हैं?

समाधान—क्योंकि, तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले भी देव यदि तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं तो नियमसे उनकी शुभलेश्याएं नष्ट हो जाती हैं, इसलिये तिर्यंचोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन अशुभ लेश्याएं ही होती हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व इस प्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक,

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"संपहि तिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ

असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, ' ' पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और वि त्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; ' ' पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके और चार प्राण, एकेन्द्रियोंके चार प्राण और तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ६१ अन्य तिर्यंचोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अवि	७ अ प	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति	५	६	२ औ मि कार्म.	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत. अव	१ असं	२ के द	द्र. २ का शु भा १ अशु	२ भ अ.	४ मि सा क्षा क्षायो.	२ स असं	२ आहा अना	२ साका आना

नं ६२ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति	५	६	११ म ४ व. ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र ६ भा ६	२ भ अभ	१ मि	१ स असं	२ आहा अना.	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[13]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाय-योग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां,

नं. ६३ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति	५	६	९ म ८ व ८ औ १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु अच	६ भा. ६	२ भ. अ	१ मि.	२ स. अस	१ आहा	२ साका अना

अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक सासादन-गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और °ण-काययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. ६४ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	७ अप	६अप ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति	५	६	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ च अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[६] ।

अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ६५ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मा	२ स प. सं अ	६प ६अ	१० ७	४	२ ति	१ पचे	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र.६ भा ६	१ भ.	१ संज्ञा.	१ स.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं ६६ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मा	१ स प.	६	१०	४	१ ति.	१ पचे.	१ त्रस	९ म. ४ व ४ औ.१	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ संज्ञा.	१ स	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

तिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

नं. ८७ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	३	४	२	१	२	द्र २	१	१	१	२	२
सा	स	अ	अप		ति	पं	त्र	औ मि कार्म			कुम कुश्रु.	अस	चक्षु अच	का शु भा २ अशु	भ	मार्गा	स	आहा अना	सा.का. अना

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ६८ सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	सज्ञि.	आ	उ.
१ मि	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र	१ अस	२ च अ.	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं ६९ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	सज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स प	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ पचे	१ त्रस.	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ मति श्रुत अव	२ अस	३ के द बिना	द्र ६ भा ६	१ भ.	३ औ क्षा क्षायो	१ स	२ आहा. अना	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्य-सिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके बिना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं।

सं. ७० सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	सं	ग.	इ	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सं	आ.	उ
१ अवि. सं.	१ सं पं.	६	१०	४	१ ति	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ.१	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द बिना	द्र ६ भा ३	१ भ.	१ औ. क्षा क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका अना

सम्मत्तं । मणुस्सा पुव्वबद्ध-तिरिक्खयुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्सायुगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजदसम्माइट्ठि-अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि । तत्थ उप्पज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि । एवं तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

पूर्वोक्त दो सम्यक्त्वोंके होनेका यह कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शन होनेके पहले तिर्यंच आयुको बांध लिया है वे पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यंचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं । इस कारण भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असंयतसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यक्त्व पाया जाता है । और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व भी पाया जाता है । इसप्रकार तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यक्त्व होते हैं । सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके

१ प्रतिषु ' दिट्ठपहुडि ' इति पाठ ।

न. ७१ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र ३	१	२	१	२	२
अवि.	स अ	अप	प्रा	सं	ति.	पं	त्रस	औ मि कार्म	पु		मति श्रुत अव	अस	के द विना	का. शु भा १ का	भ	क्षा क्षायो	स	आहा अना.	साका अना.

छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण ? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसणमोहणीयं कम्मं ण खवेंति, तत्थ जिणाणमभावादो । मणुस्सा पुव्वं बद्ध-तिरिक्खायुगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु । भोगभूमीसुप्पण्णा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख-संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तं णत्थि । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[*] ।

पंचिंदिय-तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह

विना दो सम्यक्त्व होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि संयतासंयत तिर्यंच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपण नहीं करते हैं, क्योंकि, वहांपर जिन अर्थात् केवली या श्रुतकेवलीका अभाव है। और पूर्वमें तिर्यंच आयुको बांधकर पीछे क्षायिकसम्यग्दृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं। परंतु भोग-भूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच संयमासंयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यंचोंके संयता-संयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्व नहीं होता है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदा-रिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तीनों वेद,

नं. ७२ सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

ग	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	६	१	२	१	१	२
देश.	सं				ति	पं	त्र	म ४ व ४ औ १			मति श्रुत अव	देश	के द विना.	मा ३ शुभ	भ	औप क्षायो	स	आहा	साका अना
	पं																		

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि

चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

नं. ७३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा सम्य अवि देश	४ स प स अ अ प. अ अ	६ प. ६ अ ५ प ५ अ	१० ७ ९ ७	४	१ ति.	१ प	१ त्र.	११ म. ४ व ४ औ २ का १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	२ अस. देश.	३ के द. बिना	द्र ६ भा ६	२ भ. अ	६	२ स अस.	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. ७४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा. सम्य अवि देश	२ स प अस प	६ ५	१० ९	४	१ ति	१ प.	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा. ३	२ अस. देश	३ के द. बिना	द्र ६ भा ६	२ भ अभ	६	२ स. अस	२ आहा	२ साका. अना

दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं उवसमसम्मत्त णत्थि, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्तारि सम्मत्तं। सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहो लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारो कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक होते है। इनके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, किन्तु मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व ये चार सम्यक्त्व होते है। संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

न. ७५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अ	२ स.अप अप ,,	६अ ५ ,,	७ ७	४	१ ति	१ प	१ त्रस	२ औ मि. कार्म.	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत. अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	४ मि सा क्षा क्षायो	२ स असं	२ आहा अना	२ साका अना

पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

नं ७६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	४ सं प ,, अ अस प. ,, अ	६प ६अ ५प ५अ	१० ७ ९ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ ओ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	६ भा	२ भ. अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७८]।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण और असंज्ञीके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये दो योग, तीनो वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ स प अस प	६ ५	१० ९	४	१ ति	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	६ द्र मा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका. अना

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग. इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	२ स अ अस ,,	६ अ. ५ अ	७ ७	४	१ १ ति पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम कृ थु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु.	द्र २ का शु मा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना

पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं ७९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.मि.	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अच.	६ द्र ६ भा ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा अना.	२ साका अना.

असंजम, दो दसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[93]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[94]।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण और असंज्ञीके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प अस प	६ ५	१० ९	४	१ ति	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ म अ.	१ मि	२ स असं	१ आहा	२ साका. अना

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग. इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	२ सं अ अस ,,	६ अ. ५ अ	७ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ.मि कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ म अ	१ मि	२ स असं	२ आहा अना	२ साका. अना

पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. ७९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा	२ सं.पं.सं.प	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ प	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ	१ सा	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

[नं. ८० पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सञ्ज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं.प	६	१०	४	१ ति	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	६ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं ८१ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सञ्ज्ञि	आ	उ
१ स	१ स.अ	६ अ	७	४	१ ति	१ पं	१ त्र	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	२ का शु	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अनाका

पंचिंदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८१]।

पंचिंदियतिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

पचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारो कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	२ स प	६	१०	४	१ ति	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसि चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच तसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त संबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ स प	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व. ४ औ २ का १	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ म	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ८४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ.१	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ म.	३ औ. क्षा क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

पंचिंदियतिरिक्ख-सजदासंजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण

उन्ही पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्य-सिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व,

नं. ८५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अप	७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र २ का. शु भा १ का	१ भ	२ क्षायो क्षा	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना.

विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो। णवरि विसेसो पुरिस-णवुंसयवेदा दो चेव भवंति, इत्थिवेदो णत्थि। अथवा तिण्णि वेदा भवंति।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच सामान्यके आलापोंके समान ही आलाप समझना चाहिये। विशेष बात यह है कि इनके वेद स्थानपर पुरुष और नपुंसक ये दो ही वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है। अथवा तीनों ही वेद होते है।

विशेषार्थ—पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके दो ही वेद बतलानेका यह अभिप्राय है कि योनिमती जीवोंका पर्याप्तक भेदमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, योनिमतियोंका स्वतंत्र भेद गिनाया है। अथवा पर्याप्त और योनिमती तिर्यंच इन दोनों भेदोंको गौण करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सभी पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जावे तो पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोके आलापमें तीनो वेदोंका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है।

पचेन्द्रिय-तिर्यंच योनिमतियोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त, असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास सज्ञीके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, सज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ८६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इं	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	६	१	२	१	१	२
देश	सं				ति	पंचे	त्र	म ४			मति	देश	के द	भा ३	भ	औप.	स	आहा	साका
	प							व ४			श्रुत		विना.	शुभ		क्षायो			अना
								औ १			अव								

---

[1] षट्खं. पु. १ पृ. ३३२, सू. ९३.

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणीओ, असण्णिणीओ, आहारिणी, अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"तासिं चेव पज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं,

छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी,

नं ८७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
५ मि सा स अ देश.	४ स प म अ अस प अस अ	६ प ६ अ ५ प ५ अ	१० ७ ९ ७	४	१ ति	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ २ कार्म १	१ स्त्री	४	६ ज्ञा ३ अ.३	२ अस दश	३ के द विना	६, ६ मा.६	२ भ अ	५ क्षा वि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं ८८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
५ मि सा स. अ द.	२ स प अस प.	६ प ५ प	१० ९	४	१ ति	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १.	१ स्त्री	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	२ अस देश	३ के द विना	६ ६ भा. ६	२ भ अ	५ क्षा. विना	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, चत्तारि

आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी और असंज्ञीके सात सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीव-

---

नं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सञ्ज्ञि	आ	उ
२	२	६अ	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र २	२	२	२	२	२
मि सा	स अ	५ ,,	७		ति	पञ्चे	त्रस	औ मि कार्म	स्त्री	क्रो मा लो	कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा २ अशु	भ अ	मि सा	स अस	आहा अना	साका अना

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

समास, संज्ञिनीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञिनीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञिनीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञिनीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, और असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,

नं. ९० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	४ सं प स अ असं प असं अ	६प ६अ ५प ५अ	१० ७ ९ ७	४	२ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ औ २ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच.	६,६ भा ६	२ भ. अ	१ मि.	२ स असं	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, चत्तारि

आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी और असंज्ञीके सात सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीव-

---

सं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२	२	६अ	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र २	२	२	२	२	२
मि	स अ	५ ,,	७		ति	पं	त्रस	औ मि	स्त्री		कुम	अस	चक्षु	का	भ	मि	स	आहा	साका
सा	अस	,,						कार्म			कुश्रु		अच	शु	अ	सा	अस	अना	अना
														भा ३					
														अशु					

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

समास, संज्ञिनीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञिनीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञिनीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञिनीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारो-पयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, और असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,

सं. ९० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	४ सं प स.अ अस प अस.अ.	६प ६अ ५प ५अ	१० ७ ९ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ औ २ का.१	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र.६ भा ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ स अस	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञिनीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञिनीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं ९१ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प. अस.प.	६ ५	१० ९	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ९२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स अप अस ,,	६अ ५ ,,	७ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा [१]।

[१] तासिं चेव पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं ९३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ साला	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं ९४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ	उ
१ सा	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ च अ.	द्र ६ भा ६	१ भ	१ साला	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय-

और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यायें, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञायें, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रक कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भाव और कापोत लेश्यायें, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीव स, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञायें,

नं ९५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादनसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र २	१	१	१	२	२
मा.	स.अ	अ			ति		त्र	ओ मि कार्म	स्त्री		कुम कुश्रु	असं	चक्षु अच	का नु भा ३ अशु.	भ	मासा	स	आहा अना.	साका अनाका

जादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[११]।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१२]।

तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, रोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ९६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सम्य	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

नं. ९७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ	उ
१ क्षा	१ स प	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र. ६ भा ६	१ भ	२ औप क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइय-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[८]।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीव-समासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच संयतासंयत योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याएं, भव्य-

नं. ९८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती संयतासंयतोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	२	९	१	४	३	१	३	द्र ६	१	२	१	१	२
देश	स				ति	पंचे	त्र	म ४	स्त्री		मति	देश	के द	भा ३	भ.	औप	स.	आहा	साका
	प.							व ४			श्रुत		विना	शुभ		क्षायो			अना
								औ.१			अव								

लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

एव तिरिक्खगदी समत्ता ।

मणुसा चउव्विहा हवंति मणुस्सा मणुस-पज्जत्ता मणुसिणीओ मणुस-अपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस प्रकार तिर्यंचगतिके आलाप समाप्त हुए।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं—मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त, मनुष्यिनी और लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य। उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके बिना तेरह योग, तथा अयोग-स्थान भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी होता है। चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी होता है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या-स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, अनाहारक, साकारो-

सं. ९९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इ	का	यो.	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	२ स अ असं ,,	६ अ ५ अ	७ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ.मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अचक्षु.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स असं	२ आहा अना	२ साका. अना

सामारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[100] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग ओरालिय-आहार-मिस्स-कम्मइएहि विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो

पयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्ही सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्र-काययोगके विना तेरह योग, अथवा पूर्वोक्त दो और औदारिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्र-काययोग और कार्मणकाययोग इन पांच योगोंके विना दशयोग तथा अयोग-स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-वेद-स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्या-स्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित

नं. १००

सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	२ स प म अ	६ प ६ अ	१० ७	४ त्रस	१ म	१ पंचे	१ त्रस	१३ वै द्वि विना अयो	३ अपगत	४ अकषा.	८	७	४	६ ६ भा ६ अले	२ भ अ.	६	१ स अनु	२ आहा अना.	२ साका. अना यु उ

वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगि-भयवंतस्स सरीर-णिमित्तमागच्छमाण-परमाणूणमभावं पेक्खिऊण पज्जत्ताणमणाहारित्तं लब्भदि । सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१०१] ।

भी स्थान है, आहारक, और अनाहारक भी होते हैं। मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक होनेका कारण यह है कि अयोगिकेवली भगवान्‌के शरीरके निमित्तभूत आनेवाले परमाणुओंका अभाव देखकर पर्याप्तक मनुष्योंके भी अनाहारकपना बन जाता है। साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर योग आलापका कथन करते हुए वैक्रियिकद्विक, आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगके विना दश अथवा केवल वैक्रियिकद्विकके विना तेरह योग बतलाये हैं। दश योग तो मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें होते ही हैं, परंतु अपर्याप्त-अवस्थामें होनेवाले औदारिकमिश्र आहारकमिश्र और कार्मणकाययोगको मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें बतानेका यह कारण है कि यद्यपि तेरहवें गुणस्थानमें समुद्घातके समय योगोंकी अपूर्णता रहती है फिर भी उस समय पर्याप्त-नामकर्मका उदय विद्यमान रहता है और शरीरकी पूर्णता भी रहती है, इसलिये पर्याप्त-नामकर्मके उदय और शरीरकी पूर्णताकी अपेक्षा कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत केवली भी पर्याप्त हैं और इसप्रकार पर्याप्त अवस्थामें औदारिकमिश्र तथा कार्मणकाययोग बन जाते हैं। इसीप्रकार छठवें गुणस्थानमें आहारमिश्रकाययोगके समय भी पर्याप्त-नामकर्मका उदय रहता है, इसलिये ऐसा निर्वृत्तिसे अपर्याप्त होता हुआ भी जीव पर्याप्त-नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त ही है, अतः आहारमिश्रकाययोग भी पर्याप्त-अवस्थामें बन जाता है। इसप्रकार उपर्युक्त तीनों योग विवक्षा भेदसे पर्याप्त-अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिये मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें तेरह योग भी गिनाये हैं।

पृ. १०१ सामान्य मनुष्योंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१ सं. प.	६	१०	४ मनुष्यगति	१ म	१ पंचे.	१ त्रस	१३ वै २ विना १० । म ४ व ४ औ १ आ १	३ अपगता	४ अकषाय	८	७	४	६ द्र ६ भा ६ अले	२ म अ	२	१ स अनु	२ आहा अना.	२ साका. अना यु उ

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सेण सह तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, पंच णाण केवलणाणेण छ णाण, असंजम सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादेहि चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तेण विणा चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुभओ वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[१]।

उन्हीं सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहो अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा अतीतसंज्ञा स्थान भी है, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारमिश्रकाययोगके साथ औदारिक-मिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, कुमति, कुश्रुत तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान और केवलज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्वके विना चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, और अनुभय अर्थात् संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनो विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अना-हारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

सं. १०२ सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	सं	आ	उ.
५ मि. सा. अ प्र.	१ स. अ	६ अ.	७	४ औदा.	१ म	१ प.	१ त्रस.	३ औ मि. का मि.	३ त्रिवे.	४ अक.	६ त्रिअ मन. विना	४ असं सामा. छेदो यथा.	४	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ.	४ मि सा क्षा क्षायो.	१ स. अनु	२ आहा अना	२ साका. अना यु उ.

मणुस-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, और संज्ञी-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक,

नं १०३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	२ स. अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ प	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०५]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १०४ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स.प	६	१०	४	१ म	१ प.	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ अ स	६ मि.	१ स.	१ आहा	२ साका अना

नं. १०५ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का.	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स अ.	६ अ	७	४	१ म.	१ प	१ त्र.	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ म. अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

मणुस्स-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं १०६ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा	२ सं. प अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ त्र	१ त्र	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना.

अणागारुवजुत्ता वा[७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७८]।

मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-

नं. १०७ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
मा	स प				म	पंचे	त्रस	म ४ व ४ औ १			अज्ञा.	असं	च अ.	भा. ६	भ	सासा	म	आहा.	साका अना

नं. १०८ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६अ	७	४	१	१	१	२	३	४	२	१	२	द्र २	२	१	१	२	२
मा	स अ				म	पं	त्र	औ मि कार्म			कुम कुश्रु	असं	चक्षु अच	का शु भा २ अशु	भ	सा	स	आहा अना	साका. अना

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"मणुस असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम,

स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. १०९ सामान्य मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
३	२	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	६	१	१	१	१	२
मि.	स प				म.	पंचे	त्रस.	म ४ व ४ औ. १			ज्ञान २ अज्ञा मिश्र	अस	चक्षु अच	कृ ६ नी का भ.	भ.	पद्म	स	आहा	साका. अना.

नं. ११० सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	२	६प	२०	४	२	१	१	११	३	४	३	१	३	६	१	३	१	२	२
मि	स प	६अ	७		म	पंचे	त्रस	म. ४ व. ४ औ २ का.१			मति श्रुत, अव	अस	के द विना.	शु ६ भा ६	भ.	औप क्षायो	स	आहा अना	साका अना.

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद। देव-णेरइअ मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठिणो जदि मणुस्सेसु उप्पज्जंति तो

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, एक पुरुषवेद होता है। केवल एक पुरुषवेद होनेका यह कारण है कि देव, नारकी और मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव मरकर यदि मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं, तो

न १११ सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	म	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	६	१	२	१	१	२
मि	म प.				म	पंच	त्रस	म ४ व ४ औ १			मति श्रुत अव	असं	के दि	द्र ६ भा ६		आ आ	स	आहा	साका अना

णियमा पुरिसवेदेसु चेव उप्पज्जंति ण अण्णवेदेसु, तेण पुरिसवेदो चेव भणिदो। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ। तं जहा—णेरइया असंजदसम्माइट्ठिणो पढम-पुढवि-आदि जाव छट्ठी-पुढवि-पज्जवसाणासु पुढवीसु ट्ठिदा कालं काऊण मणुस्सेसु चेव अप्पप्पणो पुढवि-पाओग्ग-लेस्साहि सह उप्पज्जंति त्ति किण्ह-णील-काउलेस्सा लब्भंति। देवा वि असंजदसम्मा-इट्ठिणो कालं काऊण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सह मणुस्सेसु उववज्जंति, तेण मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठिणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ हवंति। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

मणुस्स-सजदासंजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

नियमसे पुरुषवेदी मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यवेदवाले मनुष्योंमें नहीं, इससे एक पुरुष-वेद ही कहा है। वेद आलाप के आगे चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। अविरतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त मनुष्योंके छहों लेश्याएं होनेका कारण यह है कि प्रथम पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी-पर्यंत पृथिवियोंमें रहनेवाले असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी मरण करके मनुष्योंमें अपनी अपनी पृथिवीके योग्य लेश्याओंके साथही उत्पन्न होते हैं, इसलिये तो उनके कृष्ण, नील और कापोत-लेश्याएं पाई जाती हैं। उसीप्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि देव भी मरण करके मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए अपनी अपनी पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं, इसलिए मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें छहों लेश्याएं बन जाती हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक

नं. ११२ सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ लब्ध्य.	१ स अ.	६ अ	७	४	१ म.	१ त्रस	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र २ का. शु मा ६	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना.	२ साका अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

संपहि पमत्तसंजद-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघालावो अणूणो अणधिओ वत्तव्वो। मणुस्स-पज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मणुसोघभंगो। अथवा इत्थिवेदेण विणा दो वेदा वत्तव्वा एत्तियमेत्तो चेव विसेसो।

संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक न्यूनता और अधिकतासे रहित मूल ओघालाप कहना चाहिये, अर्थात्, गुणस्थानोंकी अपेक्षा जो आलाप छठे गुणस्थानसे लेकर चौदहवें गुणस्थान तक कह आये हैं वे ही यहां मनुष्योंके छठे गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके समझना चाहिये, क्योंकि छठेसे आगेके सभी गुणस्थान मनुष्योंके ही होते हैं, इसलिये सामान्य कथनमें और इस कथनमें कोई विशेषता नहीं है।

मनुष्य-पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक मनुष्य-सामान्यके आलापोंके समान आलाप जानना चाहिये। अथवा वेद आलाप कहते समय स्त्रीवेदके विना दो वेद ही कहना चाहिये, क्योंकि सामान्य मनुष्योंसे पर्याप्त मनुष्योंमें इतनी ही विशेषता है।

विशेषार्थ—जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंकी विवक्षा न करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सामान्यसे सभी पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंमें तीनों वेद

नं. ११३ सामान्य मनुष्य संयतासंयतोंके आलाप.

ग	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	६	१	३	१	१	२
म	सं प				म	पं	त्र	ग ४ व. ४ औ १			मति श्रुत. अव.	देश	चक्षु अचक्षु अव.	पी. प. शु. भा. ३ शुभ	भ	औ क्षा क्षायो	म	आहा	साका अना

मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, एत्थ आहार-आहारमिस्सकायजोगा णत्थि। किं कारणं ? जेसिं भावो इत्थिवेदो दव्वं पुण पुरिसवेदो, ते वि जीवा संजमं पडिवज्जंति। दव्वित्थिवेदा संजमं ण पडिवज्जंति, सचेलत्तादो। भावित्थिवेदाणं दव्वेण पुंवेदाणं पि संजदाणं णाहारिरिद्धी समुप्पज्जदि दव्व-भावेहि पुरिसवेदाणमेव समुप्पज्जदि तेणित्थिवेदे पि णिरुद्धे आहारदुगं णत्थि, तेण एगारह जोगा भणिया। इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, एत्थ भाववेदेण पयदं ण दव्ववेदेण। किं कारणं ?

वालोंका ग्रहण हो जाता है, अतः इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप सामान्य मनुष्योंके समान बतलाये गये हैं। परंतु जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंमेंसे पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंसे पुरुष और नपुंसक वेदी मनुष्योंका ही ग्रहण होता है, क्योंकि स्त्रीवेदी मनुष्योंका स्वतंत्र भेद गिनाया है। मनुष्यके अवान्तर भेदोंमें पर्याप्त शब्द पुरुष और नपुंसकवेदी मनुष्योंमें ही रूढ है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहते समय स्त्रीवेदको छोड़कर आलाप कहे हैं।

मनुष्यनी (योनिमती) स्त्रियोंके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तथा अयोगरूप भी स्थान है। इन मनुष्यनियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये दो योग नहीं होते हैं।

शंका—मनुष्य-स्त्रियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान—यद्यपि जिनके भावकी अपेक्षा स्त्रीवेद और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेद होता है वे (भावस्त्री) जीव भी संयमको प्राप्त होते हैं। किन्तु द्रव्यकी अपेक्षा स्त्रीवेदवाले जीव संयमको नहीं प्राप्त होते हैं, क्योंकि, वे सचेल अर्थात् वस्त्रसहित होते हैं। फिर भी भावकी अपेक्षा स्त्रीवेदी और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेदी संयमधारी जीवोंके आहारऋद्धि उत्पन्न नहीं होती है, किन्तु द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षासे पुरुषवेदवाले जीवोंके ही आहारऋद्धि उत्पन्न होती है। इसलिए स्त्रीवेदवाले मनुष्योंके आहारकद्विकके विना ग्यारह योग कहे गए हैं। योग आलापके आगे स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। यहां भाववेदसे प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। इसका कारण यह है कि यदि यहां द्रव्यवेदसे

'अवगदवेदो वि अत्थि' त्ति वयणादो। चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-णाणेण विणा सत्त णाण, परिहार-संजमेण विणा छ संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी वि अत्थि, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[११४]।

तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, छ संजम, चत्तारि दंसण,

प्रयोजन होता तो अपगतवेदरूप स्थान नहीं बन सकता था, क्योंकि, द्रव्यवेद चौदहवें गुण-स्थानके अन्ततक होता है। परन्तु 'अपगतवेद भी होता है' इस प्रकारका वचन-निर्देश नौवें गुणस्थानके अवेदभागसे किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि यहां भाववेदसे ही प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। वेद आलापके आगे चारों कषाय, तथा अकषाय-स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्यारूप भी स्थान होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी, तथा साकार और अनाकार उपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होतीं हैं।

उन्हीं मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन चार योगोंके विना ग्यारह योग, अथवा, उपर्युक्त चार और औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग इन छह योगोंके विना नौ योग तथा अयोग स्थान भी होता है। स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषाय, तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके

नं. ११४ मनुष्यनी स्त्रियोंके सामान्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग	इ	का.	यो	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ.	उ.
१४	२ स म	६ प अ.	१० ७	४ संज्ञिक	१ म	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	१ स्त्री अवेदा	४ अकषा	७ मन विना	६ परिहा विना	४	६ द्र ६ भा ६ अले	२ भ. अ	२	१ स अनु	२ आहा अना	२ साका. अना. यु उ

दव्व-भावेहिं छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी, आहारिणी, अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा" ।

तासिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, दो अण्णाण केवलणाणेण तिण्णि णाण, असंजमो जहाक्खादेण दोण्णि संजम,

विना छह संयम, चारो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी, तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी विकल्पसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोपयोगिनी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

विशेषार्थ— पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दश योगोंके होनेका स्पष्टीकरण ऊपर कर आये हैं, उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्यनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके संबन्धमे भी जान लेना चाहिये। यहां इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेदियोंके आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इनके आहार और आहारमिश्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार स्त्रीवेदियोंके पर्याप्त अवस्थामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते है।

उन्हीं मनुष्यनियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारो संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है। कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा सयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवल ज्ञान, इसप्रकार तीन ज्ञान, असंयम और यथाख्यातविहारशुद्धि ये दो संयम, चक्षु, अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन,

नं. ११५ मनुष्यनी स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	सं.	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ.
१४	१ स प	६	१०	४ म प न	२, १ १			११ पूर्वोक्त ९ म ४। व ४ औ. १ अयो.	१ स्त्री वेद.	४ कषाय.	७ मन, विना	६ परि. विना	४	६ द्र ६ भा. ६ अले.	२ म अ	६	१ स अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना यु. उ.

केवलदंसणेण तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा सुक्कलेस्साए चत्तारि वा; भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तेण तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ अणुभयाओ वा, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा"।

"मणुसिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, अथवा शुक्ललेश्याके साथ उक्त तीनों लेश्याएं मिलकर चार लेश्याएं होती है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और क्षायिकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी और अनुभय अर्थात् संज्ञिनी असंज्ञिनी विकल्प-रहित स्थान भी होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी अनाकारोपयोगिनी तथा उभय उपयोगोंसे उपयुक्त होती हैं।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, और संज्ञी-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, छहो अपर्याप्तियां, दशो प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

नं ११६ मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा म	१ सं.अ अ	६	७	४ सण्णि	१ म	१ पंचिं	१ तस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४ कषा	३ कुम कुश्रु के.	२ अस यथा	३ चक्षु अच केव	द्र २ का शु भा ४ अशु ३ शु १	२ भ अ	३ मि सा क्षा	१ स अनु	२ आहा अना	२ साका अनाका यु उ.

नं ११७ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ पंचिं	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

मिच्छाइट्ठि-पज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ''।

मिच्छाइट्ठि-अपज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी तथा अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग तथा औदारिककाय-योग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. ११८ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४ म	१ म	१ त्र	१	९ म ४ व ४ औ १	३ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१८]।

मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९]।

द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ-लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ११९ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स,अ	६अ.	७	४	१ म	१ प.	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १२० सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा	२ स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ग	१ पंचे.	१ त्रस	११ म ४ व. ४ औ २ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु अच	६	१ भ	१ क्षा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

पज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारु-वजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[1]।

अपज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्य-गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोप-

म. १२१ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप

ग	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	सं.	संज्ञि	आ.	उ
१ सा.	१ स प.	६	१०	४	१ म	१ पं	१ त्र	९ म. ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	१ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ स	२ सासा	१ स	१ आहा	१ साका अना

सण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

मणुसिणी-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[२]।

मणुसिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

योगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनु-

नं. १२२ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा.	१ स अ	६ अ	७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अचक्षु.	द्र ६ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सामा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

नं.१२३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	म	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ स प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१४]।

[१५]मणुसिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ,

प्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

संयतासंयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

नं १२४ असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	२ स प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ.१	२ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा ६	१ म	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

नं. १२५ संयतासंयत मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ देश.	१ स प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ.१	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ म.	२ औप क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका अना

सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद-णवुंसयवेदाणमुदए आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो च णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८] ।

मणुसिणी-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहारसण्णाए विणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी,

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

प्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं । नौ योगोंके होनेका कारण यह है कि स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होने पर आहारक-काययोग, आहारकमिश्रकाययोग, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होते हैं योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अप्रमत्तसयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार-संज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिक-

न. १२६ प्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	२	३	६	१	३	१	१	२
प्रम	स प				म	प	त्र	म ४ व ४ औ १	स्त्री		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के द विना	भा ३ शुभ	भ	ओ. क्षा क्षायो	स.	आहा	साका अना

तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[२७]।

[२८]मणुसिणी-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणी,

काययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारो कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामा और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे शुक्ल-लेश्या, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व,

नं. १२७ अप्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स.	सन्नि	आ.	उ.
७	१	६	१०	३	१	१	१	९	२	४	३	२	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अप्र	सं.प			आहा विना	म	प	त्रस	म ४ व ४ औ १	स्त्री.		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के द विना	भा ३ शुभ.	भ.	औ. क्षा. क्षायो	स.	आहा	साका अना.

नं. १२८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	सन्नि	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र ६	१	२	१	१	२
अपू	स.प			आहा विना	म.	प	त्र	म ४ व ४ औ १	स्त्री		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के.द विना	भा १ शु	भ.	औ. क्षा	स	आहा.	साका. अना.

आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१९] ।

मणुसिणी-विदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार और भयसंज्ञाके विना शेष दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या,

नं. १२९ अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	१	४	३	२	३	६	१	२	१	१	२
अ.	स.प.			म.	म	पंचे.	त्रस	म ४	स्त्री		मति	सामा	के. द	द्र	भा	औप	स	आहा	साका
प्र				परि				व. ४			श्रुत	छेदो	विना.		शु	क्षा			अना
भा								औ १			अव								

सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[131]।

मणुसिणी-तदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय विणा तिण्णि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[132]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषायके विना शेष तीन कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. १३० अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

ग	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ अ द्वि भा.	१ स प.	६	१०	१ प	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	४	३ मति. श्रुत अव	२ सामा. छेदो	३ के द विना.	द्र ६ भा १ शु.	१ भ	२ औ क्षा.	१ स	१ आहा	२ साका. अना

नं १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

ग	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	सन्नि.	आ	उ.
१ अ तृ भा	१ प प	६	१०	१ प.	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	३ क्रोध. विना	३ मति श्रुत अव.	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र. ६ भा १ शु.	१ भ	२ औ क्षा.	१ स	१ आहा	२ साका अना.

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दड्ढ-बीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसय-वेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि। दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहां पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	२	३	२	३	६	१	२	१	१	२
अ	म			प.	म.	पंचे	त्रस.	म ४	अ	माया	मति	सामा	चक्षु	भा	१भ	या	सं	आहा	साका.
प	प							व ४		लोभ.	श्रुत	छेदो	अचक्षु	श		ज्ञा			अना
मा								औ १			अव								

जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३३]।

[३४]मणुसिणी-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं,

और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य-

नं. १३३ अनिवृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	सं.	ग	इ	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ.
१ अ पं. मा	२ स प	६	१०	१ परि	१ म	१ त्रस	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अवे.	१ लो	३ मति. श्रुत अव.	२ सामा छेदो.	३ के द विना.	६ द्र.६ भा १ शु	१ भ.	२ औप क्षा.	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं १३४ सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ.	स.	सन्नि.	आ	उ
१ सू.	१ स प	६	१०	१ स प.	१ म	१ त्रस	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अवे.	१ सूक्ष्म लोभ.	३ मति श्रुत. अव	१ सूक्ष्म-सां	३ के द विना	द्र ६ भा. १ शु.	१ भ	२ औप क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दड्ढ-बीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसय-वेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि। दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहां पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१ अ च मा	१ स प	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ. १	०	२ माया लोभ.	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शु	१ भ	२ औ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका. अना

जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१३३]।

[१३४]मणुसिणी-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं,

और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य-

नं. १३३ अनिवृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपगता	१ सं पर्या	६	१०	१ परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपगत	१ लो	३ मति. श्रुत अव	२ सामा छेदो.	३ के द विना.	द्र.६ भा १ शु	१ भ.	२ औप क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं १३४ सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ गु.	१ सं प	६	१०	१ सं प.	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपगत	१ सूक्ष्म लोभ.	३ मति श्रुत. अव	१ सूक्ष्म-सां	३ के. द विना	द्र द भा १ शु.	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दद्ध-बीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसय-वेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि। दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहां पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अप मा	१ स प	६	१०	१ प.	१ म.	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० द्रव्य	२ माया लोभ.	३ मति श्रुत अव	२ माया लोभ	३ के द त्रिना	६ द्र भा शु	१ भ	२ औ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका. अना

जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१३३]।

[१३४]मणुसिणी-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं,

और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य-

नं. १३३ अनिवृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ पं. मा	१ स प	६	१०	१ परि	१ म	१ स्त्री	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	० द्रव्य क्ली	१ लो	३ मति श्रुत अव.	२ सामा छेदो.	३ के द विना.	६ द ६ भा १ शु	१ भ.	२ औप क्षा.	१ सं	१ आहा.	२ साका. अना.

नं १३४ सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ सू	१ सं प	६	१०	१ प.	१ म	१ स्त्री	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	० द्रव्य क्ली	१ सूक्ष्म लोभ.	३ मति श्रुत. अव	१ सूक्ष्म-सां	३ के. द विना	६ द भा १ शु.	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणीसु उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणीसु खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, खीणकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण,

सिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके

नं. १३५ उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ उप	१ सं प	६	१०	० उस	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अवे	० उक	३ मति श्रुत अव	१ यथा	३ के ट विना	६ भा १ शु	१ म	२ औप क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५]।

[५६]मणुसिणी-सजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो वा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं,

तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें, वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमे आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये सात योग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों

नं. १३६ क्षीणकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ क्षीण	१ स प	६	१०	० क्षीणस.	१ म.	१ पंचे	१ तस	९ म. ४ व. ४ औ १	० अवग.	० अकषा.	३ मति श्रुत अव	१ यथा	३ के द विना	द्र ६ भा १ शु	१ भ	१ क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

नं. १३७ सयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि.	आ.	उ.
१ सयो	२ प अ	६प ६अ	४ २	० क्षीणस	१ म	१ पंचे	१ तस	७ म २ व २ औ २ का १	० अवग	० अकषा	१ के	१ यथा	१ के द	द्र ६ भा १ शु	१ भ.	१ क्षा	० अनु	२ आहा. अना.	२ साका अना. यु उ

णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति।

मणुसिणी-अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति[137]।

लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे

विकल्पोंसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे अलेश्यास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद,

नं. १३८ अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अयो	१ पर्यो	६	१ आयु	० क्षीणसं	१ म	१ पंचे	१ त्रस	० अयोग	० अपगा	० अकषा	१ के.	१ यथा	१ के द	६ द्र० भा	१ भ	१ क्षा	० उभ विना	१ अना.	२ साका. अनाका यु उं.

जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

एव मणुसगदी समत्ता।

"देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,

चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए।

देवगतिमें सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन-योग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसक वेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३९ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ.
१ मि	१ स. अ	६अ.	७	४	१ म	२ प.	१ त्रस	२ औ मि, कार्म	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु भा. ३ अशु.	२ म अ.	१ मि	१ स.	२ आहा. अना	२ साका. अना.

न. १४० देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ	उ.
४ मि सा स अ	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	११ म ४ व. ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ म अ	६	१ स.	२ आहा अना	२ साका. अना.

असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ एत्थ सिस्सो भणदि—देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवंति त्ति एदं ण घडदे, तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ-लेस्साभावादो। मा भवंतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ दव्वदो पुण छ लेस्सा भवंति चेव, दव्व-भावाणमेगत्ताभावादो। इदि एदमवि वयणं ण घडदे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चेव ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरणोकम्म-परमाणवो आगच्छंति। तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे सोधम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरूव-दव्वलेस्सापरूवणादो णव्वदि। ण च देवाणं पज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ मोत्तूणण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि होदव्वमिदि। एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, (यहां तीन अशुभ लेश्याएं अपर्याप्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये।) भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका—यहांपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं यह वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्याप्तकालमें भावसे छहों लेश्याओंका अभाव है। यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेश्याएं मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती ही हैं, क्योंकि द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है। सो ऐसा कथन भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेश्या होती है, उसी लेश्यावाले ही औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरसंबन्धी नोकर्म परमाणु आते हैं। यदि यह कहा जाय कि उक्त बात कैसे जानी जाती है, तो उसका उत्तर यह है कि सौधर्म आदि कल्पवासी देवोंके भाव-लेश्याके अनुरूप ही द्रव्य लेश्याका प्ररूपण किये जानेसे उक्त बात जानी जाती है। तथा देवोंके पर्याप्तकालमें तेज, पद्म और शुक्ल इन तीन लेश्याओंको छोड़कर अन्य लेश्याएं होती नहीं हैं, इसलिये देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होना चाहिये। इस प्रकरणमें निम्न गाथाएं उपयुक्त हैं—

किण्हा भमरसमण्णा णीला पुण णीलगुलियसंकासा ।
काओ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जवण्णा य ॥ २२३ ॥

पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसंकासा ।
किण्हादि-दव्वलेस्सा-वण्णविसेसो मुणेयव्वो[1] ॥ २२४ ॥

भावलेस्सा-लिंगं थोरुच्चएण एसा गाहा जाणावेई —

णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तु चिणित्तु पाउ-पडिदाइ ।
अब्भंतरलेस्साणं भिंदइ एदाइं वयणाइं[2] ॥ २२५ ॥

कृष्णलेश्या भौंरेके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीललेश्या नीलकी गोलीके समान नीलवर्णकी होती है, कापोतलेश्या कपोतवर्णवाली होती है, तेजोलेश्या सोनेके समान वर्णवाली होती है, पद्मलेश्या पद्मके समान वर्णवाली होती है और शुक्ललेश्या कांसेके फूलके समान श्वेतवर्णकी होती है । इसप्रकार कृष्णादि द्रव्यलेश्याओंके वर्ण-विशेष जानना चाहिए ॥ २२३,२२४ ॥

भावलेश्याओंके स्वरूपका थोडेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—

जड़-मूलसे वृक्षको काटो, स्कन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो फलोंको तोड़कर खाओ और वायुसे पतित फलोंको खाओ, इसप्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् भावलेश्याओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २२५ ॥

विशेषार्थ—गोम्मटसार जीवकांडमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे लदे हुए वृक्षको देखकर कृष्णलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़-मूलसे उखाड़कर फलोंको खाना चाहिये । नीललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्कन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भाग को काटकर फलोंको खाना चाहिये । कापोतलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । तेजोलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । पद्मलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये । शुक्ललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुसे गिरे हुए फलोंको खाना चाहिये । उक्त प्रकारके भावोंसे छहों लेश्याओंके तारतम्यको जान लेना चाहिये ।

१ ' णीला पुण ' इति स्थाने ' आ, क ' प्रत्योः ' णीलाएण ' इति पाठः । ' अ ' प्रतौ ' णीलाघण ' इति पाठः ।

२ पञ्चसं. १, १८२, १८४ (दि. हस्तलिखित)

३ णिम्मूलखंधमाहुवसाहं छित्तुं चिणित्तु पडिदाइं । खाउ फलाइं इदि जं मणेण वयणं हवे तक्कं ॥ गो. जी. ५०८.

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्म-सुक्का य ।
सुक्का य परमसुक्का लेस्ससमासो मुणेयव्वो[1] ॥ २२६ ॥
तिण्ह दोण्हं दोण्हं छण्ह दोण्हं च तेरसण्ह च ।
एत्तो य चोद्दसण्ह लेस्साभेदो मुणेयव्वो[2] ॥ २२७ ॥

एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं साहेंति, उभय-पक्ख-साधारणादो । ण तो उत्त-जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्व-लेस्सा, उत्तमभोगभूमि-मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो । ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त-दव्वलेस्सा, छव्विह-भावलेस्सासु परियट्टंत-तिरिक्ख-मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमप्पसंगादो । धवलवण्ण-बलायाए

तीनके तेजोलेश्याका जघन्य अंश, दोके तेजोलेश्याका मध्यम अंश, दोके तेजोलेश्याका उत्कृष्ट एवं पद्मलेश्याका जघन्य अंश, छहके पद्मलेश्याका मध्यम अंश, दो के पद्मलेश्याका उत्कृष्ट एवं शुक्ल लेश्याका जघन्य अंश, तेरहके शुक्ललेश्याका मध्यम अंश तथा चौदहके परमशुक्ललेश्या होती है। इस प्रकार तीनों शुभ लेश्याओंका भेद जानना चाहिये ॥ २२६, २२७ ॥

विशेषार्थ—भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके जघन्य तेजोलेश्या होती है । सौधर्म और ऐशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजोलेश्या होती है । सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या होती है । ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पद्मलेश्या होती है । शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पद्मलेश्या और जघन्य शुक्ललेश्या होती है । आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्ललेश्या होती है । इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर इन चौदह विमान-वालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्ललेश्या होती है।

समाधान—शंकाकारकी पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार कहते हैं—उपर कही गई ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, वे गाथाएं उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं । और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है । जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—द्रव्यलेश्या अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेश्याका तो अनुकरण करती नहीं है, अन्यथा अपर्याप्तकालमें अशुभ तीनों लेश्यावाले उत्तम भोगभूमियां मनुष्योंके गौर वर्णका अभाव प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्तकालमें भी पर्याप्त-जीवसंबन्धी द्रव्यलेश्या भाव-लेश्याका नियमसे अनुकरण नहीं करती है, क्योंकि, वैसा मानने पर छह प्रकारकी भाव-लेश्याओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्योंके द्रव्यलेश्याके अनियम-

१ गो. जी. ५३५ परं तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्—' भवणतिया पुण्णगे असुहा ' । प्रतिषु प्रथमपत्तौ ' तेउ तेउ तह तेउ पम्म पम्मा य ' इति पाठ

२ गो. जी. ५३४. परं तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्—' लेस्सा भवणादिदेवाणं ' ।

भावदो सुक्कलेस्सप्पसंगादो। आहारसरीराणं धवलवण्णाणं विग्गहगदि-ट्ठिय-सव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भावदो सुक्कलेस्सावत्तीदो चेव। किं च, दव्वलेस्सा णाम वण्णणामकम्मोदयादो भवदि, ण भावलेस्सादो। ण च दोण्हमेगत्तं णाम, वण्णणामं-मोहणीयाणं अघादि-घादीणं पोग्गल-जीवविवागीणं एगत्त-विरोहादो। विस्ससोवचयवण्णो भावलेस्सादो भवदि, ओरालिय वेउव्विय-आहारसरीराणं वण्णा वण्णणामकम्मादो भवंति, अदो ण एस दोसो। इदि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चादि-बाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदिबंधे पदेसबंधे च भावलेस्सा-वावार-दंसणादो। अदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा त्ति सिद्धं। तदो वण्णणामकम्मोदयदो भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवंति, उवरिमदेवाणं तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति। पंच-वण्ण-रस-कागस्स कसण-ववएसो व्व एगवण्ण-ववहार विरोहाभावादो। भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया

पनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा। और यदि द्रव्यलेश्याके अनुरूप ही भावलेश्या मानी जाय, तो धवल-वर्णवाले बगुलेके भी भावसे शुक्ललेश्याका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा धवलवर्णवाले आहारक शरीरोंके और धवलवर्णवाले विग्रहगतिमें विद्यमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुक्ललेश्याकी आपत्ति प्राप्त होगी। दूसरी बात यह भी है कि द्रव्यलेश्या वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होती है, भावलेश्यासे नहीं। इसलिये दोनों लेश्याओंको एक कह नहीं सकते, क्योंकि, अघातिया और पुद्गलविपाकी वर्णनामा नामकर्म, तथा घातिया और जीवविपाकी (चारित्र) मोहनीय कर्म इन दोनोंकी एकतामें विरोध है। यदि कहा जाय कि कर्मोंके विस्रसोपचयका वर्ण तो भावलेश्यासे होता है, और औदारिक, वैक्रियिक, आहारकशरीरोंके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं, इसलिए हमारे कथनमें यह उक्त दोष नहीं आता है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'कृष्णलेश्यावाला जीव चंडकर्मा होता है, वैर नहीं छोड़ता है' इत्यादि रूपसे बाहरी कार्योंके उत्पन्न करनेमें, तथा स्थितिबन्ध और प्रदेशबन्धमें ही भावलेश्याका व्यापार देखा जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध होती है कि भावलेश्या द्रव्यलेश्याके होनेमें कारण नहीं है। इसप्रकार उक्त विवेचनसे यह फलितार्थ निकला कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, तथा भवनत्रिकसे ऊपरके देवोंके तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं। जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले काकके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त काकके कृष्ण व्यपदेश देखा जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक शरीरमें द्रव्यसे छहों लेश्याओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेश्याके व्यवहार करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

१ प्रतिषु ' वण्णणाम ' इति पाठो नास्ति।

अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४८]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, विभंगज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १४१ देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
४ मि सा. म. अ	१ सं प	६	१०	४	१ दे	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. १४२ देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ.	उ
३ मि सा अ.	१ सं अ	६	७	४	१ दे	१ प	१ त्र	२ वै मि. कार्म	२ स्त्री पु	४	५ कुम. कुश्रु मति श्रुत अव	१ असं.	३ के द विना	द्र २ का शु. भा. ६	२ भ अ	५ मि. सासा औ क्षा क्षायो.	१ सं	२ आहा अना.	२ साका अना

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

ना. १४३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	६	२	१	१	२	२
मि	स	प	प	७	दे.	पंचे.	त्रस	म ४	स्त्री		अज्ञा	अस.	चक्षु	द्र ६	भ	मि	स	आहा	साका.
		म	अ	६				व. ४	पु				अच	भा ६	अ.			अना.	अना
		अ						वै २											
								का १											

अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं. भव्यसिद्धिक. अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, विभंगज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १४१ देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
४ मि सा. स. अ	१ सं. प.	६	१०	४	१ दे	१ पं.	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान. ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ.	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. १४२ देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ.	उ
३ मि सा अ.	१ स अ	६ पर्या	७ पर्या	४	१ दे	१ प	१ त्र	२ वै मि. कार्म	२ स्त्री पु	४	५ कुम. कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस.	३ के द विना	द्र २ का शु. भा. ६	२ भ अ	५ मि. सासा औ क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारो कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. १४३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म ४ व ४ वै २ का १	३ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ.	१ मि	१ सं	२ आहा अना.	२ साका. अना

अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं देवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकामिश्र और कार्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, विभगज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १४१ देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
४ मि सा. स. अ	१ सं.	६	१०	४	१ दे	१ पुं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान. ३	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. १४२ देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
३ मि सा अ.	१ स अ.	६ पर्या	७ पर्या	४	१ दे	१ प	१ त्र	२ वै मि. कार्म	२ स्त्री पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति श्रुत अव	१ असं.	३ के द विना	द्र २ का शु. भा. ६	२ भ अ	५ मि. सासा औ क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. १४२ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे.	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै २ का.१	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ.	१ मि	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''' ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

देव सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान,

नं. १४४ मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स.प.	६	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा ३ शुभ.	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. १४५ मिथ्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ स अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा ६	२ भ अभ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. १४६ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा	२ स. प. स. अ	६प ६अ	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै. २ का १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं १४७ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ सा	१ स प	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म ४ व ४ वै. १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच.	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ.	१ सासा	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४८]।

देव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो

अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे तेज,

नं. १४८ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	२	४	२	१	२	द्र २	१	१	१	२	२
सा.	स.अ	अप			दे	पंचे	त्र.	वै मि कार्म	स्त्री. पु		कुम. कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा ६	भ	सा	स	आहा अना.	साका अनाका

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

देव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १४९ सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ स.प	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ३ शुभ.	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका. अना

नं. १५० असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ	उ
१ असं	२ स.प स.अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म. ४ व ४ वै. २ का. १	२ स्त्री पु	४	३ म ति श्रुत अव.	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो,

---

उन्हीं तसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं भव्यसिद्धिक, औप-शमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औप-शमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक;

नं. १५१ असं म्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ अवि.	१ स.प	६ प.	१०	४	१ दे	१ प.	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ मति. श्रुत. अव	१ असं	३ के द निना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ म	३ औप. क्षा. क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका अना

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर–आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा तेजोलेश्या भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १५२ असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ स अ	६ छ.	७	४	१ दे.	१ प	१ त्र.	२ वै मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के.द विना	द्र ३ का शु भा ३ शुभ	१ भ.	३ औप. क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. १५३ भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि सा स अ	२ स प स अ	६ प. ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ वै २ का १	२ स्त्री. पु	४	६ म. ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा ४ अशु ३ तेजो. १	२ भ. अ.	५ क्षायि विना.	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासा-

नं. १५४ भवनत्रिक देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	आ	सं	ग.	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि सा अ.	१ सं प	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	८	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	६ मा १ ते	२ भ अ	५ क्षायि विना	१ सं	१ आहा	२ साका अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इन ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोतलेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं १५५ भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि सा.	१ स अ	६ अप	७	४	१ दे	१ त्रस अप	१ त्रस	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु.	४	२ कुम कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा. ३ अशु	१ भ अ	२ मि सा	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

नं. १५६ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ स.प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म.१	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ४ अशु २ तेज १	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७]।

[१] तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-

नं. १५७ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग.	इ	का.	यो	वे	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	१ स. प.	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व. ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र.६ भा १ तेज.	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १५८ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	१ स अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म.	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ का शु भा ३ अशु	२ भ. अ.	१ मि	१ स.	२ आहा अना	२ साका. अना

जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

भवणवासिय वाणवेंतर-जोइसियदेव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुण-ट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

कायोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्र-काययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं १५९ भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
सासा	२ स प स.अ	६ प ६ अ.	१० ७	४	२ दे	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का. १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ४ अशु. ३ तेज. १	१ भ	१ सासा.	१ स.	१ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-

उन्ही सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. १६० भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	३	द्र ६	१	२	१	१	२
सासा	स	प	प		दे	पं	त्रस.	म ४ व ४ वै १	स्त्री पु		अज्ञा	अस	चक्षु अच	भा १ तेज	भ	सासा	स	आहा	साका अना

हारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असजमो, दो दसण, दव्वेण छ लेस्सा; भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. १६१ भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ.
१ सा	१ स अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	२ व मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा १ अशु	१ म	१ सा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

सं. १६२ भवनत्रिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	सय	द.	ले	म	स.	सज्ञि	आ	उ.
१ मिश्र	१ स, प	६ प	१०	४	१ दे	१ प	१ त्रस.	९ म ४ व ४ वै. १	२ स्त्री पु	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा १ तेज	१ म	२ सम्य.	१ स.	१ आहा.	२ साक्ष. अना

भवणवासिय-वाणवंतर-जोइसियदेव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइय-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६२]।

एसो इत्थि-पुरिसवेदाणमोघालावो समत्तो। एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्वं। णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव ठवेदव्वो। एवं चेव इत्थिवेदणिरुंभणं काऊण वत्तव्वं। णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ इत्थिवेदो चेव ठवेदव्वो।

असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्य-सिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार भवनत्रिक स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंके संयुक्त सामान्य आलाप समाप्त हुए। इसीप्रकार भवनत्रिक देवोंमें पुरुषवेदके आलाप कहना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि ऊपर जहां भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये है, वहा एक पुरुषवेद ही स्थापित करना चाहिये। इसीप्रकार भवनत्रिक देवोंमें स्त्रीवेदका आश्रय करके आलाप कहना चाहिये। विशेष बात यह है कि पहले जहां सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहां एक स्त्रीवेद ही स्थापित करना चाहिये।

विशेषार्थ—ऊपर जो भवनत्रिक देवोंके आलाप कह आये है, वे सामान्यालाप हैं। पुरुषवेद और स्त्रीवेदका भेद नहीं किया गया है। परंतु उन्हीं आलापोंमें दो वेदके

नं. १६२ भवनत्रिक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स.	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	३	द्र. ६	१	२	१	२	२
अवि.	स. पं.	प.			दे.	पंचे.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. १	स्त्री पु.		मति श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना	भा. १ तेज.	भ.	औप. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

सोधम्मीसाणदेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्साः भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता होंति अणाकारु-वजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

स्थानमें केवल पुरुषवेद या केवल स्त्रीवेद इसप्रकार एक वेदके स्थापित कर देने पर वे आलाप पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी भवनत्रिकोंके हो जाते हैं। भवनत्रिकके सामान्य आलापोंसे विशेष आलापोंमें इससे अधिक और कोई विशेषता नहीं है।

सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसक-वेदके विना दो वेद चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ

१ प्रतिषु ' दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण ' इति पाठः ।

सं. १६४ सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	म	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
४ मि. सा. स अ	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ वै	१	२	११ म ४ व. ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	३ द्र का. छ ते. भा १ तेज	२ भ अ.	६	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

दो वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउ-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं। उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेढिम्हि मद-संजदे पडुच्च सोधम्मादि-उवरिम-देवाणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु-

योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व होते हैं। यहां पर औपशमिकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि औपशमिकसम्यक्त्वके साथ उपशम श्रेणीमें मरे हुए संयतोंकी अपेक्षा सौधर्म आदि ऊपरके देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

नं. १६५ सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
४ मि सा. ग अ	१ सं पं	६	१०	४	२ दे	१ पंचें	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ असं के द	२ द विना	१ भा तेज.	१ भ अ	१	१ स	१ आहा	२ साका अना

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]"।

सोधम्मीसाणदेव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा[1], भावेण मज्झिमा तेउलेस्साः भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]"।

सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६६ सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अ.	१ स अ	६ लब्धि	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	५ कुम, कुश्रु मति श्रुत अव	१ असं.	३ के द विना	द्र २ का शु. भा. १ तेज	२ भ अ	५ औप क्षा क्षायो. मिथ्या. सासा	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

[1] प्रतिषु ' दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा ' इति पाठ ।

नं. १६७ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे.	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र ३ का. शु ते भा १ तेज.	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक-काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इं.का	यो	वे	क	ज्ञा	सं.	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु.	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ भा १ तेज	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा.	२ साका अना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६९ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ स अ.	६ अ	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस.	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु. भा १ तेज.	२ भ. अ.	१ मि.	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना.

नं. १७० सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु ते भा १ तेज.	१ भ.	१ सासा	१ स.	२ आहा. अना.	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक-काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप

ग	जी	प	प्रा	स	गं.	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र १	२	१	१	१	२
मि	स प	प.			द	पं	त्र	म ४ व ४ व १	स्त्री पु		अज्ञा	अस	चक्षु अच	भा १ तेज.	भ अ	मि	स	आहा	साका अना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६९ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग.	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ.	उ.
१ मि.	१ स अ.	६ अ	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै.मि कार्म	२ स्त्री पु.	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु भा १ तेज.	२ भ. अ.	१ मि.	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना.

नं. १७० सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स.	सन्नि.	आ.	उ.
१ सासा	२ स प. स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व.४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ३ का शु ते भा १ तेज.	१ भ.	१ सासा	१ स.	२ आहा. अना.	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

[११] तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा,

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारो कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकामिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो

नं १७१ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र १	१	१	१	१	२
मा	स	प			दे	पचे	त्रस	म ४ व ४ वै. १	स्त्री पु		अज्ञा	अस	चक्षु अच	तेज मा ३ तेज	भ.	सासा	स	आहा	साका. अना.

नं. १७२ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	२	४	२	१	२	द्र २	१	१	१	२	२
मा.	स.अ				दे			वै मि कार्म	स्त्री. पु		कुम. कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु मा १ तेज	म	सा	स	आहा अना.	साका अनाका

भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सोधम्मीसाण-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सोधम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम,

अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारो वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारो वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

सं. १७३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ स प	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ तस	९ म ४ व १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	६ १ ते. भा २ तेज.	१ भ	१ सम्य	१ स	२ आहा	२ साका अना

तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७५]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७५]।

म, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १७४ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ स.प सं अ	६ प. ६ अ	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ वै.२ का १	२ स्त्री पु	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के द विना.	३ द्र का भा तेज	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १७५ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	२ स.प	६ प.	१०	४	१ दे	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ मति. श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	३ द्र तेज भा १ तेज	१ भ	३ औप. क्षा क्षायो	१ स.	२ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं । देवासंजदसम्माइट्ठीणं कधमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि ? वुच्चदे—वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढिमारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठि-ट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणमिय कालं काऊण सोधम्मीसाण-देवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। अध ते चेव उक्कस्स-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति । अध ते चेव उवसमसम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणमिय कालं करेंति तो बह्म बह्मोत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति । अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणमिय जदि ते कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सारदेवेसु उप्पज्जंति ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं।

शंका — असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व कैसे पाया जाता है ?

समाधान— वेदकसम्यक्त्वको उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चढ़कर फिर वहांसे उतर कर प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंसे मध्यम तेजोलेश्याको परिणत होकर और मरण करके सौधर्म ऐशान कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। तथा, उपर्युक्त गुणस्थानवर्ती ही जीव उत्कृष्ट तेजोलेश्याको अथवा जघन्य पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ सनत्कुमार और महेन्द्र कल्पमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मध्यम पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ट, शुक्र और महाशुक्र कल्पोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्ट पद्मलेश्याको अथवा जघन्य शुक्ललेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ शतार,

अथ उवसमसेढिं चढिय पुणोदिण्णा चेव मज्झिम-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणद-पाणद-आरणच्चुद-णवगेवज्जविमाणवासिय-देवेसुप्पज्जंति। पुणो ते चेव उक्कस्स-सुक्कलेस्सं परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसम-सम्मत्तेण सह णवाणुदिस-पंचाणुत्तरविमाणदेवेसुप्पज्जंति। तेण सोधम्मादि-उवरिम सव्व-देवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि त्ति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ॥

एत्तमित्थिपुरिसवेदाणमोघालावो समत्तो।

एवं चेव पुरिसवेद-देवाणमालावो वत्तव्वो। णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो। एवं सोधम्मीसाणदेवीणं पि वत्तव्वं। णवरि जत्थ

सहस्रार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, उपशमश्रेणी पर चढ़ करके और पुनः उतर करके मध्यम शुक्ललेश्यासे परिणत होते हुए यदि मरण करते हैं तो उपशमसम्यक्त्वके साथ आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, पूर्वोक्त उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्ललेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो उपशमसम्यक्त्वके साथ नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर-विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। इसकारण सौधर्म स्वर्गसे लेकर ऊपरके सभी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

सम्यक्त्व आलापके आगे—संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समाप्त हुए।

सौधर्म ऐशान कल्पके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहां पर पहले स्त्रीवेद और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहां पर केवल एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। इसीप्रकार सौधर्म ऐशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि

नं. १७७ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	२	२	१	४	३	१	३	१	२	१	३	१	२	२
अवि.	स	अ	पं		दे.	प	त्र.	वै मि कार्म	पु.		मति श्रुत अव	असं	के.द	पीत	शु भा तेज	भ.	ओप. क्षा क्षायो	स	आहा	साका. अना.

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ती णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ[1]-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके (देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, ऐसा कहना चाहिए, क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्त-कालमें उत्कृष्ट पीत और जघन्य पद्मलेश्या, भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' उक्कस्सतेउ ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
४ मि सा स अ	२ स प अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे	१ गए	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै २ का १	२ पु	४	६ म ३ श्रु २ अज्ञा ३	२ असं	३ के द. विना	द्र ४का श्रु ते प भा २ ते उ प ज	२ भ. अ	६	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

अध उवसमसेढिं चढिय पुणोदिण्णा चेव मज्झिम-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणद-पाणद-आरणच्चुद-णवगेवज्जविमाणवासिय-देवेसुप्पज्जंति। पुणो ते चेव उक्कस्स-सुक्कलेस्सं परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसम-सम्मत्तेण सह णवाणुदिस-पंचाणुत्तरविमाणदेवेसुप्पज्जंति। तेण सोधम्मादि-उवरिम सव्व-देवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि त्ति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

एवमित्थिपुरिसवेदाणमोघालावो समत्तो।

एवं चेव पुरिसवेद-देवाणमालावो वत्तव्वो। णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो। एवं सोधम्मीसाणदेवीणं पि वत्तव्वं। णवरि जत्थ

सहस्रार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, उपशमश्रेणी पर चढ़ करके और पुनः उतर करके मध्यम शुक्ललेश्यासे परिणत होते हुए यदि मरण करते हैं तो उपशमसम्यक्त्वके साथ आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, पूर्वोक्त उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्ललेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो उपशमसम्यक्त्वके साथ नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर-विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। इसकारण सौधर्म स्वर्गसे लेकर ऊपरके सभी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

सम्यक्त्व आलापके आगे—संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समाप्त हुए।

सौधर्म ऐशान कल्पके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहां पर पहले स्त्रीवेद और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहां पर केवल एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। इसीप्रकार सौधर्म ऐशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि

नं. १७६ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	२	२	१	४	३	१	३	द्र २	१	३	१	२	२
अवि.	स अ	पं.			दे.	प	त्र.	वै मि कार्म	पु		मति श्रुत अव	असं	के.द वि	का शु भा तेज	भ.	औप. क्षा क्षायो	स	आहा अना	साका. अना.

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ती णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ[1]-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके (देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, ऐसा कहना चाहिए, क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट पीत और जघन्य पद्मलेश्या, भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' उक्कस्सतेउ ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
४ मि सा स अ.	२ स प स अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व. ४ वै २ का. १	१ पु	४	६ म. ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द. विना	द्र ४ क्ष भु ते प भा २ वे उ प ज	२ भ अ.	६	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्कस्स-तेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिस वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जी ास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्य , संज्ञिक, आहारक, रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्या-दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अना-

नं. १७८ तकुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स प	६ प	१०	४	१ दे.	१ पंचे	१ त्र	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पु	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	६,२ते ज प भा २ ते उ. प ज	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना.

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७९]।

संपहि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्म-भंगो। णवरि उवरि सव्वत्थ इत्थिवेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। ओघालावे भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ। तेसिं चेव अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ जहण्णपम्मलेस्साओ त्ति चेव विसेसो।

बम्ह-बम्हुत्तर-लांतव कापिट्ठ सुक्क-महासुक्ककप्पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमपम्मलेस्साओ, भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण

हारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सौधर्म देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी कल्पोंमें स्त्रीवेद नहीं है, अतः एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। उसमें भी ओघालाप कहते समय द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं, इतनी विशेषता है।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ और शुक्र-महाशुक्र कल्पवासी देवोंके आलाप सानत्कुमार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम पद्म लेश्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्मलेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है।

नं १७९ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	सं.	आ	उ.
१ मि सा. अ	१ स अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	५कुम कुश्रु मति श्रुत. अव	१ अस	३ के. द विना.	द. २ का.शु भा. २ ते. उ. प. ज	२ भ अ	५ औप. क्षा क्षायो मि सासा.	१ सं	२ आहा. अना.	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्कस्स-तेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिस वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अना-

नं. १७८ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	६	१	३	द्र.२ते ३	२	६	१	१	२
मि	सं	प	प		दे.		त्र	म. ४	पु		ज्ञान ३	अस	के द	प ज	भ		स	आहा	राक्ष
सा	प							व. ४			अज्ञा ३		विना	मा २	अ				
मि.								वै. १						ते उ.					
च														प					

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५]।

संपहि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्म-भंगो। णवरि उवरि सव्वत्थ इत्थिवेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। ओघालावे भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ। तेसिं चेव अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ जहण्णपम्मलेस्साओ त्ति चेव विसेसो।

बम्ह-बम्हुत्तर-लांतव कापिट्ठ सुक्क-महासुक्ककप्पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमपम्मलेस्साओ, भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण

हारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सौधर्म देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी कल्पोंमें स्त्रीवेद नहीं है, अतः एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। उसमें भी ओघालाप कहते समय द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं, इतनी विशेषता है।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ और शुक्र-महाशुक्र कल्पवासी देवोंके आलाप सानत्कुमार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम पद्म लेश्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्मलेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है।

नं १७९ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ.
३ मि सा न	१ सं अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	१ पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत. अव	१ असं	३ के द विना.	३ का शु सा. २ ते. उ. प. ज	२ भ अ	५ औप. सा क्षायो मि सासा.	१ सं	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुबुद्धं-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

'अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती है।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुबुद्ध, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याए होती है, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ 'समह' इति पाठः। त. रा. वा. पृ. १६७

२ अर्चा य अर्चिमालिणि वइरे वइरोयणा अणिमिसा। सोमो य सोमरूवे अंके फलिहे य आइचे॥ वि. सा. ८५६ तत्रानुदिशविमानानि मेरोरेव प्रत्याऽऽदित्यो नाम विमानप्रस्तारः। तत्र दिक्षु विदिक्षु च चतसृषु चतसृषु श्रेणिविमानानि। प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमानं, अपाच्यामर्चिमालि, प्रतीच्यां वैरोचनं, उदीच्यां प्रभासं, मध्ये आदित्यम्। विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि। पूर्वदक्षिणस्यामर्चिःप्रभम्। दक्षिणापरस्यां अर्चिर्मध्यम्। अपरोत्तरस्यां अर्चिरावर्तं। उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्टं। त. रा. वा. पृ. १६७. श्वेताम्बरमथपु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति।

वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल-लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	१	४	३	१	३	द्र ३	१	३	१	२	२
१	स.प	प	७		दे	पंचे	त्रस	म ४	पु		मति	असं.	के.द	का. शु	भ	औप	स	आहा	साका
	म अ	६						व ४			श्रुत		विना	ले. उ		क्षा		अना.	अना.
		अ						वै २			अव.			भा १		क्षायो.			
								कार्म.१						शु. उ.					

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुबुद्धं-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

[1]अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमे द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुबुद्ध, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याए होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ 'समद्र' इति पाठ। त. रा. वा. पृ. १६७

२ अर्चा य अर्चिमालिनि वइरे वइरोयणा अणदिसगा। सोमा य सोमरूवे अंके फलिहे य आदिचे॥ ति. प. ८५६ तदानुदिशविमानानि मेरोर्द्वे एकादशदिशा नाम विमानप्रस्तार। तत्र दिशु विदिशु च चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि। प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमान, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्यां वैरोचन, उदीच्यां प्रभास, मध्ये आदित्याख्य। विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि। पूर्वदक्षिणस्यामर्चिःप्रभ। दक्षिणापरस्या अर्चिर्मध्य। अपरोत्तरस्या अर्चिरावर्त। उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्ट। त. रा. वा. पृ. १६७ श्वेताम्बरग्रन्थेषु आनतादिविमानानामुल्लेखो नास्ति।

वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	१	४	३	१	३	द्र. २	१	२	१	२	२
अवि.	स.प	प	७		दे	पंचे	त्रस	म ४	पु.		मति	असं.	के.द	का शु.	भ	औप	स	आहा	साका
स.	स.	अ						व ४			श्रुत		विना	शु. उ		क्षा		अना.	अना.
ज								वै २			अव.			भा १		क्षायो.			
								कार्म.१						शु. उ.					

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

[1]अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती है, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमे द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुबुद्ध, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमे द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

[2]अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ 'सुमद्र' इति पाठ। त. रा. वा. पृ. १६७

२ अर्चा य अचिमालिणि वइरे वइरोयणा अणुदिसगा। सोमा य सोमरूवे अंके फलिहे य आइचे॥ वि. सा. ४५६ तत्रानुदिशविमानानि येष्वेक एवाऽऽदित्य। नाम विमानप्रस्तार। तत्र दिक्षु विदिक्षु च-त्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि। प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमान, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्यां वैरोचन, उदीच्यां प्रभास, मध्ये आदि-त्याख्य। विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि। पूर्वदक्षिणस्यामर्चिप्रभ। दक्षिणापरस्या अर्चिर्मध्य। अपरोत्तरस्यां अर्चिरावर्त। उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्ट। त. रा. वा. पृ. १६७. श्वेताम्बरग्रन्थेषु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति।

वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल-लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि.	२ स.प. स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म. १	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के द त्रिना	३ का शु. शु. उ भा १ शु. उ.	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना.

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा । एत्तियमेत्तो चेव विसेसो । सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । आणद-पाणद-आरणच्चुद सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा । पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा । अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा ।

[1]अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुबुद्ध, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ 'सुभद्र' इति पाठ । त. रा. वा. पृ १६७

२ अच्ची य अच्चिमालिणि वइरे वइरोयणा अणुदिसगा । सोमो य सोमरूवे अंके फलिके य आइचे ॥ त्रि सा. ४५६ तदनुदिशविमानानि येष्वेक एवाऽऽदित्यो नाम विमानप्रस्तार । तत्र दिक्षु विदिक्षु चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि । प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमान, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्यां वैरोचन, उदीच्यां प्रभास, मध्ये आदित्याख्य । विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि । पूर्वदक्षिणस्यामर्चिप्रभ । दक्षिणापरस्या अर्चिर्मध्य । अपरोत्तरस्या अर्चिरावर्त । उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्ट । त. रा. वा पृ १६७. श्वेताम्बरमतेषु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति ।

वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि. सम्य.	२ सं.प. सं.अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म.१	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के.द विना	६ ३ का शु शु. उ मा १ शु. उ.	१ भ	२ औप क्षा क्षायो.	१ सं	२ आहा अना.	२ साका अना.

सिया सुक्कलेरसा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण उवसमसम्मत्तं णत्थि? वुच्चदे— तत्थ दिट्ठा देवा ण ताव उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो । भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, उवसमसम्मत्तं पि तत्थ दिट्ठा देवा पडिवज्जंति; को तत्थ विरोधो ? इदि ण, 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । ण तत्थ दिट्ठ-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, मणुसगदि-वदिरित्तणगदीसु वेदगसम्माइट्ठिजीवाणं दंसणमोहुवसमणहेदुपरिणामाभावादो । ण य वेदगसम्माइट्ठित्तं पडि मणुस्सेहिंतो विसेसाभावादो मणुस्साणं च

सम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व होते हैं।

शंका— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है ?

समाधान— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तो औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि, वहां पर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है।

शंका— भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा आवे, किन्तु यदि वहां रहनेवाले देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तो इसमें क्या विरोध है ?

समाधान— ऐसा कहना भी युक्ति-युक्त नहीं है, क्योंकि, औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर ही औपशमिकसम्यक्त्वका पुनः ग्रहण करना स्वीकार करने पर 'अनादि मिथ्यादृष्टि जीवके प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्तिके अनन्तर-पश्चात अवस्थामें ही मिथ्यात्वका उदय नियमसे होता है। किन्तु जिसके द्वितीय, तृतीयादि बार उपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई है, उसके औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर-पश्चात् अवस्थामें मिथ्यात्वका उदय भाज्य है, अर्थात् कदाचित् मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है, कदाचित् सम्यग्मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होता है इत्यादि'[1]। इस कषायप्राभृतके गाथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है। यदि कहा जाय कि अनुदिश और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है। यदि कहा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टिके प्रति मनुष्योंसे अनुदिशादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव जो दर्शनमोहनीयके उपशमन योग्य परिणाम मनुष्योंके पाये जाते हैं वे

१ सम्मत्तपदमलंभस्साणंतर पच्छदो य मिच्छत्त । लंभस्स अपढमस्स दु सजियव्वो पच्छदो होदि ॥ (कसायपाहुड) सम्मत्तस्स जो पढमलंभो अणादियमिच्छाइट्ठिस्सओ तस्साणंतर पच्छदो अणंतरपच्छिमभावत्थाए मिच्छत्तमेव होइ । तत्थ जाव पढमट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ताव मिच्छत्तोदय मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । लंभस्स अपढमस्स दु जो खलु अपढमो सम्मत्तपडिलंभो तस्स पच्छदो मिच्छत्तोदयो भजियव्वो होइ । जयध अ पृ ९६१.

दंसणमोहुवसमणजोगपरिणामेहि तत्थ णियमेण होदव्वं, मणुस्स-संजम-उवसमसेढिसमारुहणजोगत्तणेहि भेददंसणादो। उवसमसेढिम्हि कालं काऊणुवसममम्मत्तेण सह देवेसुप्पण्णजीवा ण उवसमसम्मत्तेण सह छ पज्जत्तीओ समाणेंति, तत्थतणुवसमसम्मत्तकालादो छ-पज्जत्तीणं समाणकालस्स बहुत्तुवलंभादो। तम्हा पज्जत्तकाले ण एदेसु देवेसु उवसमसम्मत्तमत्थि त्ति सिद्धं। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें नियमसे होना चाहिए। सो भी कहना युक्ति-संगत नहीं है, क्योंकि, संयमको धारण करनेकी तथा उपशमश्रेणीके समारोहण आदिकी योग्यता मनुष्योंके ही होनेके कारण अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें और मनुष्योंमें भेद देखा जाता है। तथा उपशमश्रेणीमें मरण करके औपशमिक सम्यक्त्वके साथ देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव औपशमिक सम्यक्त्वके साथ छह पर्याप्तियोंको समाप्त नहीं कर पाते हैं, क्योंकि, अपर्याप्त अवस्थामें होनेवाले औपशमिक सम्यक्त्वके कालसे छहों पर्याप्तियोंके समाप्त होनेका काल अधिक पाया जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध हुई कि अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

विशेषार्थ—उपशमसम्यग्दृष्टि जीव औपशमिक सम्यक्त्वसे पुनः औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त नहीं होता है किंतु यदि उसके मिथ्यात्वका उदय हो जावे तो मिथ्यादृष्टि हो जाता है, यदि सम्यग्मिथ्यात्वका उदय हो जावे तो सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो जाता है, यदि सम्यक्प्रकृतिका उदय हो जावे तो वेदकसम्यग्दृष्टि हो जाता है और यदि अनन्तानुबन्धीमेंसे किसी एक प्रकृतिका उदय हो जावे तो सासादनसम्यग्दृष्टि हो जाता है[२]। इस नियमके अनुसार नौ अनुदिश और पांच अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुआ उपशमसम्यग्दृष्टि जीव फिरसे उपशमसम्यक्त्वको तो ग्रहण कर नहीं सकता है और मिथ्यात्व गुणस्थान उसके होता नहीं है, क्योंकि, अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उसके दूसरे कोई गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं, इसलिए मिथ्यात्वसे भी पुनः वह उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण नहीं कर सकता है। वेदकसम्यक्त्वसे कदाचित् उसके उपशमसम्यक्त्व माना जाय सो ऐसा मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वसे उपशमश्रेणीके सन्मुख मनुष्योंके ही उपशम (द्वितीयोपशम) सम्यक्त्व होता है अन्य गतियोंमें नहीं। तथा पूर्व पर्यायसे आया हुआ उपशमसम्यक्त्व अपर्याप्त अवस्थामें ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि, उपशमसम्यक्त्वके कालसे छह पर्याप्तियोंके पूरा करनेका काल अधिक होता है। इसप्रकार इतने कथनसे यह निष्कर्ष निकला कि नौ अनुदिश और पांच अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुआ उपशमसम्यग्दृष्टि जीव नियमसे वेदकसम्यग्दृष्टि ही हो जाता है और जो वेदकसम्यग्दृष्टि उत्पन्न होता है वह भी अन्त तक

१ प्रतिषु ' उ पज्जत्तीओ ' इति पाठः।

२ उवसमसम्मत्तद्धा छावलिमेत्तो दु समयमेत्तो त्ति। अवसिट्ठे आसाणो अणअण्णदरुदयदो होदि॥ अंतोमुहुत्तमद्धं सव्वोवसमेण होदि उवसंतो। तेण पर उदओ खलु तिण्णेक्कदरस्स कम्मस्स॥

ल. सा. १००, १०२.

अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" । एवं देवगदी समत्ता ।

सिद्धगदीए सिद्ध-भंगो ।

एवं गइमग्गणा समत्ता ।

वेदकसम्यग्दृष्टि ही रहता है ।

सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास. छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल लेश्याः भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं। इसप्रकार देवगतिके आलाप समाप्त हुए।

सिद्ध गतिके आलाप सिद्धोंके ओघालापके समान जानना चाहिये।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

नं १८१ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र. १	१	२	१	२	२
अवि.	सं. प.			दे			त्र	म ४ व. ४ वै १			मति श्रुत अव	असं	के द विना	शु. द्र भा शु. उ	भ	क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

नं. १८२ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र २	१	३	१	२	२
अवि.	सं अ	अप			दे	प	त्र	वै मि कार्म	पु		मति श्रुत अव	असं	के द विना	का शु भा. १ शु उ	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा अना.	साका अना

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोघो। णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, सिद्धगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, अकाया वि अत्थि, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संदजासंजदा वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अत्थि। एदे आलावा ण वत्तव्वा, सिद्धाणमेइंदियादि-जादिणाम-कम्मस्सुदयाभावादो।

सामण्णेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, पुढवि-वणप्फई अस्सिदूण सरीरस्स छ लेस्साओ हवंति। भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अकाय, संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए क्योंकि, सिद्धजीवोंके एकेन्द्रियादि जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त, बादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, मन-पर्याप्ति और भाषापर्याप्तिके विना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें—स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें श्वासोच्छ्वासके विना तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यग्गति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकायिक जीवोंके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छहों लेश्याएं पायी जाती हैं। भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

न १८२ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४ बा प ना अ पृ प अ पृ अ	४ प ४ अ	४ ३	४	१ ति	१ ए	५ थस विना	३ यो २ का. १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	१ अच	६ सा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंदसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और सूक्ष्म-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-अपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

नं. १८४ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग	इ	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	२ बा प सू प	४ प.	४	४	१ ति	१ ए	५ चस विना	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा.	२ साका. अना.

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८]।

बादरेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८९]।

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और बादर-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १८५ सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ बा अ सू.अ.	४ अ.	३	४	१ ति	१ एके	५ त्रस विना.	२ औ मि कार्म.	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	१ अच.	६ २ का शु भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा. अना	२ साका. अना.

नं. १८६ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ मि	२ बा प बा अ	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ बा ए जाति	५ त्रस विना	२ औ २ का.२	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	१ अच	६ ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका. अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[170]।

[170]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण,

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण

नं. १८७ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	१ बा.प.	४	४	४	१ ति	१ बा.ए जाति	१ त्रस विना	१ औदा	१ नपु.	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा.	२ साका अना

नं. १८८ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ बा अ	४ ल.	३	४	१ ति.	१ बा.ए जाति.	५ त्रस. विना	२ औ मि कार्म	१ नपु.	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ. अ.	१ मि.	१ अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। अपज्जत्तणामकम्मोदयाणं बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे बादरेइंदियअपज्जत्तालाव-भंगो[1]।

"सुहुमेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा;

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे पर्याप्तनामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत,

[1] प्रतिषु ' बादरेइंदियपज्जत्तालावो भंगो ' इति पाठः।

नं. १८९ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ सू प सू अ	४ प. ४ अ.	४ ३	४	२ ति	१ सू ए जाति.	५ त्रस निमा	३ औ २ का १	२ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अचं	६ २ का शु भा २ अशु	२ भ. अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु-

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों , कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

१ प्रतिषु ' काउसुक्कलेस्सा ' इति पाठ । सव्वसिं सुहुमाण काओदा गो जी ४९७

नं. १९० सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ सू.प	४	४	४	१ ति	१ सू ए जाति	५ त्रस बिना	१ औदा	१ ढ्ढ	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र १ का भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि.	१ अस.	१ आहा	२ साका अना

दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

एवं पज्जत्त-णामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाण एओ अपज्जत्तालावो।

वेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, वे जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा इदि चत्तारि जोग, णवुंसयवेद,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप जानना चाहिए।

द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय-पर्याप्त और द्वीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके बिना चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग और असत्यमृषावचनयोग ये चार योग, नपुंसक-

मे. १९१ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ सू अ	४ ल.	३	४	१ ति	१ सू ए. जाति.	५ त्रस. विना	२ औ.मि कार्म.	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	१ अच	द्र २ का शु भा. ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना.	२ साका अना

चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण स्थान, एक द्वीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, मन-पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिक-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९२ द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ द्वी.प द्वी अ	५ प. ५ अ	६ ४	४	१ ति	१ द्वि	१ त्रस	४ औ.२ का १ व.१ अनु.	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ.	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना.

नं १९३ द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	१ द्वी प.	५	६	४	१ ति	१ द्वी जा	१ त्रस.	२ व १ अनु औ.१	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	१ अच.	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

एवं वीइंदिय-पज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं वीइंदियपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। वेइंदिय-लद्धिअपज्जत्तणामकम्मोदय सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी,

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, कायबल और आयु ये चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक आहारक-अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे द्वीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। द्वीन्द्रियजाति और लब्ध्यपर्याप्तक नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय-पर्याप्त और त्रीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु, और श्वासोच्छ्वास ये सात प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासो-

नं. १९४ द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ मि.	१ द्वी अ	५ अ	४	४	१ ति	१ द्वी. अ.	१ त्र	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अचक्षु.	६ का शु भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा. अना.	२ साका. अना

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठ पाण छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''' ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो,

न्द्रिय-पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कायबल, बल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थ , एक चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त जीव स, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-

नं. १९८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	२ च प. च अ	५ प ५ अ.	८ प ६ अ	४	१ ति	१ चतु	१ त्रस	४ व १ अनु औ २ का. २	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ अस.	२ आहा अना	२ साका अना

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

कारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच अपर्याप्तियां, आदिकी चार इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९९ चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ च प	५	८	४	१ ति	१ चतु.	१ त्र.	२ व. १ अन. औ १	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ म अ.	१ मि	१ असं	१ आहा	२ साका. अना.

नं. २०० चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	१ च.अ.	५ अ	६	४	१ ति	१ च आ	१ त्र	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	२ चक्षु अच.	द्र. २ का शु. भा. ३ अशु	२ म. अ	१ मि	१ असं	२ आहा. अना.	२ साका अना.

एवं चउरिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। चउरिंदियाणमपज्जत्त णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तव्वो।

"पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण एय पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वे-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले लब्ध्यपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी-पर्याप्त जीवोंके छहों पर्याप्तियां, संज्ञी-अपर्याप्त जीवोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके पांच अपर्याप्तियां संज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके दशों प्राण, संज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनोबलके विना नौ प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, सयोगिकेवली जिनके वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें आयु और कायबल ये दो प्राण, और अयोगिकेवली भगवान्‌के एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पंद्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

---

नं. २०१ पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१४	४ स. प स अ अस प. अप अ	६प ६अ ५प ५अ	१०,७ ९,७ ४ २ १	४ सज्ञिस	४	१ पञ्च	१ त्रस	१५ योग.	३ अपग. वेदस्था.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा ६ सलेश्य	१ भ अ	६	२ स अस. अनु	२ आहा अना.	२ साका अना यु उ

अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[७७]।

असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चोदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां दशों प्राण, नौ प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

सं. २०२ पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	२ स. प. अ.प	६ ५	१० ९ ४स १अ	४ सैज्ञि	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ व ४ औ वै आ. १ अयो.	३ त्रिवे.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा. ६ अले.	२ म अ	६	२ स असं. अनु.	२ आहा अना	२ साका अना यु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीण-सण्णा वा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा तदुभया वा[९१]।

पंचिंदिय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, तथा सयोगकेवलि समुद्घातके अपर्याप्तकालमें दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अना-कारोपयोगी और दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पूर्वोक्त चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचे-

नं २०३ पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अ प्र स	२ स. अ अस.अ.	६अ ५अ	७ ७	४ संज्ञा असं.	४	१ प.	१ त्र.	४ औ मि. वै मि आ मि कार्म	३ स्त्री. पुरु. नपुं.	४ क्रोध	६ विभ मन विना	४ अस. सामा छेदो यथा	४	६ २ का शु सा.६	२ स अ	५ मि. सा औप. क्षा क्षायो	२ स. अस अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना यु. उ

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

न्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण, असज्ञी पचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पाच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक,

नं. २०४ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सञ्ज्ञि	आ	उ
१ मि.	४ स प स अ अस प अस अ	६ ५ ६ अ ५ प ५ अ.	१० ७ ९ ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका. अना.

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जी[illegible] अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २०५ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	२ स प अस. य	६ ५	१० ९	४	४	१ पंचे	१ तस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस.	१ आहा	२ साका अना

नं. २०६ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त प.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	२ स अ अम अ	६ अ ५ अ.	७ ७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का शु भा. ६	२ भ अ	१ मि	२ सं अस.	२ आहा अना.	२ साका अना.

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। एवं सण्णिपंचिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जाणिऊण सकलालावा वत्तव्वा।

असण्णि-पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिए।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, अचक्षु और अवधि ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तक संबन्धी आलाप कहने पर— मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति,

नं. २०७ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	२ अस प. ,, अ	५प ५अ	९ ७	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस	४ व १ अनु औ २ का १	३	४	२ श्रुत अश्रु	१ अस	२ अच अच.	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ. अ	१ मि	१ अस.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९]।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २०८ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ अस प	५	९	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस	२ व. १ अनु औ. १	३	४	२ कुम. कुश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि.	१ अस	१ आहा	२ साका. अना.

नं. २०९ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ अस अ	५ अप.	७	४	१ ति	१ पंचे.	१ त्रस	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम. कुश्र	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का शु भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका. अना

संपहि पंचिंदियलद्धिअपज्जत्ताणं अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदि-तिरिक्खगदीओ त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१०]।

सण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व,

सं. २१० पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	२ स अ असं अ	६अ ५अ	७ ७	४	२ म. ति	१ पचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ न्हि	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ म अ.	२ १ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२११]।

असण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१२]।

अणिंदियाणं सिद्ध-भंगो।

एवं विंदियमग्गणा समत्ता।

संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिन्द्रिय जीवोंके आलाप सिद्धोंके आलापोंके समान समझना चाहिए।

इसप्रकार दूसरी इन्द्रिय मार्गणा समाप्त हुई।

नं. २११ संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ स अ	६ अ.	७	४	२ म ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ [illegible]	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का. शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

नं. २१२ असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	सं	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ अस. अ	५ अ.	७	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	२ औ मि कार्म	१ [illegible]	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस.	१ चक्षु. अच	द्र २ का शु. भा ३ अशु	२ म. अ.	१ मि.	१ अस	२ आहा. अना	२ साका. अना.

कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे[1] अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छव्वा, छव्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारह वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा, सोलस वा[2] चउवीस वा, अट्ठारह वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस[3] वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बायालीस[4] वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठतालीस वा, चउतीस वा एकपंचास वा, छत्तीस वा चउपंचास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तपंचास वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्वे जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति। तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्ति-अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा हवंति। चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छव्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अथवा थावर-

कायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, बावीस अथवा तेतीस, चौबीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्ठावीस अथवा बयालीस, तीस अथवा पैंतालीस, बत्तीस अथवा अड़तालीस, चौंतीस अथवा एकावन, छत्तीस अथवा चौपन, अड़तीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं। आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं; अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इसप्रकार तीन जीव स होते हैं। चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार जीवस कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके

१ प्रतिषु 'ओघालावे भण्णमाणे' इति पाठो नास्ति। २ प्रतिषु 'अट्ठावीस वा' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'चोवीस वा तेत्तीस वा' इति पाठव्युत्क्रमः। अत उपरि प्रतिषु 'चउतीस वा' इति पाठोऽधिकः। ४ प्रतिषु 'पुतालीस' इति पाठः।

काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीवसमासा। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया वियलिंदिया त्ति, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ठ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं बारस जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवंति। पंच णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्त-

होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीव होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरक[illegible] जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अ[illegible]क जीव दो प्र[illegible] होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञी

जीवसमासा पंच लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवंति । छ णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा छ णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोद्दस जीवसमासा हवंति । सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण

पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पांच निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पांच लब्ध्यपर्याप्तक जीव स इसप्रकार पन्द्रह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकरके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्का जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। तैजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्या और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसका जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार बारह जीवस होते हैं। छहों कायिक जीवोंकी अपेक्षा छ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, छ निर्वृत्यपर्याप्तक जी और छह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार अठारह जीवसमास होते हैं। एकेन्द्रिय जीव दो रके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार चौदह जीवसमास होते हैं। बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय इन सात प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा सात निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सात निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सात लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलकर इक्कीस जीवसमास होते हैं। पृथिवी-

एकवीस जीवसमासा हवंति। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवं सोलस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा अट्ठ, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठ, अट्ठण्हमपज्जत्तजीवसमासाणं मज्झे अट्ठ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा हवंति एवं चउवीस जीवसमासा। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदपडिट्ठिदा बादरणिगोदअपडिट्ठिदा चेदि, बादरणिगोदपडिट्ठिदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। तैजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार सोलह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, प्रत्येकव ति का , साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा आठ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, आठ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और आठ अपर्याप्तक जीवसमासोंमें आठ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। इसप्रकार सब मिलाकर चौबीस ज मास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। जलकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अग्निकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदप्रतिष्ठित और बादरनिगोदअप्रतिष्ठित। बादरनिगोदप्रतिष्ठित जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक।

बादरणिगोदपडिट्ठिदबादरित्त-पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारण-सरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा वियलिंदिया सयलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति। णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा[1] एदे सव्वे वि वेत्तूण सत्तावीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-अट्ठारस-जीवसमासाभंतरे साधारण वणप्फइपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवणप्फइकाइया दुविहा णिच्चणिगोदा चदुगदिणिगोदा चेदि। णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीवसमासा हवंति। दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवंति। पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फकाइया एदे सव्वे दुविहा

बादरनिगोदप्रतिष्ठितसे भिन्न अर्थात् बादरनिगोदअप्रतिष्ठितप्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और नौ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्तावीस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद। नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलाने पर बीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्यनिगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दश निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दश निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, कायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचों कायके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर

[1] प्रतिषु ' णवलद्धि समासा ' इति पाठो नास्ति।

बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चउव्विहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसासा एक्कारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति। बावीस-जीवसमासाणमब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छव्वीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीव-

और सूक्ष्म। ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इसप्रकार प्रत्येक एक एक कायके जीव चार चार प्रकारके हो जाते हैं। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये सब मिलाकर बावीस जीव-

हो जाते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीव-

और ग्यारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बावीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संज्ञी) और अमनस्क (असंज्ञी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक। अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलाने पर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसका[illegible] इन बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीव [illegible] स निकाल कर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंको मिला देने पर छब्बीस जीवसमास होते हैं। पांचो स्थावरकायिक जीवोंके बादर और

समासा तेरस लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे घेत्तूण एगूणचालीस जीवसमासा हवंति। छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति। चोद्दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बायालीस जीवसमासा। अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोयजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीव-

सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, असमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय इन तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं। छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास निकाल कर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं बादर और सूक्ष्म। ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये छह जीवसमास मिला देने पर अट्ठावीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और अमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चौदह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर व्यालीस जी मास होते हैं। पूर्वोक्त अट्ठावीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयो और बादरनिगोदअयोनिक। वे भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये चार भंग मिला देने पर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, असमनस्कपंचेन्द्रिय और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जी मास

समासा पण्णारस एवमेदे सव्वे वि पंचेदालीस जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणसरीरवणप्फइकाइया पत्तेयं पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवंति, पत्तेयसरीरा बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिय-सण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता अपज्जत्ता दुविहा हवंति एदे सव्वे मिलिदे बत्तीस जीवसमासा हवंति। सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्त-जीवसमासा च मेलिदे अट्ठतालीस जीवसमासा हवंति। बत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवंति। सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा

इसप्रकार ये सब मिलाकर पैंतालीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीरवनस्पतिकायिक ये पांच प्रकारके जीव पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार प्रकारके होते हैं। प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार ये सब मिलाने पर बत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक कायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सोलह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिला देने पर अड़तालीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित। वे दोनों पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। ये चार जीवसमास मिला देने पर चौतीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, और साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञिकपंचेन्द्रिय और संज्ञिकपंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सत्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर इकावन जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद-

सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्तभेएण दुविहा हवंति, पत्तेयवणप्फदि-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदिय-पज्जत्तापज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेयं दुविहा हवंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवंति। अट्ठारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्तिअपज्जत्त-जीवसमासा वि अट्ठारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारह सव्वेदे एगट्ठे कदे चउपण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेय-सरीरबादरणिगोद-पदिट्ठिदापदिट्ठिद[1]-पज्जत्तापज्जत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु पक्खि-त्तेसु अट्ठत्तीस जीवसमासा हवंति। एत्थ एगुणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवंति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया

साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकायिक ये छहों प्रकारके जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं। और वे प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार उक्त चौबीस और निम्न बारह ये सभी जीवसमास मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, नित्य-निगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्म भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अठारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्वृत्य-पर्याप्तक जीवसमास और अठारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करने पर चौपन जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरसंबन्धी बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलाने पर अड़तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधा-रणशरीरवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्म भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उ " निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। ये सब मिलाकर सत्तावन जीवसमास होते

[1] प्रतिषु ' पदिट्ठिद-पज्जत्ता— ' इति पाठ ।

चेव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवंति। एदे[1] जीवसमासभेया[2] सव्व-ओघेसु वत्तव्वा।

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगव-

हैं। ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओघालापोंमें कहना चाहिए।

जीवसमास आलापके आगे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण, एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण, सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण, तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

१ प्रतिषु 'चीए' इति पाठः।

२ सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे। इंदियपाये चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेदजुदे॥ पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे। छद्दुगपत्तेयम्हि य तस्स तियचदुरपणगभेदजुदे॥ सगजुगलम्हि तसस्स य पणभगजुदेसु होंति उणवीसा। एयादुणवीसोत्ति य इगिविगितिगुणिदे हवे ठाणा॥ सामण्णेण तिपत्ती पढमा भिण्णा अपुण्णगे इदरे। पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पत्ती॥ गो. जी. ७५-७८.

दुवजुत्ता वा[२१३]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारह वा बारह वा तेरह वा चउद्दस वा पण्णारह वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारह वा एगुणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबंधी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोग-स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१४	५७	प अ ६,६ ५,५ ४,४	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १	४ क्षीण.	४	५	६	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा ६ अले	२ भ अ.	१	२ स अस. अनु.	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु. उ.

सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एगो वा दो वा, दोण्णि[1] वा चत्तारि वा, तिण्णि वा छव्वा, चत्तारि वा अट्ठ वा, पंच वा दस वा, छव्वा बारस वा, सत्त वा चोद्दस वा, अट्ठ वा सोलस वा, णव वा अट्ठारह वा, दस वा बीस वा, एक्कारस वा बावीस वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोद्दस वा अट्ठावीस वा, पण्णारस वा तीस वा, सोलस वा बत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्ठारस वा छत्तीस वा, एगुणवीस वा अट्ठत्तीस वा जीवसमासा; छ अपज्जत्तीओ पंच

असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—उपर सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी हैं और अड़तीस अपर्याप्तसंबन्धी। यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही ग्रहण करना चाहिये। जिनका प्रकृतमें 'एक अथवा दो' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बाईस, बारह अथवा चौबीस, तेरह अथवा छब्बीस, चौदह अथवा अट्ठाईस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा बत्तीस, सत्रह अथवा चौंतीस, अठारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अड़तीस जीवसमास होते हैं। छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह

१ प्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठ।

नं. २१४ षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१९	६	१०	४	४	५	६	११	३	४	८	७	४	द्र ६	२	६	२	२	२
		५	९	८				म ४						भा ६	भ		स	आहा	साका
		४	७	६				व ४						अले	अ		अस.	अना	अना
			४	४				औ १									अनु.		पु. उ
				१				वै १											
								आ. २											

अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि सजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[२१]।

प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मण ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ – ऊपर जो सत्तावन जीवसमास कहे हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस हैं जिनका यहां पर 'एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि संख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्ववर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है। अपर्याप्तके निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद कर लेने पर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्याओंके द्वारा किया गया है। यहां पर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती संख्याएं जीवसमासोंको सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं। इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव संग्रहीत कर लिये गये हैं। भिन्न भिन्न संख्याएं केवल उनके भेद-प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई

नं २१५ षट्कायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ.
५ मि सा अ प्र	३८	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ २ २	४ संज्ञा	४	५	६	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	३ अपग	४ अकषा	६ विभ मन. विना	४ असं सामा छेदो यथा.	४	३ का ह शु.	२ भ अ	५ सम्य. विना	२ स. असं अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना यु. उ.

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाया त्ति मूलोघ-भंगो। णवरि मिच्छाइट्ठिस्स तिविहस्स वि कायाणुवाद-मूलोघब्भुत्तजीवसमासा वत्तव्वा। णत्थि अण्णत्थ विसेसो।

[२१६]पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-

हैं। पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये। गोम्मटसार जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां कर दी हैं। पहली पंक्तिमें एक, दो, आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है। दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अट्ठतीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है। तथा तीसरी पंक्तिमें तीन, छह आदि सत्तावनतक जीवस लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है।

न्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सिद्ध जीवों आ मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण

नं २१६ पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ.
१	४	४	४	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र ६	२	१	१	२	२
मि.	बा प	प	प		ति	पं	पृ	औ २	नपुं		कुम.	अस	अच	भा ३	भ	मि	अस.	आहा	साका
	,, अ	४	३					कार्म			कुश्रु.			अशु.	अ			अना	अना
	सू प.	अ.	अ																
	,, अ																		

लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदिय-जादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा[२१७]।

नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर-एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त, खर बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और खर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यग्गति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परंतु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करने पर चार

नं. २१७ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ बा प सू प ४	४	४	४	१ ति	१ पृ	१	१ औदा	१ ५	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र.६ भा ३ अशु.	२ भ. अ	१ मि.	२ अस.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इसप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनो प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्वृत्तिसे पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्वृत्यपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होता है। इनमेंसे निर्वृत्तिपर्याप्तककी अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्तनामकर्मका उदय तो रहता है परंतु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण वह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्वृत्यपर्याप्तक पर्याप्तनामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीरसेनस्वामीने यहां पर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम कल्पना गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकाके आधारसे दी गई है परंतु उसकी यहां पर मुख्यता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परंतु जल आदिके उसी टीकामें शुद्ध आदि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी बातको ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हों। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमास जान लेना चाहिये।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर-पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ बा. अ सू. अ	४ अ	३	४	१ ति	१ एके	१ पृ	२ औ.मि. कार्म	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि.	१ अस	२ आहा. अना.	२ साका. अना

नं २१९ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ बा. प ,, अ	४ प ४ अ.	४ ३	४	१ ति	१ एके	१ पृ	३ औ २ कार्म. १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ. अ.	१ मि.	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढवि-

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग

नं. २२० बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	सञ्ञि.	आ.	उ
१ मि	१ बा.प	४	४	४	१ ति	१ एके	१ पृ	१ औदा	१ नपुं.	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

नं. २२१ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	सञ्ञि	आ	उ
१ मि.	१ बा.अ	४ अ.	३	४	१ ति	१ [illegible]	१ पृ	२ औ मि कार्म.	१ [illegible]	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

काओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बादरपुढविलद्धिअपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो। सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो। णवरि सुहुमपुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो। णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ। तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण सुहुमआऊणं काउलेस्सा वा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा। कुदो? घणोदधि-घणवलयामासपदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो। धवल-किसण-णील-पीयल-रत्ताअंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? आयारभावे

और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्थानपर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिए।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्थानपर 'अप्कायिक' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए। उन्ही सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए। तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि, घनोदधिवात और घनवलयवात द्वारा आकाशसे गिरे हुए पानीका धवलवर्ण देखा जाता है। यहां पर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि, धवल, कृष्ण, नील, पीत, रक्त और आताम्र वर्णका पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही होता है, ऐसा कहना नही बनता है? परंतु उनका यह

मट्टियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणादो । आऊणं सहावविण्णो पुण धवलो चेव ।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव । णत्थि अण्णत्थ विसेसो । बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा । बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्ति-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढविकाइय-भंगो । सुहुमआउकाइयणिव्वत्ति-पज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो ।

तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्ता-पज्जत्ताणं च पज्जत्त-णामकम्मोदयतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादर-तेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं

कहना युक्ति-संगत नहीं है, क्योंकि, आधारके होने पर मट्टीके संयोगसे जल अनेक वर्णवाला हो जाता है ऐसा व्यवहार देखा जाता है। किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है। इसीप्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए। बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्का-यिक निर्वृत्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए।

तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदय-वाले तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदय-वाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक

१ प्रतिषु ' पज्जत्तापज्जत्तणामकम्मोदयाण ' इति पाठः ।

बादरआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो। णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ। तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ[1]। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तव्वं। बादरकाइयाणं तेउ-भंगो। एवं चेव तेसिं-पज्जत्ताणं। णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्व लेस्सा वत्तव्वा।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम-भंगो। वाउकाइयाणं तेउ-भंगो। णवरि दव्वेण काउ-सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ[2]। तेसिं पज्जत्ताणं काउ-गोमुत्त-

---

लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए।

विशेषार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बा ` ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परंतु पहले अप्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद-प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादर-जीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादर तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसीप्रकार बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय अर्थात् शुक्ललेश्या होती है। इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेश्या और बादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र

---

१ बादरआउतेऊ सुक्का तेऊ य ×××। गो. जी. ४९७.

२ तत्र घनोदधयो मुद्गसन्निभा, घनवाता गोमूत्रवर्णा, अव्यक्तवर्णास्तनुवाता। त. रा. वा. ३. १. ७ ××वायुकायाणं। गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य। गो. जी. ४९७ गोमुत्तमुग्गवाणावण्णाण वर्णगुणव-तगुण इवे। वादाण वलयतय वत्तस्स-तय-व लोगस्स ॥-त्रि. सा. १२३

मुग्गवण्णलेस्साओ। एवं बादरवाऊणं तेसिं पज्जत्ताणं च दव्वलेस्साओ हवंति। जदि वि मुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रूढिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो त्ति घेप्पदि। सुहुम-सुहुमतेउ-भंगो।

"वणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो

और मूंगके वर्ण की लेश्याएं होती हैं। इसीप्रकार बादर वायुकायिक सामान्य जीवोंके और उन्हीं बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लेश्याएं होती हैं। यद्यपि मूंग अनेक वर्ण की होती है, तो भी रूढिके वशसे 'श्यामलवर्ण' ही मूंगका वर्ण प्रकृतमें ग्रहण किया है। सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए।

तिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, और बारह जीवसमास होते हैं, जिनमें सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इसप्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास होते हैं। बादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, बादरनित्यनिगोद-तिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधार स्पतिकायिक-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-साधारण-वनस्पतिकायिक-पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्म चतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारण-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त, इसप्रकार साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके आठ जीवसमास होते हैं। चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, मति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

नं. २२२ वनस्पतिकायिक जीवोंके न्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	१२ साधा. ८ प्रत्ये. ४	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ ए.	१ पृ.	३ औ. २ का. १	१ न.	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना.	२ साका. अना.

अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें बताये गये बारह जीवसमासोंमेंसे पर्याप्तकसम्बन्धी छह जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें कहे गये बारह जीवसमासोंमेंसे छह अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति

नं. २२३ वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	भवि	आ.	उ.
१ मि	६ साधा ४ अपे २	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	६ भा ३ अशु.	२ भ अ	१ मि.	१ अस.	१ आहा	१ साका अना.

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४]।

पत्तेयसरीरवणप्फईणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५]।

और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २२४ वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	६ साधा. ४ प्रत्ये २	४ अ	३	४	१ ति.	१ ए.	२ व	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस.	१ अच	द्र २ का शु. भा. ३ अशु	२ भ. अ	१ मि	१ अस	२ आहा. अना.	२ साका अना

नं. २२५ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सं	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ प्र प. प्र अ	४ प. ४ अ	४ १०	४	१ ति	१ ए.	१ वन	३ औ.२ का १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र. ६ भा ३ अशु	२ भ अ.	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीर-वणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा[६]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फइकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबंधी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पति-काय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

नं. २२६ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ प	४	४	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ	१ औदा.	१ न	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र. ६ भा ३ अशु.	२ भ अ.	१ मि.	१ अस	१ आहा.	२ साका अना.

अणागारुवजुत्ता वा[२२७] ।

एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धिअपज्जत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणप्फइ-अपज्जत्ताण जहा तहा वत्तव्वो । जहा पत्तेयसरीराणं, तहा बादरणिगोदपडिट्ठिदाणं पि वत्तव्वं ।

साधारणवणप्फइकाइयाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार निर्वृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए। तथा, जिसप्रकार अभी प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसीप्रकारसे बादरनिगोद-प्रतिष्ठितवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गु न, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके बादर और सूक्ष्म ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण-वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन· द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक।

सं. २२७ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का.	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	१ प्र ज.	४ अ	३	४	१ ति	१ ए	१ पृ.	२ औ.मि कार्म.	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र २ का शु. भा १ अशु	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा अना	२ साका. अना

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया; मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३]।

मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २२८ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	८	४प ४अ	४ २	४	१ ति	१ एके	१ वन	३ औ २ का १	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	१ चक्षु	६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका. अना

नं २२९ रण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय.	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	४	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा.	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ अच.	६ भा ३ अशु.	२ भ. अ	१ मि	१ अस.	२ आहा	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-अपर्याप्त, बादर-चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त बादर नित्यनिगोद-अपर्याप्त बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

नं. २३० साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ.
१ मि.	४	४ अ	३	४	१ ति	१ ए	१ सा	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच.	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका. अना

णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३३१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३३२]।

छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर निलनिगोद-पर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २३१ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प	आ	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	४	४ प ४ अ.	४ ३	४	१ ति	१ एके	१ वन	३ औ २ कार्म १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ. अ.	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. २३२ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	आ	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा	१ नपु.	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ अस	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोद-वणप्फइकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु-दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा[3]।

एवं साधारणसरीरबादरवणप्फईणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लद्धि-अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो। सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुम-पुढवि-भंगो। णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाहारणसरीरवणप्फइकाओ त्ति वत्तव्वो। चउगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फइकाइय-भंगो। तेसिं बादराणं बादरसाधारणसरीर-

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद-अपर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए सभी सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए। चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणशरीर वन-

नं. २३३ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ मि	२	४ अ.	३	४	१ ति	१ पंचे	१ वन	२ औ मि कार्म.	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र २ का शु मा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

वणप्फइ-भंगो। तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फइकाइय-भंगो। णवरि चउगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं। एवं णिच्चणिगोदाणं पि, णवरि एत्थ णिच्चणिगोदो त्ति वत्तव्वं।

[२१७]तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण,

स्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। उन्हीं बादर चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप बादर साधारणशरीर वनस्पतिकायके आलापोंके समान होते हैं। सामान्य पर्याप्त अपर्याप्त भेदसहित उन्हीं सूक्ष्म चतुर्गति निगोद जीवोंके आलाप साधारणशरीर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि साधारण शरीरके साथमें 'चतुर्गति निगोद' इतना और कहना चाहिए। इसीप्रकार नित्यनिगोद साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर 'नित्यनिगोद' इस पदको कहना चाहिए।

त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहो

सं. २३४ त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो.	वे.	क	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१०	६ प. ६ अ ५ प ५ अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२,१	४ क्षीणस	४	४ द्वी. त्री चतु पचे	१ त्रस	१५ अयोग	३ स्त्री. पु. अपगा.	४	८	७	४	६ द्र. मा भा. अलेश्य.	२ भ. अ	६	१ स. अस अह	२ आहा अना	२ साका. अना. यु उ

दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदी, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो

लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीव , छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय अपर्याप्तकालसंबन्धी आर योगोंको छोड़कर शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनो वेद तथा अपगतवेद स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

नं. २३५ त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	५ द्वी प त्री प चतु.प स प अस.प.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६ ४ २	४ त्रस	४	४ द्वी त्री च. प	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ. १ अयोग	३ त्रय	४ सकषा	८	७	४	द्र ६ भा ६ अले	२ भ अ	६	२ स असं. अनु.	१ आहा	२ साका. अना यु. उ

अणाहारिणो, साभारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा साकार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ

है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ – त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है परंतु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है। इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसीप्रकार अनाहारक कहा है। वहां पर भी अनाहारक कहनेका ऊपर कहा हुआ कारण जान लेना। इसीप्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि

सं २३६ त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	सं	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा अ प स	५ द्वी अ. त्री ,, च ,, अ ,, स ,,	६अ ५ ,,	७ ७ ६ ५ ४ २	४ क्षीण संज्ञा	४	४ द्वी त्री च. प	१ त्रस.	४ औ मि. वै.मि आ.मि कार्म	३ अपग.	४ लोभ	६ विभं मन विना	४ अस सामा छेदो यथा.	४	३ का शु भा.६	२ भ अ	५ मि सा. औप क्षा. क्षायो	२ सं. असं अनु	१ आहा. अनो. अनु.	२ साका. अना यु. उ.

वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा।

[१२७] तसकाइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि

और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभय स्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— यहां पर विकल्पसे तीन अथवा चार योग बतलाये हैं इसका कारण यह है कि जन्मके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तपर्यंत औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्र ये दो योग होते हैं और विग्रहगतिमें कार्मणकाययोग होता है इसलिये ये तीनों योग अपर्याप्त अ में बन जाते है। परंतु आहारकमिश्रकाययोग आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्त अवस्थामें होता तो अवश्य है। फिर भी औदारिकशरीरकी अपेक्षा वहां पर्याप्तता भी है, इसलिये जब गुणस्थानमें होनेवाले आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्तताकी अविवक्षा कर दी जाती है तब तीन योग कहे जाते हैं, और जब उसकी विवक्षा कर ली जाती है तब अपर्याप्त अवस्थामें चार योग भी कहे जाते हैं।

त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पर्याप्त अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी-पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी-पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण

नं. २३७ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१० द्वी २ त्री २ चतु २ अस २ स २	६प ६अ ४प ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४	४	४	४ द्वी त्री च. प	१ त्र.	१३ आ द्वि विना.	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका. अना

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

[२४]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा,

और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण. चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवों तक क्रमसे दश प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, और छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. २३८ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	५ द्वी प ,, च ,, असं. ,, सं. ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी ,, च ,, प	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं.	१ आहा	२ साका. अना

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१]।

और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय संबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रिय-जातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वै[illegible]कमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं २३९ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	५ द्वी अ त्री. ,, चतु. ,, अस ,, प ,,	६अ ५अ	७ ७ ६ ५ ४	४	४	४ द्वी त्री. चतु पंचे	१ त्र	३ औ मि. वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु सा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका अना

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

अकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, चदुगदिमदीदो, अणिंदिओ, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसण, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[१२०]।

एवं तसकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

तसकाइय-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण,

त्रसकायिक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे लेकर अयो[illegible]वली जिन तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

अकायिक जीवोंके आलाप कहने पर—अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत प्राण, क्षीणसंज्ञा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम, असंयम और संयम[illegible]म इन तीनों विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, क्षा[illegible] सम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसीप्रकार त्रसकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय संबन्धी पांच अपर्याप्त जीव-स, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह ,

नं २४० अकायिक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	सन्नि	आ.	उ.
अतीत.	अतीत.	अतीत.	अतीत.	क्षीण.	अतीत.	अतीन्द्रिय.	अकाय.	अयोग.	अपग.	अकषा.	के.	अतीत.	के द.	अलेश्य.	अतीत भ. अ.	ज्ञा.	अतीत सन्नि. असन्नि.	अना.	२ साका. अना. यु. उ.

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

एव कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ-भंगो। णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगि-गुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिऊण मूलोघालावा वत्तव्वा ।

मणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्ज-त्तीओ, दस पाण । केई वचि-कायपाणे अवणेंति, तण्ण घडदे; तेसिं सत्ति-संभवादो ।

पांच प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

योगमार्गणाके अनुवादसे आलापोंका कथन मूल ओघ आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां पर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोगिगुणस्थान और अतीतगुणस्थान नहीं होता है सो आगमाविरोधसे जानकर मूल ओघालाप कहना चाहिए।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जी ास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण होते हैं। कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश प्राणोंमेंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका वैसा करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है,

नं. २४१ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	सन्नि	आ	उ
१ मि.	५ द्वी अ. त्री ,, चतु. ,, असं ,, सं	६ अ ५ अ	७ ६ ५ ४	४	२ ति म.	४ द्वी त्री. च पं	१ त्र	२ औ मि कार्म	१ ना	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	६ २ का शु. भा. ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका अना

वचि-कायबलणिमित्त-पुग्गल-खंधस्स अत्थित्तं पेक्खिअ पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचि-पज्जत्तीओ अत्थि । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१४]।

मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

इसलिये ये दो प्राण उनके बन जाते हैं। उसीप्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तियां भी उनके बन जाती हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनो विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपद् उपयुक्त भी होते हैं।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं. २४२ मनोयोगी जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय.	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	१ स प	६	१०	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस	४ मनो	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा ६	२ भ. अ	६	१ स अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५१]।

मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, (तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५१]।

मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिश्रादृष्टि गुणस्थान,

नं २४३ मनोयोगी मिश्रादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	४	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	१	१	२
मि.	स	प				पचे	त्रस	मनो			अज्ञा	असं	चक्षु. अच	भा ६	म अ	मि.	स	आहा.	साका अना

नं २४४ मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	४	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सासा	स	प				पंचे	त्रस	मनो.			अज्ञा	असं	चक्षु अच	भा ६	म	सासा	स	आहा	साका अना

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,[1]) तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"मणजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-

[1] कोष्ठकान्तर्गतपाठ प्रतिषु नास्ति।

नं. २४५ मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ सम्य	१ स प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र.	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २४६ मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका. अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७] ।

मणजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

पयोगी होते हैं।

मनोयोगी सयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशो प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

नं २४७ मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	४	३	४	३	१	३	६	१	३	१	१	२
संय	स	प			ति	पंचे	त्रस	मनो			मति	देश	के द	द्र ६	भ.	औप	स	आहा	साका.
तासं	पर्या	र्याप्त			मनु						श्रुत		विना	भा ३		क्षा			अना.
यत											अव			शु		क्षायो			

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५]।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो मणजोगा वत्तव्वा। सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही हैं, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलीके सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसीप्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

नं. २४८ मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	१ स.प	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस	४ मनो	३	४	४ मति. श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के. द विना	६ द्र ३ भा शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना

कसाय अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९]।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणसण्णाओ त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं।

वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, मण-सरीर-पज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर-मणबलपाणा उच्चंति। ताओ वि उप्पण्णसमयदो जाव जीविदचरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्संति। जेण मण-वचि-कायजोगा पाणेसु ण गहिदा

चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मृषामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक मृषामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसीप्रकार सत्यमृषामनोयोगियोंके भी आलाप कहना चाहिए।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जं मास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण होते हैं। मनःपर्याप्ति और शरीरपर्याप्तिसे उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं। वे शक्तियां भी उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं। और जिसकारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं ग्रहण किये गये हैं, इसलिये, वचनयोगियोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्थात् युक्त अवस्थाके होने पर भी दशों

नं २४९ मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१२ सयो अयो विना	१ स.प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	१ मृषा	३ स्त्री पु. नपुं.	४ क्रोध मान माया लोभ	७ के ज्ञा विना	७	३ के.द. विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

तेण वचिजोग-णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२५०]।

वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों , सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीव स्थान; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य

नं. २५० वचनयोगी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ अयो विना	५ द्वी प त्री प चतु प असं प. सं प	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४ सज्ञा	४	४ द्वी त्री च. प	१ त्रस	४ वच	३ अपग.	४ लोक.	८	७	४	६ ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस. अनु.	१ आहा	२ साका. अना. यु. उ.

भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ तं अवणेऊण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो। मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

और से छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए। सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यमृषावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं। सत्यवचनयोगके आ सत्यमनोयोगके आलापोंके न होते हैं। विशेष यह है कि आलाप कहते समय जहां पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहां उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए। मृषावचनयोगके आलाप भी मृषामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि मृ योगके स्थान पर मृषावचनयोग कहना चाहिए। इसीप्रकारसे सत्यमृ योगके भी आलाप कहना चाहिये, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यमृषामनोयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोग-न्यके आलापोंके न होते हैं। विशेषता यह है कि असत्यमृषावचनयोग आलाप कहते एक असत्यमृषावचनयोग ही कहना चाहिए।

नं. २५१ वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	५ पं	६	१०	४	४	४	१	४	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	२	१	२
मि	त्री ,,	५	९			द्वी	त्रस	वच			अज्ञा	असं	चक्षु	भा ६	भ	मि	स	आहा	साका
	च ,,		८			त्री							अच		अ		असं.		अना.
	असं. ,,		७			च													
	सं ,,		६			पं.													

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[११]।

काययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञायें तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारो गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

सं. २५२ काययोगी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१३ अयो विना	१४	६प ६अ ५प ५अ. ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२	४ संज्ञा	४	५	६	७ काय	३ त्रिवेद	४ अकषा.	८	७	४	द ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं अस अनु	२ आहा अना	२ साका. अना यु उ

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम,चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चेव वा, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२] ।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तसबन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पाच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिक-काययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग, तीनों वेद तथा अप-गतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहो लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, सज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है. आहारक, अनाहारक अथवा आहारक ही होते हैं, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार-अनाकार उप योगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियिकमिश्रके विना छह अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवे और तेरहवें गुणस्थानमें आहारकसमुद्घात और केवलिसमुद्घातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार कर

नं. २५३ काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१३ अयो विना	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४	सज्ञिस	४	८	६	६ वै मि विना अथ २	३ अपग	४ अकषा	८	७	४	द्र ६ सा ६	२ भ अ	६	२ स. अस. अनु	२ आहा अना अथ २ आहा	२ साका अना यु उ

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि संजम,

ली जाती है तब उसकी अपेक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अपर्याप्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और वैक्रियिक ये तीन योग ही बनते हैं। इसीप्रकार आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप बतलाये हैं अनन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परंतु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेने पर अनाहारक आलाप काययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें नहीं बनता है। इसका यह तात्पर्य हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग कहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप कहना चाहिए और जब केवल तीन योग ही कहे जावें तब एक आहारक आलाप ही कहना चाहिए। सातों संयमोंके संबन्धमें भी यही विवक्षा भेद जान लेना चाहिये।

उन्हीं काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीण संज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके बिना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

१ प्रतिषु ' चत्तारि ' इति पाठः ।

सं २५४ काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
५ मि सा अ प्र. स	७ अपर्या.	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	संज्ञिपंचे.	४	५	६	औ मि. वै मि आ मि कार्म	३ अवेदा.	४ लोकक्षा.	६ विभ मन विना	४ असं सामा छेदो यथा.	४	द्र २ का शु भा. ६	२ भ अ	५ सम्य. विना.	२ स. असं अहं	२ आहा. अना.	२ साका. अना यु. उ.

चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा।

कायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, पंच कायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०५]।

यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. २५५ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१४	६ प	१०,७	४	४	५	६	५	३	४	३	१	२	६	२	१	१	२	२
मि		६ अ	९,७					औ ७			अज्ञा	अस	चक्षु.	भा ६	भ.	मि	स.	आहा	साका.
		५ प.	८,६					वै. २					अच		अ.		अस	अना.	अना.
		५ अ	७,५					का १											यु उ
		४ प	६,४																
		४ अ	४,३																

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, अ , आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहो लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत,

नं. २५६ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४.	४	४	५	६	२ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	६ ६ भा ६	२ भ अ	१ मि.	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५७]।

कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५८]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक द्विक गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास; छहो पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं २५७ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	७ अपर्या	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि. वै.मि कार्म	३	४	२ द्रुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ. अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. २५८ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	म	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मा	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	५ औ.२ वै. २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५९]।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिक-काययोग वे दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

नं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ
१ सा.	१ स.प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	२ औ १ वै १	३	४	३ कुम कुश्रु विभ	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सा	१ सं.	१ आहा.	२ साका अना.

नं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
२ मा	१ स अ	६ अ.	७	४	३ ति म दे.	१ पंचे	१ त्रस	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	२ द्र का शु मा ६	१ भ	१ सा	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५७]।

कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५८]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक ही गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं २५७ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	७ अपर्या	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि. वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका अना

नं. २५८ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

ग	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	५ औ.२ वै. २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०९]।

[२१०]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिक-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

नं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा	१ स.प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	२ औ. १ वै १	३	४	३ कुम कुश्रु विभ	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सं	१ स	१ आहा.	२ साका अना.

नं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा	१ स अ	६ अ	७	४	३ ति म दे.	१ पंचे	१ त्रस	३ औ मि वै मि कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ सं	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

कायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ,

वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाए, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति,

नं २६१ काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	२	३	४	३	१	२	६	१	१	१	१	१
मि	सं प							औ १ वै १			ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	असं	चक्षु अच	भा ६	भ	सम्य	स	आहा	साका अना

पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं

त्रसकाय, ओदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्र-काययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके

नं २६२ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि र त	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	५ औ २ वै २ का १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	२ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका. अना

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[६४]।

कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण,

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारो कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	म	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	४	१	१	३	२	४	३	१	३	६	१	३	१	२	२
अ.	सं. अ.	अ				पं.	त्र.	औ मि पु. वै मि न कार्म			मति श्रुत अव	असं	च अ द विना	का शु मा ६	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा अना	साका अना

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि[1] णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कायोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' तिण्णि ' इति पाठ ।

नं २६५ काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सं	१ स प	६	१०	४	२ ति म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ देश	३ के द. विना	द्र ६ भा ३ शु	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

नं २६६ काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ प्र.	२ स प स अ	६ प ६ अ.	१० ७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	३ औ १ आहा २	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि.	३ के द. विना	द्र ६ भा ३ शु	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण,

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं अ.	६ अ	७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	३ औ मि वै मि कार्म	२ पु. न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं.	३ के द विना	३ द्र का शु. भा. ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि[१] णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११६] ।

तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' तिण्णि ' इति पाठ ।

नं २६५ काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	१
सं	प				ति	पंचे	त्रस	औ			मति	देश	के द	भा ३	भ	औप	स	आहा	साका.
ला	प				म						श्रुत		विना	शुभ		क्षा			अना.
											अव.					क्षायो			

न २६६ काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ.	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	३	३	४	४	३	३	द्र ६	१	३	१	१	२
सं	स	प	७		म	पं	त्रस	औ १			केव	सामा	के द.	भा ३	म.	औप	स	आहा	साका
ला	स	अ						आहा २			विना	छेदो	विना	शुभ		क्षा			अना
		६										परि				क्षायो			
		अ																	

कायजोगि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६७]।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव कायजोगीणं मूलोघ-भंगो। णवरि ओरालियकायजोगो चेव सव्वत्थ वत्तव्वो।

कायजोगि-केवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगो इदि तिण्णि जोग, अवगदवेदो,

काययोगी अ संयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक सही-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशो प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि काययोग आलाप कहते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए।

काययोगी केवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुद्घातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, चार और केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण, क्षीण स्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाय-

नं २६७ काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र.	१ स प	६	१०	३ आहा. विना	१ म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[८]।

ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

योग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार और चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

नं. २६८ कायोगी केवली जिनके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सयो	१ प २ प अ.	६	४ २	० क्षीण	१ म	१ पंचे	१ त्र.	३ औ. २ कार्म	० अपग	० अकषा	१ के	१ यथा.	१ के.द.	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु.	२ आहा अना	२ साका. अना. यु. उ.

होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[८९]।

ओरालियकायजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९०]।

आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं २६९ औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	सय.	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ.
१३ अयो. विना.	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ क्षीणस	२ ति म	५	६	१ औ	३ क्लीव	४ अकषा	८	७	४	द्र.६ भा ६	२ भ. अ	६	२ स अस अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ

नं २७० औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	२ ति म	५	६	१ औ	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा	२ साका अना

ओरालियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, त ओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा[२७१]।

[२७२]ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद,

नं. २७१ औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग.	इ	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा.	१ स. प.	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र.	१ औ.	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

नं. २७२ औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	१ स प	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं	१ त्र	१ औ	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा.	२ साका अना.

अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

ओरालियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, त ओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७३]।

संजदासंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव कायजोगि-भंगो। णवरि सव्वत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। सजोगिकेवली च पज्जत्ता आहारि त्ति भणिदव्वा।

चारों , तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और से छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारि ययोगी असंयत ग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञि , आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिके गुणस्थान तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए। और सयोगिकेवलीके जीवसमास कहते य पर्या जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहारक, कहना चाहिए।

सं. २७३ औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जी आ .

गु.	जी.	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ अविरतसम्यग्दृष्टि	१ स. प	६	१०	४	२ ति मनु	१ पंचेन्द्रिय	१ त्रस	१ औ.	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ असं.	३ के. द. विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो त्ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होदव्वं? ण, दव्वमणस्स अत्थित्तं भावगद-पुव्वगदं च अस्सिऊण तस्स सण्णित्तब्भुवगमादो। पुढवी-आउ-तेउ-वाउ-पत्तेय-साहारणसरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोद्दस-जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगि-सत्तब्भुवगमादो वा। एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो। छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण. चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, विभंग-मणपज्जवणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम. चत्तारि दंसण. दव्वेण काउलेस्सा। किं कारणं? मिच्छाइट्ठि-सासण-असंजद-

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं।

शंका—जब कि सयोगिकेवली जिनेन्द्र संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों ही व्यपदेशोंसे रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अर्थात जीवसमासवाला होना चाहिए?

समाधान—नहीं; क्योंकि द्रव्यमनके अस्तित्व और भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संज्ञीपना माना गया है। अथवा, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, साधारणशरीरवनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तसंबन्धी चौदह जीवसमासोंमेंसे सात अपर्याप्त जीवसमासोंमें कपाट प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत सयोगिकेवलीका सत्त्व माना जानेसे उन्हें अर्थात जीवसमासवाला नहीं कहा जा सकता है। यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां. सात प्राण. सात प्राण. छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुद्घातके कालमें दो प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधि और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोतलेश्या होती है।

शंका—द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होनेका क्या कारण है?

सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टंताण सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि; छव्वण्णोरालियपरमाणूणं धवल-विस्ससोपचय सहिद-छव्वण्णकम्मपरमाणूहि सह मिलिदाणं कावोदवण्णुप्पत्तीदो। कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स वि सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। सजोगिकेवलिस्स पुव्विल्ल-सरीरं छव्वण्णं जदि वि हवदि तो वि तण्ण घेप्पदि; कवाडगद-केवलिस्स अपज्जत्तजोगे वट्टमाणस्स पुव्विल्ल-सरीरेण सह संबंधाभावादो। अहवा पुव्विल्ल-छव्वण्ण-सरीरमस्सिऊण उवयारेण दव्वदो सजोगिकेवलिस्स छ लेस्साओ हवंति।। भावेण छ लेस्साओ। किं कारणं? मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं किण्ह-णील-काउलेस्सा चेव हवंति, कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स सुक्कलेस्सा चेव भवदि, किंतु देव-णेरइयसम्माइट्ठीणं मणुसगदीए उप्पण्णाणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं अविणट्ठ-पुव्विल्ल-भावलेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त-

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, धवलविस्रसोपचय सहित छहों वर्णोंके कर्म-परमाणुओंके साथ मिले हुए छहों वर्णवाले औदारिकशरीरके परमाणुओंके कापोत वर्णकी उत्पत्ति बन जाती है, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होती है।

कपाटसमुद्घातगत सयोगिकेवलीके शरीरकी भी कापोतलेश्या ही होती है। यहां पर भी पूर्वके समान ही कारण कहना चाहिए। यद्यपि सयोगिकेवलीके पहलेका शरीर छहों वर्णोंवाला होता है, तथापि वह यहां नहीं ग्रहण किया गया है, क्योंकि अपर्याप्तयोगमें वर्तमान कपाटसमुद्घात-गत सयोगिकेवलीका पहलेके शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं रहता है। अथवा, पहलेके षड्वर्णवाले शरीरका आश्रय लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा सयोगिकेवलीके छहों लेश्याएं होती हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंके भावसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका—औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं होनेका क्या कारण है?

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं ही होती हैं। और कपाटसमुद्घातगत औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्ललेश्या ही होती है। किन्तु जो देव और नारकी मनुष्यगतिमें उत्पन्न हुए हैं, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान हैं और जिनकी पूर्वभवसम्बन्धी भावलेश्याएं अभीतक नष्ट नहीं हुई हैं, ऐसे जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं पाई जाती हैं, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके छहों लेश्याएं कही गई हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्व और सम्य-

सम्मामिच्छत्तेहि विणा चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२७४]।

[२७५]ओरालियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा,

मिथ्यात्वके । शेष चार सम्यक्त्व, सञ्ज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां: सात प्राण, प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य.

नं २७४ औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ.
१ मि	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ संज्ञि	२ ति म.	५	६	१ औ मि.	३ अपग.	४ अकषा	६ विभ मन विना	२ अस यथा.	४	द्र १ का मा.६	२ भ अ	४ मि. सा क्षा क्षायो	२ स. अस अनु	१ आहा.	२ साका. अना

नं. २७५ औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ.	स.	सन्नि	आ.	उ.
१ मि	७ अप	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	२ ति म.	५	६	१ औ मि.	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र. १ का मा ३ अछ	२ भ. अ	१ मि	२ स अस.	१ आहा.	२ साका अना.

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२] ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, जहा देव-मिच्छाइट्ठि-

सिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहो अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या और भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। यहां पर भावसे छहों लेश्या-

नं. २७६ औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स अ	६ अ	७	४	२ ति. म.	१ पंचे	१ त्रस	१ औ.मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु. अच	६ १ का ३ शु अशु	१ म	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

सासणसम्मादिट्ठिणो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सासु वट्टमाणा णट्ठ-लेस्सा होऊण तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण्ण-पढम-समए चेव किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइट्ठिणो तहा ण परिणमंति, अतोमुहुत्तं पुव्विल्ल-लेस्साहि सह अच्छिय अण्णलेस्सं गच्छंति। किं कारणं ? सम्माइट्ठीणं बुद्धि-ट्ठिय-परमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीणं मरणकाले संकिलेसाभावादो। णेरइय-सम्माइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति।

ओंके होनेका कारण यह है कि जिसप्रकार तेज पद्म और शुक्ल लेश्याओंमें, वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या होकरके अर्थात् अपनी अपनी पूर्व शुभ लेश्याओंको छोड़कर (तिर्यंच और मनुष्योंमें) उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही कृष्ण, नील और कापोत लेश्यारूपसे परिणत हो जाते हैं, उसप्रकारसे सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्यारूपसे नहीं परिणत होते हैं. किन्तु तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथमसमयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्ततक पूर्व भवकी लेश्याओंके साथ रह कर पीछे अन्य लेश्याओंको प्राप्त होते हैं, अतएव यहांपर छहों लेश्याएं बन जाती हैं।

शंका--तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दृष्टि देव अन्तर्मुहूर्ततक अपनी पहली लेश्याओंको नहीं छोड़ते हैं, इसका क्या कारण है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि बुद्धिमें स्थित है परमेष्ठी जिनके अर्थात् परमेष्ठीके स्वरूप चिन्तवनमें जिनकी बुद्धि लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके मरणकालमें मिथ्यादृष्टि देवोंके समान संक्लेश नहीं पाया जाता है, इसलिये अपर्याप्तकालमें उनकी पहलेकी शुभ-लेश्याएं ज्योंकी त्यों बनी रहती हैं।

विशेषार्थ—'सम्माइट्ठीण बुद्धि-ट्ठिय परमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीणं मरणकाले संकिलेसाभावादो' इस वाक्यके दो अर्थ संभव हैं। एक तो यह कि मरणके समय मिथ्यादृष्टियोंको जिसप्रकार संक्लेश होता है उसप्रकार जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित हैं ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंको मरणके समय संक्लेश नहीं होता है। तथा दूसरा अर्थ इसप्रकारसे होता है कि सम्यग्दृष्टि देवोंके और जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित हैं ऐसे मिथ्यादृष्टि देवोंके मरणके समय संक्लेश नहीं पाया जाता है। प्रथम अर्थ करते समय 'मिच्छाइट्ठीणं' पदके आगे 'इव' पदकी अपेक्षा है और दूसरा अर्थ करते समय 'च' पदकी। परंतु 'मिच्छाइट्ठीणं' इस पदके आगे इन दोनों पदोंमेंसे कोई भी पद नहीं पाया जाता है और प्रकरणको देखते हुए पहला अर्थ संगत प्रतीत होता है, इसलिये ऊपर अर्थमें पहले अर्थका ही ग्रहण किया है।

किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी चिरंतन लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं।

कारणं, जादिविसेसेण संकिलेसाहियादो। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, आयु-कालबलपाणा दो चेव होंति, पंचिंदियपाणा णत्थि; खीणावरणे खओवसमाभावादो खओवसम लक्खण-भाविंदियाभावादो। ण च दव्विंदिएण इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्त-पदुप्पायण-संतसुत्त-दंसणादो। मण-वचि-उस्सासपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सासपज्जत्ती सण्णिद-पोग्गलखंध-

शंका— नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लेश्याओंको क्यों नहीं छोड़ते हैं?

समाधान— इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके [illegible] शेषसे ही अर्थात् स्वभावत संक्लेशकी अधिकता होती है, इसकारण मरणकालमें भी वे उन्हें नहीं छोड़ सकते हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अ[illegible]मि[illegible]क्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, [illegible]रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक [illegible] मास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और [illegible] बल ये दो होते हैं। किन्तु [illegible] इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिके [illegible]में आवरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया [illegible] है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्षण भावेन्द्रियां भी नहीं पाई [illegible]ी हैं। तथा इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं, क्योंकि, अपर्या[illegible]लमें [illegible]ी इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्वका प्रतिपादन करनेवाला [illegible] सूत्र देखा जाता है। मनोबलप्राण, [illegible]बलप्राण, और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमि[illegible]श्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं, क्योंकि, मनः पर्याप्ति, [illegible] पर्याप्ति और आनापान पर्याप्ति संज्ञिक पौद्गलिक स्कन्धोंसे निर्मित

[1] स. सू. ३७, ६१, ७६.

नं. २७७ औदारिकमिश्रकाययोगी अ[illegible]ष्टि जीवोंके

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	१	४	३	१	३	द्र १	१	२	१	१	२
अघि	स अ.	अ			ति. म	पंचे	त्र	औ मि.	पुं		मति. श्रुत अव.	अस	के द विना	का भा ६	भ	क्षा क्षायो	स	आहा	साका. अना

णिव्वत्तिद-सपाणसण्णा-संजुत्तसत्तीणं कवाडगद-केवलिम्हि अभावादो। अहवा तेसिं कारणभूद-पज्जत्तीओ अत्थि त्ति पुणो उवरिम-छट्ठसमयप्पहुडि वचि-उस्सासपाणाणं समणा भवदि चत्तारि वि पाणा हवंति। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

स्वप्राण संज्ञाओंसे अर्थात् मन, वचन और श्वासोच्छ्वास प्राणोंसे संयुक्त शक्तियोंका कपाट समुद्घात-गत केवलीमें अभाव पाया जाता है। अथवा, समुद्घातगत-केवलीके वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणोंकी कारणभूत वचन और आनापान पर्याप्तियां पाई जाती हैं, इसलिये लोकपूरणसमुद्घातके अनन्तर होनेवाले प्रतरसमुद्घातके पश्चात् उपरिम छठे समयसे लेकर आगे वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणोंका सद्भाव हो जाता है, इसलिये सयोगिकेवलीके आहारमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ—समुद्घातगत केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें आयु और काय ये दो प्राण होते हैं शेष आठ प्राण नहीं होते हैं। उनमेंसे पांचों इन्द्रिय प्राण तो इसलिये नहीं होते हैं कि उनके ज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है। कदाचित् यह कहा जा सकता है कि केवलीके पांचों द्रव्येन्द्रियां पाई जाती हैं इसलिये द्रव्येन्द्रियोंकी अपेक्षा उनके पांच प्राण मान लेना चाहिये। परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका उपचारसे ही ग्रहण किया है, मुख्यतासे नहीं। यदि इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका मुख्यतासे ग्रहण करना स्वीकार किया जावे तो अपर्याप्तकालमें पांच इन्द्रिय प्राणोंका सद्भाव नहीं बन सकता है। परंतु अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रियप्राण होते हैं ऐसा आगमवचन है, इसलिये यह सिद्ध हुआ कि इन्द्रिय प्राणोंमें मुख्यतासे पांच भावेन्द्रियोंका ही ग्रहण किया गया है और वे भावेन्द्रियां केवलीके होती नहीं हैं, इसलिये उनके पांचों इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं। उसीप्रकार केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये तीन प्राण भी नहीं होते हैं, क्योंकि, इन तीनों प्राणोंकी कारणभूत मन, वचन और आनापान ये तीन पर्याप्तियां हैं। परंतु अपर्याप्त अवस्थामें ये तीनों पर्याप्तियां होती नहीं हैं, इसलिये पर्याप्तियोंके अभावमें उनके उक्त तीनों प्राण भी नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार इन आठ प्राणोंके अतिरिक्त केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें शेष दो प्राण पाये जाते हैं। अथवा, केवलीके विद्यमान शरीरकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्राणोंकी कारणभूत पर्याप्तियां रहती ही हैं, इसलिये छठे समयसे वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये दो प्राण और माने जा सकते हैं। इसप्रकार पूर्वोक्त दोनों प्राणोंमें इन दोनों प्राणोंके मिला देने पर केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी कहे जा सकते हैं। मनःपर्याप्तिके रहने पर भी केवलीके मनःप्राण नहीं माना है, इसका कारण यह है कि मनःप्राणमें भावमन और मनःपर्याप्ति ये दोनों कारण हैं, इसलिये इनमेंसे जहां केवल एक कारण होता है वहां मनःप्राण नहीं कहा गया है। केवलीके भावमन नहीं पाया जाता है, इसलिये मनःपर्याप्तिके रहने पर भी मनःप्राण नहीं कहा गया है और शेष संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त अवस्थामें भावमनका अस्तित्व होते हुए भी मनःपर्याप्ति

ओरालियमिस्सयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमो, केवलदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा, मूलसरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किण्ण उच्चंति त्ति भणिदे ण, चोद्दस-रज्जु-आयामेण सत्त-रज्जु-वित्थारेण एक-रज्जुमादिं कादूण वड्ढिद-वित्थारेण वारिद-जीव पदेसाणं पुव्वसरीरेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबंधाभावादो। भावे वा जीवपदेस-परिमाणं सरीरं होज्ज। ण च एवं, वंधहरस्स[1] सरीरस्स तेत्तियमेत्तद्धाण-पसरण-सत्ति-अभावादो, ओरालियमिस्सकायजोगण्णहाणुववत्तीदो वा। ण चिराण-सरीरेण कवाडगद-केवलिस्स संबंधो अत्थि। भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव

नहीं पाई जाती है, इसलिये मनःप्राण नहीं माना गया है।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारि ^ श्रकाययोग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, और द्रव्यसे कापोत लेश्या होती है।

शंका—सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी तो छहों लेश्याएं होती हैं, फिर उन्हे यहां क्यों नहीं कहते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटसमुद्धातके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारसे व्याप्त जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ सबन्ध नहीं हो सकता है। यदि संबन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही औदारिक शरीरको होना पड़ेगा। किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि, विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले ^रके पूर्वोक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है। अथवा, यदि मूलशरीरके कपाटसमुद्धात प्रमाण प्रसरणशक्ति मानी जाय तो फिर उनकी औदारिकमिश्रकाययोगता नहीं बन सकती है। तथा कपाटसमुद्धातगत केवलीका पुराने मूलशरीरके साथ संबन्ध है नहीं, अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी छहों लेश्याएं होनेपर भी कपाटसमुद्धातके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है। किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग होनेके कारण एक कापोतलेश्या ही कही गई है।

विशेषार्थ—पूर्वाभिमुख केवलीके समुद्धात करने पर कपाटसमुद्धातमें जीवके प्रदेश ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और उत्तर दक्षिण सात राजु फैल जाते हैं। तथा उत्तराभिमुख केवलीके कपाटसमुद्धातके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और पूर्व पश्चिम एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारके अनुसार फैल जाते हैं, परंतु मूलशरीर संख्यात अंगुलकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरकी लेश्या औदारिकमिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है। किन्तु उस समय जो नोकर्मवर्गणाएं आती हैं उन्हींकी लेश्या ली जायगी। अतः केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें द्रव्यसे कापोतलेश्या कही है।

[1] प्रतिषु ' ए वधहरस्स ' इति पाठ ।

सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो,सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[७८]।

वेउव्वियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसक्काओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७९]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २७८ औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सयो	१ अप	६ अ	२ सवा ४	०	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	१ औ.मि	०	० अकषा	१ केव	१ यथा.	१ के द.	द १ का. भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु	१ आहा	२ साका. अना.

नं. २७९ वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
४ मि सा सम्य अवि	१ सं प	६	१०	४	२ ना दे	१ पंचे	१ त्रस	१ वै	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द ६ भा ६	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका. अना

वेउव्वियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ॥

*वेउव्वियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों

नं. २८० वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	१	१	२
मि	स.प.				न दे	पंचे.	त्रस	वै			अज्ञा	अस	चक्षु. अच	भा ६	भ. अ.	मि	स	आहा	साका. अना.

नं. २८१ वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सा.	स.प				न दे	पंचे	त्रस	वै			अज्ञा	अस	चक्षु अच	भा ६	भ	सा	स	आहा.	साका अना.

तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

वेउव्वियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो,

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं

वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं २८२ वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ.	स.	सं.	आ	उ.
१ सम्य	१ सं पर्या	६	१०	४	२ न दे	१ पंचे	१ त्रस	१ वै	३	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा	२ साका अना.

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८३]।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८४]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और आनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८३ वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि.	१ स. प.	६	१०	४	२ न. दे	१ पं	१ त्रस	१ वै	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस.	३ के द. विना	द्र ६ भा. ६	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. २८४ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा. अवि	१ स अ ज.	६	७	४	२ न दे	१ प	१ त्रस	१ वै मि	३	४	५ कुम कुश्रु मति. श्रुत अव.	१ अस	३ के द विना	द्र १ का भा ६	२ भ अ	५ मि सासा औ क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८] ।

"[१]वेउव्वियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी,

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत-लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति,

१ ग सासणो णारयापुण्णे । गो जी १२८.

नं २८५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ स अ	६ अ	७	४	२ न दे	१ प.	१ त्रस	१ वै मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	६ चक्षु अच	द्र १ का मा ६	२ म अ	१ मि.	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स अ	६ अ	७	४	१ दे.	१ प	१ त्रस	१ वै मि	२ स्त्री पु	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र १ का मा ६	१ म	१ सा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, पुरिस-णवुंसयवेदा त्ति दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८७]।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जी स, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे जघन्य कापोत लेश्या और तेज, पद्म तथा शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८७ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	२	४	३	१	३	१	१	१	१	१	२
मि	स	अ	अ		न	पचे		वै मि	पु.	न	मति	अस	के द	द्र का	भ.	औप	स	आहा	साका.
सा					दे						श्रुत		विना	भा ४		क्षा.			अना.
अवि											अव			का ते		क्षायो			
														प शु					

आहारकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारकायजोगो, पुरिसवेदो, इत्थि-णउंसयवेदा णत्थि। किं कारणं? अप्पसत्थवेदेहि सहाहारिद्धी ण उप्पज्जदि त्ति। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, मणपज्जवणाणं णत्थि। कारणं, आहार-मणपज्जवणाणाणं सहाणवट्ठाणलक्खणविरोहादो। दो संजम, परिहारसुद्धिसंजमो णत्थि; एदेण वि सह आहारसरीरस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, उवसमसम्मत्तं णत्थि; एदेण वि सह विरोधादो[1]। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८८]।

आहारककाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारककाययोग, एक पुरुषवेद होता है तथा स्त्री और नपुंसकवेद नहीं होते हैं।

शंका—आहारककाययोगी जीवोंके स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके नहीं होनेका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि, अप्रशस्त वेदोंके साथ आहारकऋद्धि नहीं उत्पन्न होती है।

वेद आलापके आगे चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका यह कारण है कि आहारकऋद्धि और मन पर्ययज्ञानका सहानवस्थानलक्षण विरोध है अर्थात् ये दोनों एक साथ एक जीवमें नहीं रहते हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं परंतु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, क्योंकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीनों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं, परंतु उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, क्योंकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

[1] मणपज्जवपरिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा। एदेसु एक्कपगदे णत्थि त्ति असेसयं जाणे॥ गो. जी. ७२८

नं २८८ आहारककाययोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सं.	द.	ले	भ	स.	सं.	आ	उ
१ प्रम	१ सं.	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस.	१ आहा.	१ पु	४	३ मति. श्रुत अव.	२ सामा छेदो.	२ के द विना	२ द्र १ शु भा २ शुभ.	१ भ.	२ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

आहारमिस्सकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजमा, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

कम्मइयकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सजोगिकेवलिं पडुच्च दो पाण, सेसाणं सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण; चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर एकेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं तथा शेष जीवोंके क्रमशः सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी

१ प्रतिषु ' काउ सुक्कलेस्सा ' इति पाठ ।

नं. २८९ आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ.	उ
१ प्र.	१ स.अ	६ अ.	७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	१ आ मि	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द. विना	द्र १ का. भा ३ शुभ	१ भ.	२ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-पुव्वसरीरं पेक्खिऊणुवयारेण दव्वेण छ लेस्साओ हवंति। भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो। कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति भणिदे ण उच्चदि; आहारस्स तिण्णि-समय-विरहकालोव-लद्धीदो। सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदु-वजुत्ता वा[२२०]।

है, मनःपर्ययज्ञान और विभगावधिज्ञानके विना छह ज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या होती है। अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको देखकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहो लेश्याएं होती हैं। भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। अनाहारक होते हैं। आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कार्मणकाययोगी जीव नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण नहीं करते हैं।

शंका—कार्मणकाययोगकी अवस्थामें भी कर्मवर्गणाओंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता?

समाधान—ऐसा शंकाकारके कहने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कार्मणकाययोगके समय नोकर्मणाओंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

सं. २९० कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सासा अवि. सयो	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ संज्ञि असं	४	५	६	१ कार्म.	२ अचक्षु	४ अकषा	६ मन विभ विना	२ अस यथा	४	६ १ शु. अथ ६ भा ६	२ भ अ	५ मि सा. ज्ञा ज्ञायो औप	२ स. अस. अनु.	१ अना	२ साका अना. यु उ

कम्मइयकायजोग-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९१]।

कम्मइयकायजोग-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया,

कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों

नं. २९१ कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	७ अप	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र १ शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ अना	२ साका अना.

सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

कम्मइयकायजोग-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, दो वेद, इत्थिवेदो णत्थि; चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २९२ कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स अ	६ अ	७	४	३ ति. म.	१ पं.	१ त्रस	१ कार्म.	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र १ शु भा. ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ अना	२ साका अना.

नं २९३ कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	१ कार्म	२ न पु	४	३ मति. श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र १ शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ अना.	२ साका. अना.

कम्मइयकायजोग-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दो पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चेव; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[१९१]।

सुगममजोगीणं।

एत्र जोगमग्गणा समत्ता।

वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वो[१]। णवरि णव गुणट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं; वेदे णिरुद्धे उवरिमगुणट्ठाणाभावादो। अत्थि खीणसण्णा, अवगदजोगो,

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, अथवा औदारिकशरीरकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती है, किन्तु भावसे शुक्ललेश्या ही होती है। भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनो उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगी जीवोंके आलाप सुगम ही हैं।

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे कथन करने पर आलापोंका कथन जैसा मूल ओघालापमें लिया गया है वैसा यहां पर भी लेना चाहिये। विशेष बात यह है कि यहां आदिके नौ गुणस्थान होते हैं ऐसा कहना चाहिए, क्योंकि वेदनिरुद्ध अवस्थामें अर्थात् वेदोंसे युक्त रहने पर ऊपरके गुणस्थानोंका अभाव है। तथा यहां पर क्षीणसंज्ञा, अपगतयोग, अपगतवेद, अकषाय, अलेश्य,

१ अ प्रतौ ' त जहा णेदव्वा ' क प्रतौ ' ज जहा णेदव्वा ' आ प्रतौ ' तम्हा णेदव्वा ' इति पाठ।

सं. २९४ कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
१ सयो.	१ अप.	६	२ आयु काय.	क्षीण	१ म	१ प	१ त्रस	१ कार्म	० अपग.	० अकषा.	१ केव	१ यथा	३ के.	द्र १ शु अथ. ६ भा १ शु	१ भ.	१ क्षा	० अनु.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ

अवगदवेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाणं, केवलदंसणं, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदव्वा। अणिंदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा।

"इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपज्जव-केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहुमसांपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमेहि विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव-

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए। तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए। और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकायिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छ ज्ञान, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व,

नं. २९५ स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
९	४	६प	१०	४	३	१	१	१३	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
आलाप	स प	६अ	७		ति.	पंचे	त्र	आहा २	स्त्री		मन	अस	के द	भा. ६	म		स	आहा.	साका
	स अ	५प	९		म			विना			केव,	देश	विना		अ		अस	अना.	अना.
	अस प	५अ.	७		दे						विना	सं मा							
	अस.अ.											छेदो							

कम्मइयकायजोग-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दो पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चेव; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

सुगममजोगीणं ।

एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वो[1]। णवरि णव गुणट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं; वेदे णिरुद्धे उवरिमगुणट्ठाणाभावादो । अत्थि खीणसण्णा, अवगदजोगो,

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, अथवा औदारिकशरीरकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, किन्तु भावसे शुक्ललेश्या ही होती है। भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगी जीवोंके आलाप सुगम ही हैं।

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे कथन करने पर आलापोंका कथन जैसा मूल ओघालापमें किया गया है वैसा यहां पर भी लेना चाहिये। विशेष बात यह है कि यहां आदिके नौ गुणस्थान होते हैं ऐसा कहना चाहिए, क्योंकि वेदनिरुद्ध अवस्थामें अर्थात् वेदोंसे युक्त रहने पर ऊपरके गुणस्थानोंका अभाव है। तथा यहां पर क्षीणसंज्ञा, अपगतयोग, अपगतवेद, अकषाय, अलेश्य,

१ अ प्रतौ ' त जहा णेदव्वा ' क प्रतौ ' ज जहा णेदव्वा ' आ प्रतौ ' तम्हा णेदव्वा ' इति पाठ ।

सं. २९४ कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ अप.	६ छह	२ आयु काय,	० संज्ञि असंज्ञि	१ म	१ प	१ त्रस.	१ कार्म	० अवेदा	० अकषा.	१ केव	१ यथा	१ के.	द्र.१ शु अथ.६ भा.१ शु	१ भ.	१ क्षा	० अनु.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

अवगदवेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाणं, केवलदंसणं, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदव्वा। अणिंदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा।

"इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपज्जव-केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहुमसांपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमेहि विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव-

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए। तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए। और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकायिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व,

नं. २९५ स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
९	४	६प	१०	४	३	१	१	११	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
आदिके ९	स प	६अ	७		तिर्य.	पंचे.	त्रस	आहा २ विना	स्त्री		मनःपर्य. केव. विना	असंय स या. छिदो	के द विना	भा. ६	म अ		स असं	आहा. अना.	साका अना.
	स अ	५प	९		म दे														
	अस प	५अ.	७																
	अस.अ.																		

सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९]।

इत्थिवेद-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो,

संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और [illegible]णकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २९६ स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
९ आदिके नौ	२ स प. अस प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दि	१ प.	१ त्र.	१० म ४ व. ४ औ १ वै १	१ स्त्री	४	६ मन केव विना	४ असं देश सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१७]।

[२१८]इत्थिवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, [illegible]-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण और सात प्राण, नौ प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

सं. २९७ स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
२ मि सा.	२ स अप अस ,,	६अ ५ ,,	७ ७	४	३ ति. म. दे	१ प	१ त्र	३ औ मि वै.मि कार्म.	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का शु. भा.३ अशु	२ भ अ	२ मि. सा	२ स. अस.	२ आहा. अना	२ साका. अना

सं. २९८ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	४ स प स अप अस प अस.अप.	६प ६अ ५प ५अ.	१० ७ ९ ७	४	३ ति. म दे	१ प	१ त्रस	१३ आहा.२ विना	१ स्त्री	४	२ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि.	२ स अस.	२ आहा. अना	२ साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रि- , , चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन ं, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २९९ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स प. अस प.	६ ५	१० ९	४	३ ति. म दि	१ पंचे.	१ तस	१० म ४ व ४ औ. १ कै. १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ. अ	१ मि	२ स अस.	१ आहा	२ साका. अना.

असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

इत्थिवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' तेउ ' इत्यधिक पाठ समाप्ति।

नं. ३००

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ स अप अस ,,	६ अ ५ अ	७ ७	४	३ ति. म दे	१ प.	१ त्रस	३ औ मि वै मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र २ का शु मा ३ अशु	२ भ अ	१ मि.	२ स अस	२ आहा. अना	२ साका. अना

नं. ३०१

स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ स.प स.अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ पचे	१ त्र	१३ आहा द्विक विना	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ स	१ सा	१ स	२ आहा. अना	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[302]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादन त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेद, चारों य, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

१ प्रतिषु ' तेउ ' इत्यधिक पाठ समस्ति।

नं. ३०२ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
२ सा.	१ स प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२]।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [३]।

इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण-

सं. ३०३ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ पर्या.	१ स अ	६ अ	७	४	२ ति. म दे.	१ प	१ त्रस	३ औ.मि वै.मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का शु. भा ३ अशु	१ भ	१ सा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

सं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मिश्र	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति म दे	१ पं.	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र.	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सम्य	१ स.	१ आहा	२ साका अना.

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

' इत्थिवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ.	उ
१ अवि.	१ स. प.	६	१०	४	१ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस	१० म. ४ व ४ औ. १ वै १	१ स्त्री.	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा. ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयता जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ देश.	१ स. प	६	१०	४	१ ति म	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ. १	१ स्त्री	४	३ मति. श्रुत अव	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना

जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

[१०७] इत्थिवेद-पमत्तसंजदाणं मण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, आहारदुगं णत्थि। इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञानके विना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना आदिके दो संयम होते हैं। यहांपर आहारकद्विक मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नहीं होनेका कारण यह है कि आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ३०७ स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	२	३	६	१	३	१	१	२
प्रम	स प				म	प	त्र	म ४ व. ४ औ १	स्त्री.		मति. श्रुत अव.	सामा छेदो	के.द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	भ	औ क्षा क्षायो.	स	आहा	साका अना

अणागारुवजुत्ता वा।

इत्थिवेद-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-अवुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ; मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों य, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायो मिक ये तीन क्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन ं ए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाय-योग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ३०८ स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत ं गोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ अप्र	१ स प	६	१०	३ आहा विना	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म ४ व. ४ औ.१	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा. छेदो	३ के.द. विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप. क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०९]।

इत्थिवेद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११०]।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपश- [और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा-रिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो , आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०९ स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ अपू.	१ स. प.	६	१०	३ आहा विना	२ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति. श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द. विना	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ	२ औप क्षा.	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

नं ३१० स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अनि.	१ स. प.	६	१०	२ मै. प	१ म	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति. श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द. विना	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप क्षा	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, , चारों सं , नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों , नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं. ३११ पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि.	आ	उ
९	४	६प	१०	४	३	१	१	१५	१	४	७	५ अस	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
ओघवत्	स प	६अ	७		ति	पं	त्र		पु		केव.	देश	के द.	भा. ६	भ		स	आहा	साका
	स अ	५प	९		म						विना	सामा	विना		अ		अस	अना	अना.
	अस प.	५अ	७		दे							छेदो							
	अस.अ.											परि.							

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१२]।

[३१३]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३१२

पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
९ आदिके	२ स प. अस प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ प.	१ त्र	११ म ४ व. ४ औ १ वै १ आहा १	१ पु	४	७ केव विना	५ असं देश सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र.६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

नं. ३१३

पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय.	द.	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ.
४ मि सा. अवि प्रम.	२ स. अ अस अ	६अ ५अ	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	४ औ मि वै मि आ मि कार्म.	१ पु.	४	५ कुम कुश्रु मति. श्रुत अव.	३ असं सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ म अ.	५ सम्य. विना.	१ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पुरिसवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ ीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

ारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ , सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय- , त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, पुरुष-वेद, चारों य, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, ोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां- ्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रि-यिककाययोग ये दश योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं. ३१४ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४ स. प स अ अस.प. अस अ	६प ६अ ५प ५अ.	१० ७ ९ ७	४	३ ति. म. दे	१ पं	१ स.	१३ आहा द्विक विना	१ पु.	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा ६	३ स अ	१ मि	२ स अस.	२ आहा अना	२ साका अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३१५ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	२ स प. अस प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पंचे	१ त्रस	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	१ पु	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ. अ.	१ मि	१ स अस	१ आहा	२ साका अना.

नं. ३१६ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ स अ अस अ	६अ ५ ,,	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं.	१ त्र.	३ औ मि. वै मि. कार्म.	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का. शु भा ६	२ भ अ	१ मि.	२ स. अस.	२ आहा अना	२ साका अना.

पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सासण-सम्मामिच्छा-असंजदसम्माइट्ठीणं तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ।

"णवुंसयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोग, णवुंसयवेद,

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। तथा सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके विना शेष तीन गतियां कहना चाहिए।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परंतु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान

नं. ३१७ नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	१४	६प.	१०,७	४	३	५	६	१३	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
लब्धि		६अ.	९,७		न			आहा	नपुं.		मन	अस.	के द.	भा. ६	भ.		स.	आहा	साका.
		५प	८,६		ति			द्विक			केव	देश	विना		अ		अस	अना.	अना.
		५अ	७,५		म			विना			विना	सामा.							
		४प.	६,४									छेदो.							
		४अ.	४,३																

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि सजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१८]।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३१८ नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ.	उ.
९	७	६	१०	४	३	५	६	१०	१	४	६	४	३	६	२	६	२	१	२
आदिके.	पर्या.	५	९		न			म ४	न		मन	अस.	के द.	द्र. ६	भ.		स	आहा	साका
		४	८		ति			व ४			केव	देश	विना	भा ६	अ		अस		अना.
			७ ६ ४		म			औ १ वै.२			विना	सामा. छेदो							

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम-त्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु वजुत्ता वा[३१९]।

णवुंसयवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ; दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छह पाण

उन्हीं नपुंसकवेदी [illegible] के अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जी [illegible]स, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह [illegible], पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृ [illegible]य आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासा-दन, क्षायिक और वेदक इसप्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, अ [illegible]क, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात [illegible], नौ प्राण, सात [illegible], आठ प्राण, छह प्राण,

नं. ३१९ नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१ मि	७ स. पं.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४,३	४	३ न ति म.	५	६	३ औ मि वै मि. कार्म	१ न	४	५ कुम. कुश्रु. मति श्रुत अव.	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ म. अ.	४ मि सासा. क्षा. क्षायो	२ स अस	२ आहा अना.	२ साका. अना.

सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया तेरह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों , आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों , असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भ छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और ैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

नं. ३२० नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अन्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	१४	६प. ६अ. ५प ५अ ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	३ न ति म	५	६	१३ आहा द्विक विना	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा ६	२ भ. अ.	१ भि	२ स. अस	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२२]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, , सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२१ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति. म	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	१ न	४	२ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा ६	२ भ. अ.	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका. अना.

नं. ३२२ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ द्वि	६अ ५ज. ४अ	७ ७ ६ ५ ४ २	४	३ न ति म	५	६	३ औ मि वै.मि कार्म.	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि.	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसगवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, सासणगुणेण जीवा णिरयगदीए ण उप्पज्जंति तेण वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३३१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विक, और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना शेष बारह योग होते हैं। यहां पर वैक्रियिकमिश्रके नहीं होनेका कारण यह है कि सासादन गुणस्थानसे मर कर जीव नरकगतिमें नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. ३२३ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ सा.	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	३ न ति म	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. २ वै. १ का १	१ न	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा ६	१ भ	१ स.सा	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना

भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव-णिरयगदी णत्थि। पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२५]।

सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—

सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां होती हैं, किन्तु देवगति और नरकगति नहीं होती है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग होते हैं, किन्तु यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३२४ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स.	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ	उ
१ सा.	१ स.प	६	१०	४	३ न ति म	१ पंचे	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ नपु.	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सं	१ स	१ आहा	२ साका अना

सं. ३२५ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ स अ	६ अ.	७	४	२ ति म	१ पं	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ न	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु. भा ३ अशु	१ भ	१ सं	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसयवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

णवुंसयवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाय-योग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं। किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

सं ३२६ नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
मि	सं				न	पं.	त्र	म ४	न		अज्ञा	अस	चक्षु	भा. ६	भ	सम्य	सं	आहा	साका
					ति.			व ४			३		अच						अना
					म			औ १			ज्ञान.								
								वै. १			मिश्र.								

भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव-णिरयगदी णत्थि। पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६]।

सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां होती हैं किन्तु देवगति और नरकगति नहीं होती है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग होते हैं; किन्तु यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२४ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
१ सा.	१ स.प	६	१०	४	३ न ति म	१ पंचे	१ त्रस	१०म ४ व ४ औ १ वै १	१ नपु.	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सं	१ स	२ आहा	२ साका अना

नं. ३२५ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	१ स अ	६ अ	७	४	२ ति म	१ पं	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ न	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु. भा ३ अशु	१ भ	१ सं	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसयवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

णवुंसयवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाय-योग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं। किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

गं ३२६ नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं.	द.	ले	भ.	स.	सन्नि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
मि	सं				न			म ४	न		अज्ञा	अस	चक्षु	भा. ६	भ	सम्य	सं	आहा	साका
	प				ति.		पृ	व ४			३		अच						अना
					म			औ २			ज्ञान.								
								वै. २			मिश्र.								

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२८]।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२७ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ लि. क	२ स.प. स अ	६प ६अ.	१० ७	४	१ न. ति म.	१ पं	१ त्र	१२ म. ४ व ४ औ.१ वै १ कार्म १	१ न.	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस.	३ के द विना	द्र ६ भा. ६	१ म.	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा. अना.	२ साका अना

नं. ३२८ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	म	स	संज्ञि	आ	उ.
१ लि. क	१ सं.प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं	१ त्र.	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस.	३ के द. विना	द्र ६ भा ६	१ म	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लद्धं। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

णउंसयवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं. यहां पर क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके होनेका कारण यह है कि कृतकृत्यवेदककी अपेक्षासे यहां पर क्षायोपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

सं ३२९ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि.	१ सं अ	६अ	७	४	१ न.	१ प	१ त्र	२ वै मि. कार्म.	१ न	४	३ मति श्रुत. अव	१ असं.	३ के द. बिना	द्र २ का. शु. भा.१ का.	१ भ	२ आ. क्षायो	१ सं.	२ आहा. अना	२ साका. अना

लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

णउंसयवेद-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो। णवरि सव्वत्थ णउंसयवेदो वत्तव्वो।

अवगदवेदाणं भण्णमाणे अत्थि छ गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, परिग्गहसण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो,

औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप स्त्रीवेदी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक नपुंसकवेद ही कहना चाहिए।

अपगतवेदी जीवोंके आलाप कहने पर—अनिवृत्तिकरणके अवेद भागसे लेकर अन्तके छह गुणस्थान और अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास स्थान भी होता है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी होता है, परिग्रहसंज्ञा तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी होती है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतिन्द्रियस्थान भी होता है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी होता है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी होता है, अपगतवेद, चारों कषाय

[1] प्रतिषु ' पंचिंदिय अणिंदियत्त अत्थि ' इति पाठः।

नं. ३३० नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
संय	स. प				ति	पं	त्र	म ४	न		मति.	देश.	के. द.	भा ३	भ	औप	स	आहा	साका.
					म			व ४			श्रुत		विना	शुभ		क्षा			अना
								औ. १			अव					क्षायो			

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, चत्तारि संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[३३१]।

विदिय-अणियट्टिप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा। णवरि दस गुणट्ठाणाणि वत्तव्वाणि। अदीदगुणट्ठाण, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी,

तथा अकषायस्थान भी होता है, मतिज्ञान आदि पांचों ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात ये चार संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी होता है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अपगतवेदी जीवोंके अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक के आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई।

कषायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि कषायमार्गणामें दश गुणस्थान कहना चाहिए। यहां पर अतीतगुणस्थान, अतीत-जीवस , अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व, यत्व,

नं. ३३१ अपगतवेदी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं य	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ	उ.
६ अनि. से अयो. अती गु.	२ सं प स,अ नि अपर्या.	६प. ६अ प. अपर्या.	१०,४ २,१ प्रा अती. प्रा	१ प. अपगत.	१ म सिद्धग.	१ प अति.	१ न अका.	११ म. ४ व. ४ औ २ कार्म १ अयो	० अपग.	४ अकषा	५ मति. श्रुत अव. मन केव.	४ सा छे सू य अतु	४	द्र ६ भा १ शु अले.	१ म अभ	२ यो का	१ स अनु	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु उ.

अणिंदियत्तं[1] अकायत्त, अजोगो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्साओ, णेव भवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा त्ति णत्थि ।

कोधकसायाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाय, सत्त णाण, पंच सजम सुहुम-जहाक्खादसंजमा णत्थि, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, [illegible]णणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

अयोग, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्यत्व, भव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं।

क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह [illegible] प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों ग[illegible], एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, पांच [illegible] होते हैं, किन्तु यहां पर सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयम नहीं होते हैं, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ आ प्रतौ ' अणियट्टियत्त पि अत्थि ' इति पाठ ।

नं. ३३२ क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
९	१४	६ प	१०,७	४	४	५	६	१५	३	१	७	५	३	६	२	६	२	२	२
आदिके		६ अ	९,७							को	केव.	सूक्ष्म	के द.	भा ६	स		सं	आहा	साका
		५ प	८,६								विना	यथा	विना		अ		अस	अना	अना.
		५ अ.	७,५									विना.							
		४ प	६,४																
		४ अ	४,३																

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाओ, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भव-सिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[3] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुण-स्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकाल-भावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिक-

नं ३३३ क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	म	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
९ आदिके.	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	११ म ४ व ४ औ १ वै. १ आ १	३ छहों	१ को	७ केव विना	५ सूक्ष्म यथा. विना	३ के द. विना	६ ६ भा ६	२ स. अ	६	२ स असं	१ आहा	२ साका अना

पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३३४]।

कोधकसाय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ रि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ,

मिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद, क्रो , कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्था ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असं ; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण- , चोदहों जीव , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ , सात , प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों , आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोध , तीनों अज्ञान, , आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं. ३३४ क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	सं	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि सा. अवि भम.	७ अप	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ.मि वै मि आ मि कार्म.	३	१ क्रो	५ कुम कुश्रु मति. श्रुत अव.	३ अस सामा. छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ स अ.	५ सम्य. विना.	२ स अस.	२ आहा अना	२ साका. अना

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२५]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२६]।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जी , छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों एं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३२५ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द.	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आहा.२ विना	३	१ क्रो	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि.	२ स. अस.	२ आहा अना	२ साका. अना.

सं. ३२६ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	३	१ क्रो	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि	२ स अस.	१ आहा.	२ साका अना.

तेसिं चेव अ त्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[*] ।

कोधकसाय-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ त्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोध-, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

सं. ३३७ क्रो धायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ अप.	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि. वै मि. कार्म.	३	१ क्रो	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का. शु. भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स. अस.	२ आहा अना	२ साका अना

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, अ , आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात , चारों

नं. ३३८ क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ सासा.	२ स.प. स अ	६प ५अ	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आहा २ विना	३	१ को	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र.६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना.

नं. ३३९ क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ.	स	सन्नि.	आ	उ
१ सासा	१ स प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र.	१० म. ४ व ४ औ१. वै १	३	१ को	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा. ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, त ओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७०]।

कोधकसाय-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ,, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, त ओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७१]।

संज्ञाएं, नरकगतिको छोड़ कर शेष तीन ^यां; पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण योग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोध , आदिके दो अज्ञान, अ ' , आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, से छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्य , संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधक ी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त ज मास, छहों पर्याप्तियां, दशों , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्र य, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रि-यिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन , असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे ी लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४० क्रोधक ी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त प.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं. प	६अ	७	४	३ ति. म. दे	१ पंचे	१ त्र	३ औ.मि वै मि. कार्म	३	१ क्रो	२ कुम. कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र २ का शु भा ६	१ म.	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. ३४१ क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इं	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ मि श्र	१ स प.	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै १	३	१ क्रो	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ म	१ सम्य.	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

कोधकसाय-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, - सिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं ३४२ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	लब्धि	आ	उ.
१ अवि.	२ स प अ	६ प. ६ अ	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आहा.२ विना.	३	१ क्रो	३ मति. श्रुत अव.	१ असं	३ के द. विना	द्र ६ भा ६	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा[३४३]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद इत्थिवेदो णत्थि; कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४४]।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं को पायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त समास, छहों अपर्याप्तियां, , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, किन्तु यहां पर स्त्रीवेद नहीं होता है, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहो लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औ आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३४३ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सन्नि	आ.	उ.
१ अवि.	१ स.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	१ क्रो	३ मति श्रुत अव	१ अस.	३ के.द. विना	द्र ६ भा. ६	१ भ	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका अना.

सं. ३४४ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१ अवि.	२ स अ.	६अ	७	४	४	१ प	१ त्र	३ औ मि वै.मि. कार्म.	२ पु. न	१ क्रो	३ मति श्रुत. अव	१ अस	३ के द. विना.	द्र. २ का शु भा.६	१ भ	३ औप. क्षा. क्षायो	१ स.	२ आहा. अना	२ साका. अना

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०५] ।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, (मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,) चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भव-

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमा म, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों , सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं,

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

द. ३४५ क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ देश.	१ स. प	६	१०	४	२ ति म	१ पंचे.	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ. १	३	१ क्रो	३ मति. श्रुत अव	१ देश.	३ के. द. विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा सायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५] ।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, (मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ[1],) चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भव-

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमा म, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, यिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं,

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

सं. ३४५ क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ स. प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व. ४ औ. १	३	१ को	३ मति. श्रुत अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	३ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४६]।

कोधकसाय-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४७]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४६ क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आ .

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ	स	सज्ञि	आ.	उ
१ प्रम.	२ स.प. स अ.	६प ६अ.	१० ७	४	१ म	१ त्र	१ त्र	११ म. ४ व. ४ औ.१ आ.२	३	१ क्रो.	४ मति श्रुत अव. मनः.	३ सामा छेदो परि.	३ के.द. विना	द्र ६ भा. ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	१ साका अना

नं. ३४७ क्रोधकषायी अप्रत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अप्र.	१ पं	६	१०	३ आहा रिना.	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ.१	३	१ क्रो.	४ मति श्रुत अव. मन.	३ सामा छेदो परि	३ के.द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना

कोधकसाय-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४८]।

[२४९]कोधकसाय-पढमअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाय-योग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, तीनों

नं ३४८ क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	१	४	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अपू.	स	प		आहा	म	पं	त्र	म ४ व ४ औ १		क्रो.	मति. श्रुत. अव. मन	सामा छेदो.	के द विना	भा. १ शुक्ल.	भ	औप. क्षा	सं.	आहा	साका अना.

नं. ३४९ क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग.	इ	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	३	१	४	२	३	द्र. ६	२	२	१	१	२
अनि. भा.	स प			मै प	म	पं	त्र	म. ४ व ४ औ १		क्रो	मति. श्रुत अव मन.	सामा छेदो	के द विना	भा १ शुक्ल	स.	औप. क्षा	स.	आहा	साका. अना

तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कोधकसाय-विदियअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३०]।

एवं माण-मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिं जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं। णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण-मायाकसाया वत्तव्वा। लोभकसायस्स कोधकसाय-भंगो। णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजम, लोभकसाओ च वत्तव्वो।

वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे मानकषायी और मायाकषायी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि कषाय आलाप कहते समय जहां ऊपर क्रोधकषाय कहा है, वहांपर मानकषाय और मायाकषाय कहना चाहिए। लोभकषायके आलाप क्रोधकषायके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि लोभ कषायके ओघालाप कहने पर-आदिके दश गुणस्थान, संयम आलाप कहते समय यथाख्यातसं

नं. ३५० क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ अनि.	१ स.प	६	१०	१ प	१ म	१ प	१ त्र.	९ म ४ व ४ औ १	० अवे.	१ को	४ मति श्रुत अव मन.	२ सामा. छेदो	३ के द. विना	६ मा १ शु.	१ भ	२ औप क्षा.	१ सं	१ आहा.	२ साका अना.

[१५]अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस चत्तारि दो एगं पाण अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धि[1] मो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो

विना छह संयम और कषाय आलाप कहते समय लोभकषाय कहना चाहिए।

अकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सयोगिकेवलीके संभवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके संभवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदा[1] काय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, पांचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा

१ आ प्रतौ "एग १०-४-२-१" इति पाठ ।

नं. ३५१ अकषायी जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ.
४ अत अती गु.	२ स.प स अ अती जीव	६प. ६अ. अती पर्या.	१०,४ २,१ अती प्राण.	० क्षा.	२ म सि	१ प क्षा.	१ त्र अक्षा.	११ म ४ व ४ औ २ कार्म १ अयो.	० अपग.	० अकषा	५ मति श्रुत अव मन केव	१ यथा अनु	४	द्र. ६ भा १ शुक्ल अले	१ अ. क्षा	२ औ क्षा	१ स. अनु	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु. उ

तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कोधकसाय-विदियअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३]°।

एवं माण-मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिं जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं। णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण-मायाकसाया वत्तव्वा। लोभकसायस्स कोधकसाय-भंगो। णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजम, लोभकसाओ च वत्तव्वो।

वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे मानकषायी और मायाकषायी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि कषाय आलाप कहते समय जहां ऊपर क्रोधकषाय कहा है, वहांपर मानकषाय और मायाकषाय कहना चाहिए। लोभकषायके आलाप क्रोधकषायके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि लोभ कषायके ओघालाप कहने पर-आदिके दश गुणस्थान, संयम आलाप कहते समय यथाख्यातसंयमके

नं. ३५० क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	१	४	२	३	द्र ६	१	२	१	१	२
अनि.	स.प			प	म	प	त्रस.	म ४ व ४ औ. १	अपग.	क्रो	मति. श्रुत अव मन	सामा. छेदो	के द. बिना	भा १ शुक्ल	म	औप क्षा.	सं	आहा.	साका अना.

[१५]अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस चत्तारि दो एगं पाण अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धि मो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो

विना छह संयम और कषाय आलाप कहते समय लोभकषाय कहना चाहिए।

अकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सयोगिकेवलीके संभवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके संभवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, पांचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा

१ आ प्रतौ "एग १०-४-२-१" इति पाठ ।

नं. ३५१ अकषायी जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ.
४ अत अती गु.	२ स.प स.अ अती जीव	६प. ६अ. अती. पर्या.	१०,४ २,१ अती प्राण	० क्षीण सं.	१ म सि	१ प पंचे.	१ त्र. अका.	११ म ४ व ४ औ २ कार्म १ अयो.	० अवेदा	० अकषा	५ मति श्रुत अव मन केव	१ यथा अनु	४	द्र. ६ भा १ शुक्ल अले	१ म. अछ	२ औ क्षा	१ स. अछ	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु. उ

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ([1]सागार-अणागारेहिं जुगवदु-जुत्ता वा ।)

उवसंतकसायप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ओघ-भंगो ।

एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा ।

[2]मदि-सुदअण्णाणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त

संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अकषायी जीवोंके उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लगाकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार कषायमार्गणा पत हुई।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके स जानना चाहिए।

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात , नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, प्राण, छह प्राण, चार ,

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

नं. ३५२ मति श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ	स	सम्ति.	आ	उ
२ मि सा	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प. ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ हि विना	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	२ मि. सासा.	२ स अस.	२ आहा अना	२ साका. अना

पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

[१०]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

चार प्राण तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां[1] पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

नं. ३५३ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
२ मि सा.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु. अच	६ भा ६	२ भ. अ.	२ मि सा.	२ सं. अस.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५४]।

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीव-सा, छ पज्जत्तीओ छ अ त्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण

आहारक, रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थ , सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्या- ं, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, ं यां, एकेन्द्रिय आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, ं कषाय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासा-दनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थ , चौदह जी , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात

नं. ३५४ मति श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स		इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
२ मि. सा	७ अप	६अ ,, ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा. ६	- भ अ	२ मि सा	२ स असं	२ आहा अना	२ साका अना

छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५१]।

[२५२]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच

प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों

नं. ३५५ मति श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ. ४ प ४ अ	१०,९ ९,८ ८,७ ७,६ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा. ६	२ भ अ	१ मि.	२ सं अस	२ आहा. अना	२ साका अना.

नं. ३५६ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	२ भ. अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७]।

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३५७ मति-श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६अ	७	४	४	५	६	३	३	४	२	१	२	द्र २	२	१	२	२	२
मि	अप	५ ,,	७					औ मि			कुम	अस	चक्षु	का	भ	मि	स.	आहा	साका
		४ ,,	६					वै मि.			श्रु		अच	शु	अ		अस.	अना	अना
			५					कार्म.						भा ६					
			४ ३																

मदि-सुदअण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०८]।

[१०९]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३५८ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सासा	२ स प. स अ	६प ५अ	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ द्वि विना	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच.	६ कृ नी का पी प ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना.	२ साका अना.

नं. ३५९ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सासा	१ स. प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र.	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु. अच	६ कृ नी का पी प ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६०]।

विभंगणाणाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. ३६० मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं. अ	६अ	७	४	३ ति म. दे	१ पंचे	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु ला ६	१ भ.	१ संज्ञा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६१]।

विभंगणाणि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६२]।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावले छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६१ विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि सा.	१ स. प.	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ व १	३	४	१ विभ	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र ६ भा ६	२ भ अ	२ मि सासा	१ स	१ आहा	२ साका. अना

नं. ३६२ विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	१ स.प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	१ विभ	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ. अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

विभंगणाणि-सासणसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६३]।

आभिणिबोहिय-सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, [illegible]ण दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक [illegible]दनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरत [illegible]ग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों [illegible], आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औप[illegible]क, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ३६३ विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सासा.	१ स प	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ २ वै १	३	४	२ विभ.	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सं.	१ सं	१ आहा	२ सा का. अना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६५]।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६४ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
९ अवि. से क्षीण.	२ स.प स.अ	६ प ६अ	१० ७	४ क्षीणस.	४	१ प	१ त्र	१५	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति. श्रुत	७	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	२ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अभा.

नं. ३६५ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
९ अवि से. क्षी	१ स.प	६	१०	४ क्षीणक	४	१ पंचे.	२ त्रस	११ म ४ व ४ औ.१ वै १ आ.१	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति. श्रुत	७	३ के.द. विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, तिण्णि , तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [३६६]।

आभिणिबोहिय-सुदणाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुण णं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त संबन्धी आलाप कहने पर— अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीव स, छहों अपर्याप्तियां, , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, अ , सामायिक और छेदोपस्थ ये तीन , आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, से छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो स, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशो , सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकका विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

सं. ३६६ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
२ अवि. म	१ सं. अ	६ अ	७	४	४	१ प.	१ त्रस	४ औ मि वै. मि आ. मि. कार्म	२ पु न	४	२ मति श्रुत	३ असं सामा छेदो	३ के.द विना	द्र २ का. शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पंजत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, ओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१८]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्र , चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्य , संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अ ारोपयोगी होते हैं।

नं ३६७ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके स आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि क	२ स प स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	२ मति. श्रुत	१ असं	२ के.द. विना	द्र ६ भा ६	१ भ.	३ औप क्षा. क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

नं ३६८ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि क	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	२ मति श्रुत.	१ असं.	२ के.द. विना.	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [११६]।

आभिणिबोहिय-सुदणाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

-

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीव स, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन , आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सा आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों , सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं. ३६६ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	म	ई	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
२ अवि म	१ सं अं	६ अ	७	४	४	१ प	१ त्रस	४ औ मि वै. मि आ. मि कार्म	२ पु न	४	२ मति श्रुत	३ असं सामा छेदो	३ के.द विना	द्र २ का. शु भा ६	१ म	३ औप क्षा क्षायो.	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पंज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो , असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१८]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त न्वी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जं , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्य , संज्ञिक, , साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ३६७ मति-श्रुत ी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सा आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ ओघ	२ स प स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ पुरु	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	२ मति. श्रुत	१ अस	३ के.द. विना	द्र ६ भा ६	१ भ.	३ औप क्षा. क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

नं ३६८ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ ओघ	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पुरु	१ त्रस.	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	२ मति श्रुत.	१ अस.	३ के.द. विना	द्र ६ भा. ६	१ भ	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३६९]।

संजदासंजदप्पहुडिं जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि आभिणि-बोहिय-सुदणाणाणि वत्तव्वाणि। एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओहिणाण एक्कं चेव भाणिदव्व। णाण-दंसणमग्गणाआ जेण खओवसममासिऊण ट्ठिआओ तेण मदि-सुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु तीहि

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानके आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां पर पूर्वोक्त दो ज्ञानोंके स्थानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए।

शंका—जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोपशमिक दर्शनमार्गणाएं अपने अपने आवरणीय कर्मोंके क्षयोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मति-ज्ञान और श्रुतज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहने पर दो, तीन अथवा चार ज्ञान, तथा अवधिज्ञान

नं ३६९ मति श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६अ	७	४	४	१	१	३	२	४	२	१	३	द्र २	१	३	१	२	२
अवि.	सं अ					पं	त्र	औ मि वै मि. कार्म.	पु. न		मति श्रुत.	अस	के द बिना	का शु भा.६	भ	औप क्षा. क्षायो	स	आहा. अना	साका. अना

चउहि वा णाणेहि होदव्वमिदि सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-णाण वदिरित्त-णाणाणमवणयणं कयं ।

मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, वेदगसम्मत्त-पच्छायद-उवसमतम्मत्तसम्माइट्ठिस्स[1] पढमसमए वि मणपज्जवणाणुवलंभादो। मिच्छत्त-

और मनःपर्ययज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहने पर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए ?

विशेषार्थ— शंकाकारके कहने का यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान हो सकते हैं, तब विवक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणाके आलाप कहते समय अपने सिवाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए। अर्थात् छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं, तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मन पर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधि-ज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय—क्रमशः मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए।

समाधान— आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होने पर भी उनकी विवक्षा नहीं कि गई है, इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मनः-पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व होते हैं। मनःपर्ययज्ञानीके औपशमिकसम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो

[1] उवसमचरियाहिमुहो वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता। अंतोमुहुत्तकालं अधापमत्तो पमत्तो य॥ तत्तो तिरयणविहिणा दंसणमोहं समं खु उवसमदि। ल. सा. २०३, २०४.

पच्छायद-उवसमसम्माइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे; मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुव-समसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायण-संजमकालस्स बहुत्तुवलंभादो। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

वेदकसम्यक्त्वसे पीछे द्वितीयोपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशमसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उ सम्यग्दृष्टि जीवमें मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टिके उत्कृष्ट उपशमसम्यक्त्वके कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे कर सर्व जघन्य मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है।

विशेषार्थ—ऊपर मनःपर्ययज्ञानीके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं। क्षायिक और क्षायोपशमिकसम्यक्त्वके साथ तो मनःपर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है। अब रही औपशमिकसम्यग्दर्शनकी बात, सो उसके प्रथमोपशमसम्यक्त्व और द्वितीयोपशमसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं। उनमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है। यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है। इसलिये प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मनःपर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्व उपशमश्रेणीके अभिमुख विशेष संयमीके ही होता है, इसलिये यहांपर अलगसे मनःपर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है। अथवा जिस संयमीने पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मनःपर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशमश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मनःपर्ययज्ञान पाया जा सकता है। ऊपर टीकामें 'पढमसमए वि' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयादिक समयमें वर्द्धमान चारित्र रहता है, इसलिये वहां तो मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है। इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मनःपर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है। परंतु द्वितीयोपशमसम्यक्त्व संयमीके ही होता है, इसलिये उसमें मनःपर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है। इसप्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो होते हैं, किन्तु औपश-

वत्तव्वा वा[३७०]।

मणपज्जवणाण-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि मणपज्जवणाणं एक्कं चेव वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजमो वि णत्थि त्ति भाणिदव्वं।

केवलणाणाणं भण्णमाणे अत्थि दे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्तीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसण्णाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादसुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि

मिकसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए। तथा संयम आलाप कहते समय परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा समुद्घातगत अपर्याप्तकालमें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात-

नं. ३७० मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	का.	उ.
७ प्रम से क्षीण	१ स प.	६	१०	४ मनुष्य	१ म	२ पु स्त्री	१ त्रस.	९ म. ४ व ४ औ १	१ पु	४ क्रोध	१ मन.	४ सामा छेदो सूक्ष्म यथा.	३ के द विना.	द्र. ६ भा ३ शुभ	१ भ.	३ औप. क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

अत्थि, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[३९१]।

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा।

एव णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग-

नं. ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ सयो. अयो.	२ पर्या. अप.	६प. ६अ.	४ २ १ अनीता.	० क्षीण.	१ मनु.	१ पं.	१ त्र.	७ म. ७ व. आ. रामं. १ अयो.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के. द.	द्र.६ भा. १ शुक्ल. अले.	१ भ.	१ सं.	० असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. उ.

अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, पंच संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति[७८] ।

पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि , तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि

स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा वायर भी है, मति ादि पांचों सुज्ञान, सामायिकादि पांचों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे र भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, -पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवस , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों , सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय , त्र य, तीं मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमि ययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, से तेज, और लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन त्व, संज्ञिक, रक,

नं. ३७२ संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स	ज्ञानि.	आ.	उ
१ प्रम. से अयो.	२ स.प. स अ.	६प. ६अ.	१० ७ ४ २ १	४ संज्ञि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस	१३ वै द्वि. विना. अयो	३ त्रिवे.	४ चतुक.	५ मति श्रुत अव. मनः. केव	५ सामा. छेदो परि. सूक्ष्म. यथा.	४	६ द्र. मा. ३ शुभ अले.	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ स अनु.	२ आहा. अना	२ साका. अना. यु. उ.

अत्थि, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[३७१]।

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा।

एव णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्त गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीव , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग-

नं. ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ सयो. अयो.	२ पर्या अप	६प. ६अ.	४ २ १	० क्षीणस.	१ म मिश्रा	१ प अती	१ त अका	७ म २ व २ औ २ कार्म १ अयो.	० अवग.	० अकषा	१ केव	१ यथा अनुभय	१ के द	द्र.६ भा १ शुक्ल. अले	१ भ. अभ	१ क्षा	० अज्ञ	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु. उ
अतीत.	अतीत	अतीत.	अतीत																

अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, पंच संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति[७८]।

पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि , तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि

स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति आदि पांचों सुज्ञान, सामायिकादि पांचों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, तीनों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं. ३७२ संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	आहा.	उ.
६ प्रम. से अयो.	२ स.प. स अ.	६प. ६अ.	१० ७ ४ २ १	४ आहा. भय. मैथु. परि.	१ म.	१ त्रस	१ त्रस	१३ वै द्वि. विना. अयो	३ त्रिवे.	४ अकषा.	५ मति श्रुत अव. मनः. केव	५ सामा. छेदो परि सूक्ष्म. यथा	४	द्र ६ भा. ३ शुभ अले.	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ सं असं.	२ आहा. अना	२ साका. अना. यु. उ.

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७३]।

अप्पमत्त दाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, ो, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७४]।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

स पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

यत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, भय, मैथुन और परिग्रह ये तीन संज्ञाएं होती हैं किन्तु यहां पर आहारसंज्ञा नहीं है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, ों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन क्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जी आलाप मूल ओघालापोंके स होते हैं।

नं. ३७३ की अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ प्र	२ स प. स. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्र	११ म. ४ व. ४ औ. १ आहा २	३	४	४ मति श्रुत. अव मन	३ सामा छेदो. परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ.	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३७४ संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ प्र	२ सं. अ.	६	१०	९ आहा विना	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव मन	३ सामा छेदो. परि	३ के.द विना	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ	३ औप. क्षा क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना

सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ त्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७५] ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। एवं छेदोवट्ठावण-सुद्धिसंजमस्स वि वत्तव्वं ।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थान सामायिकशुद्धिसंयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए। इसीप्रकार छेदोपस्थापना-संयमके भी आलाप जानना चाहिए, किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना-संयम ही कहना चाहिए।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये

गं. ३७९ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स.	ग.	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ प्र. अप्र. अपू. अनि.	२ स.प स.अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ प	१ त्रस	११ म.४ औ १ आ २	३ त्रिवे	४	४ मति. श्रुत अव मन.	१ सामा.	३ के द विना	६ ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	२ सं.	१ आहा.	२ अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहाराहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण मणपज्जवणाण णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो एदे[1] जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७६]।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघ-भंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमा च णत्थि। परिहारसुद्धिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो।

दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहांपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं। पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहांपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है, क्योंकि, आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं। ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत और अप्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर आहारककाययोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंयम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयम इतने आलाप नहीं होते हैं। संयमस्थान पर एक परिहारविशुद्धिसंयम ही होता है। तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए।

१ प्रतिषु 'एदाओ' इति पाठ ।

सं. ३७६ परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ.
२ प्र अ.	१ स.प.	६	१०	४	१ म	१ प	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव	१ परि	३ के द विना.	द्र ६ भा ३ शु	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो।

जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खाद-सुद्धिसंजमो, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[७७]।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। संजदासंजदाण-

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओ [illegible] पके समान ही जानना चाहिए।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जी[illegible] आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणक[illegible], सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो और एक प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन-योग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, अपगतवेद, अकषाय, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना शेष दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे [illegible] अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार-

नं. ३७७ यथाख्यात शुद्धि[illegible] जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ उ क्षी. स. अ	२ स प. अप	६प ६अ	१० ४ २ १	० [illegible]	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म ४ व ४ औ २ का १	० अपगत	० अकषा	५ मति श्रुत २ द. मन केव.	१ यथा.	४	द्र.६ भा १ शुक्ल अले	१ भ	२ औप क्षा.	१ स. अनु.	२ आहा अना.	२ साका अना. यु उ.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहाराहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण मणपज्जवणाण णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो एदे जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७६]।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघ-भंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमा च णत्थि। परिहारसुद्धिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो।

दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहांपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं। पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहांपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है, क्योंकि, आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं। ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत और अप्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर आहारककाययोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंयम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयम इतने आलाप नहीं होते हैं। संयमस्थान पर एक परिहारविशुद्धिसंयम ही होता है। तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए।

१ प्रतिषु 'पूदाओ' इति पाठ ।

सं ३७६ परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
२	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	६	१	२	१	१	२
प्र. अ.	सं.प				म	पं	त्र	म व औ १	पु.		मति श्रुत अव	परि	क्षा यो	द्र	भ	उ		आहा	साका अना

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो।

जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खाद-सुद्धिसंजमो, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[३७७]।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। संजदासंजदाण-

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जी[illegible] आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, अपगतवेद, अकषाय, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भ[illegible] शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके बिना शेष दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे[illegible] अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार-

सं. १७७ यथाख्यात शुद्धि[illegible] जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ उ. क्षी. स. अ.	२ स. अप.	६ प ६ अ	१० ४ २ १	० औदा. मि.	१ म.	१ पं.	१ च.	११ म ४ व ४ औ २ का १	० अपग.	० अकषा.	५ मति श्रुत. अव. मन केव.	१ यथा.	४	द्र.६ भा १ शुक्ल अले.	१ भ	२ औप क्षा	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका अना. यु. उ.

मोघ-भंगो ।

असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

असंयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग-द्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यासिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

नं. ३७८ असंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	१४	६	१०,७	४	४	५	६	१३	३	४	६	१	३	द्र ६	२	६	२	२	२
मे		५	९,७					आहि			अज्ञा	असं	के द.	भा ६	भ		स	आहा	साका.
गा		४	८,६					विना			३		विना		अ		असं.	अना	अना
अ.		३	७,५								ज्ञान								
४		२	६,४								३								
		१	४,३																

छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके अपर्याप्तक बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, प्राण, प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिक काययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके

नं. ३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
४ मि. सा. स अ	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के.द विना.	द्र ६ भा ६	२ भ. अ.	१	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मोघ-भंगो ।

असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

असंयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग-द्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

पृ. ३७८ असंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
४ मि सा स. अ	१४	६प ६अ ५प ५अ. ४प. ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२	४	४	५	६	१३ आ द्वि बिना	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान ३	१ असं	३ के. द. बिना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं.	२ आह अना	२ साका. अना

छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, प्राण, प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके

नं. ३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सा. अ	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के.द विना.	द्र ६ भा ६	२ भ. अ.	१	२ स. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८०]।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति मूलोघ-भंगा।

एव संजममग्गणा समत्ता।

दंसणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगो।

चक्खुदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ,

तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके असयत जीवोंके आ मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त, संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात ; , छह , चारों तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां,

नं. ३८०

जीवोंके अपर्याप्त

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि. सा. अ.	७ अप	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव.	१ असं	३ के. द विना	द्र २ का शु. भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ स असं	२ आहा अना	२ साका. अना

चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीण-सण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीव स, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञि ,

नं. ३८१ चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय.	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१२ मि से क्षी.	६ च प च अ अस अ. प प. स अ	६प ६अ. ५प ५अ	१०,७ ९,७ ८,६	४ त्रस	४	२ च प	१ अ.	१५	३ अपग.	४ अकषा	७ केव विना.	७	१ चक्षु	द्र ६ भा ६	२ म अ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना

वजुत्ता वा[१४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५] ।

असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, तीनों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८२ चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१२ मि. से क्षी	३ च. प. असं.प. सं. प	६ ५	१० ९ ८	४ क्षीण.	४	२ च. प.	१ त्रस.	११ म ४ व ४ औ. १ वै १ आ १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स असं	१ आहा	२ साका अना.

नं. ३८३ चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा अ	३ च. अ. असं अ. सं. अ	६अ ५अ	७ ७ ६	४	४	२ च प	१ त्र	४ औ.मि वै मि. आ.मि कार्म	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत अव	३ असं सामा छेदो	१ चक्षु	द्र २ का. शु भा ६	२ भ. अ	५ सम्य. विना.	२ स असं.	२ आहा अना	२ साका. अना.

चक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, संज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त ये छह जी [illegible]स; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात [illegible], आठ प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद,

मं. ३८४ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जी[illegible] सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ मि	६ च प. च अ अस.प अस अ. स. प. स अ.	६ प ६ अ. ५ प ५ अ.	१०,७ ९,७ ८,६	४	४	२ क प	१ त्र	१३ आ हि विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ अस	१ चक्षु.	द्र.६ भा.६	२ भ अ	१ मि.	२ स अस.	२ आहा. अना	२ साका. अना.

कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो. आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी ये जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद. चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहो लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक. मिथ्यात्व, सज्ञिक, असज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्ही चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त और सज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाए, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातिया, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याए, भावसे छहों

नं. ३८५ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	म	स	सन्नि	आ.	उ
१	३	६	१०	४	४	२	१	१०	३	४	३	१	१	६	२	१	२	१	२
मि	च. प	५	९			चतु	त्र	म ४			अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	म	मि	स	आहा	साका
	अस.प		८			पचे		व ४							अ		अस		अना
	सं. प							औ १											
								वै १											

नं. ३८६ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	म	स	सन्नि	आ	उ
१	३	६अ	७	४	४	२	१	३	३	४	२	१	१	६ २	२	१	२	२	२
मि.	च अ.	५अ	७			च	त्र.	औ मि.			कुम	अस	चक्षु	का	म	मि	स	आहा	साका.
	अस अ		६			प		वै मि.			कुश्रु			शु	अ		अस.	अना	अना.
	स. अ							कार्म.						भा ६					

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

चक्खुदंसण-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति मूलोघ-भंगो, णवरि चक्खुदंसणं ति भाणिदव्वं ।

"अचक्खुदंसणाणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलापमें 'चक्षुदर्शन' ऐसा कहना चाहिए।

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके बिना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक;

नं. ३८७ अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ मि. से क्षीण.	२४	६ प ६अ ५प ५अ ४प ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४ संज्ञा	४	५	६	१५	३ स्त्री. पुरु. नपुं.	४	७ केव. बिना	७	१ अच	६ ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं.	२ आहा अना.	२ साका अना

छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एंइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीण- स्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों , पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरत सम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जी , छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, प्राण,

नं. ३८८ अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१२ मि. से. क्षी.	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ क्षीण	४	५	६	११ म ४ व ४ औ. १ वै १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ.	६	२ स असं.	१ आहा	२ साका. अना

पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहि छ

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों [illegible] यां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, [illegible] कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, साम[illegible] और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहा[illegible], साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, [illegible] अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, [illegible], नौ [illegible], प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह [illegible], चार प्राण; चार [illegible], तीन [illegible], चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों [illegible],

[1] प्रतिषु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

ल. ३८९ अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा. अवि प्रम	७ अ	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ.मि वै मि आ.मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	१ अच	३ २ का. शु आ ६	२ म अ.	५ सम्य विना.	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[1]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच-जादीओ, पुढविकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं ३९० अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	सं.	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१४	६प.	१०,९	४	४	५	६	१३	३	४	३	१	१	६	२	१	२	२	२
मि.		६अ.	९,७					आ द्वि			अज्ञा	असं	अच	भा ६	भ.	मि	स.	आहा	साका
		५प.	८,६					विना							अ		अस	अना.	अना.
		५अ	७,५																
		४प	६,४																
		४अ.	४,३																

नं ३९१ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	सं	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	४	३	१	१	६	२	१	२	१	२
मि	पर्या.	५	९					म ४			अज्ञा	असं.	अच	भा ६	भ	मि	स	आहा	साका
		४	८					व. ४							अ.		अस.		अना.
			७					औ.१											
			६ ४					वै. १											

मिच्छत्तं सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११२]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि अचक्खुदंसणं ति भाणिदव्वं।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार , तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारि श्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय ' अचक्षुदर्शन, ही कहना चाहिए।

नं. ३९२ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	७ अप	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ २	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच.	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ प त्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और से छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षी ाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, , पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों , अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन क्त्व, ,

नं. ३९३ अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
९ अवि. से. क्षीण	२ स प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४ क्षीण.	४	१ पं.	१ त्र.	१५	३ त्रिवे.	४ अकषा.	४ मति श्रुत अव मन	७	१ अव	द्र.६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

अणागारुवजुत्ता वा[३५४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५५]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९४ अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
९ प्रवि से क्षीण	१ स प.	२	१०	४ क्षायि	४	१ पं	१ त्र.	११ म.४ व ४ औ १ वै. १ आ १	२ क्रमसे	४ अकषा	४ केव. विना	७	१ अव	द्र. ६ भा ६	१ भ.	३ औप. क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	१ साका. अना

नं. ३९५ अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
२ अवि. प्रम.	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	४ औ मि. वै मि. आ मि कार्म.	२ पु. न	४	३ मति श्रुत. अव	३ असा छेदो	१ अव	द्र २ का शु. भा. ६	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स.	२ आहा. अना	२ साका. अना.

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव ओहिणाण-भंगो। णवरि ओहिदंसणं ति भाणिदव्वं।

केवलदंसणस्स केवलणाण-भंगो।

एव दसणमग्गणा समत्ता।

लेस्साणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो। णवरि अजोगिगुणट्ठाणेण विणा तेरह गुणट्ठाणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिण सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदव्वा।

"किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ,

अवधिदर्शनी जीवोंके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थान पर अवधिदर्शन कहना चाहिए।

केवलदर्शनके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके विना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगि-केवलीजिन और सिद्धभगवान्‌की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं, वे नहीं कहना चाहिए।

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों समास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं,

नं. ३९६ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
४	१४	६प	१०,७	४	४	५	६	१३	३	४	६	१	३	द्र ६	२	६	२	२	२
मि	सा	६अ	९,७					आ द्वि			अज्ञा	अस	के. द	भा १	भ		स	आहा	साका
ल.		५प	८,६					विना			३		विना	कृष्ण	अ		अस.	अना	अना
अ		५अ.	७,५								ज्ञान								
		४प.	६,४								३								
		४अ	४,३																

चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

[१०]"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि; देवाणं पज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साभावादो। पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां, यहांपर देवगति नहीं है, क्योंकि, देवोंके पर्याप्तकालमें अशुभ तीन लेश्याओंका अभाव है। पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों

नं. ३९७ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सं.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा. अ.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति म.	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के.द विना.	द्र ६ भा १ कृष्ण	२ स. अ.	१	२ स. असं.	१ आहा	२ साका. अना.

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पच्च जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं च भवदि; छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सा-सम्माइट्ठिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि त्ति। सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक· आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, ति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक. मिथ्यात्व, सासादनसम्य और वेदकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि छठी पृथिवीसे जो कृष्णलेश्यावाले अधिर ग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्वके साथ कृष्णलेश्या पाई जाती है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९८ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा.	स.	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
३ मि. सासा अवि	७ सं. अ	६अ. ५अ. ४अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	२ औ.मि वै मि. कार्म	३	४	५ कुम. कुश्रु मति. श्रुत. अव.	१ अस.	१ के.द विना.	द्र २ का. भ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	३ मि सा. क्षायो.	२ स अस	२ आहा. अना	२ साका अना.

किण्हलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९०] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुण णं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ,

कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके न्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण छह प्राण, चार प्राण, चार , तीन प्राण चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आ कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार , चारों ए, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३९९ कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	१४	६प.	१०,७	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा १ कृष्ण.	२ भ. अ	१ मि.	२ स असं	२ आहा अना	२ साका. अना.
		५प	९,७																
		४प	८,६																
		५अ	७,५																
		४प	६,४																
		४अ	४,३																

छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७०]।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अ , असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त ^ समास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम,

नं. ४०० कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ ना. ति म	५	६	१० म ४ व. ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ कृष्ण	२ भ. अ	१ मि	२ स असं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४०१ कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	७ सं.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि. कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. २ का. शु भा. १ कृष्ण	२ भ अ	१ मि	२ स असं	२ आहा अना	२ साका अना

-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

किण्हलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ ीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], पंचिंदियजादी, त ओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, ाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो

आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असं ; आहारक, अनाहारक, ारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ान्य आलाप कहने पर— दनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीव ास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्या ां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों ं एं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारे गी और अन तेपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक दन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, हों , चारों संज्ञाएं देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस , चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक योग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों ,

[1] प्रतिषु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति।

मं. ४०२ कृष्णलेश्यावाले दनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा	२ स प स अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	२ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	६ द्र ६ भा.१ कृष्ण.	१ भ	१ सं.	१ सं	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात , चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, अ , आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ४०३ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आ .

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ सा	१ सं. प	६	१०	४	३ न भ ति	१ पंचे	२ त्र	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कृष्ण	१ भ.	१ सा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

सं. ४०४ कृष्णलेश्यावाले सासादन ग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	१ स अ	६अ	७	४	३ ति. म. दे.	१ प	१ त्र.	३ औ.मि. वै मि. कार्म.	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ कृष्ण.	१ भ	१ सासा.	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना.

किण्हलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०५]।

किण्हलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण

कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सं , देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ४०५ कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ मिश्र.	१ स प.	६	१०	४	३ न ति म	१ प	१ त्र.	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	६ भा १ कृष्ण	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका. अना

किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, ओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९] ।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या. भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन , संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों , चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों योग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ४०६ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प	प्रा.	स.	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अ	२ स प. स. अ	६प. ६अ	१० ७	४	३ न. ति. म	१ पं	१ त्रस	१२ म ४ व ४ औ. २ वै १ का १	३	४	३ मति श्रुत. अव.	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा १ कृष्ण	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना

सं. ४०७ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ
१ अवि.	१ स.प.	६	१०	४	३ न ति. म	१ पं	१ त्रस.	१०म४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा १ कृष्ण	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स	१ आहा.	२ साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

णीललेस्साए भण्णमाणे ओघादेसालावा किण्हलेस्सा-भंगा। णवरि सव्वत्थ णीललेस्सा वत्तव्वा।

काउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नीललेश्याके आलाप कहने पर—ओघ और आदेश आ कृष्णलेश्याके आलापोंके न होते हैं। विशेष बात यह है कि लेश्या आलाप कहते समय सर्वत्र नीललेश्या कहना चाहिए।

कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात , आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन , चारों सं ,

नं. ४०८ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ अ	१ सं अ	६अ	७	४	१ म	१ पं.	१ त्र	२ औ.मि कार्म	१ ढ	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं	३ के द. विना	द्र २ का. शु भा.१ कृष्ण	१ भ.	१ क्षायो.	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

तीं गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों , संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुण , पर्याप्त जीव स, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों , नौ , आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन ग ं ि, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों ज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह , असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे ीले , भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों क्त्व, संज्ञिक,

पृ. ४०९ कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आ

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ	उ
४ मि. सासा सम्य. अवि	१४	६ प. ६अ ५प ५अ ४प ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना.	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ असं.	३ के द विना.	द्र ६ भा १ का.	२ भ अ.	६	२ स असं	२ आहा अना.	२ साका अना

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण काउ-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"[११] ।

असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तका बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्त जीव , छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात , प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां. छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसि ; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये चार सम्यक्त्व; संज्ञि , असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४१० कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
४ मि सासा सम्य. अवि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म ४ व ४ औ.१ वै १	२	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ असं	३ के द. बिना	द्र ६ भा १ कापो.	२ भ अ.	६	२ स असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं ४११ कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अवि	७ ८ ७	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ २	४	४	५	६	२ औ मि वै. मि कार्म	२	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ असं	३ के द बिना	द्र २ का. शु भा. १ कापो	२ भ अ.	४ मि सा. क्षा. क्षायो.	२ स असं	१ आहा अना	२ साका. अना.

काउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सं , चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों , आहार वयोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असं : आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अ रोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तक न्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जी मास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ , आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार ; चारों

नं ४१२ कापोतलेइ ले मिथ्यादृष्टि जीवोंके स

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द.	ले.	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ.
१ मि	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ ४प ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा १ कापो.	२ भ. अ	१ मि	२ स. अस	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१३]।

[५१४]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

सञ्ज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारो मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोत-लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं ४१३ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	२ न. ति. म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै २	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ कापो	२ भ. अ	१ मि	२ स अस.	१ आहा	२ साका अना.

नं. ४१४ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	७ ह ल	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ २	४	४	५	६	३ औ मि वै मि. कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र. २ का. शु भा. १ कापो	२ भ अ.	१ मि	२ स अस.	२ आहा. अना	२ साका अना

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

काउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आ कहने पर—एक ादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, ों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों ', देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४१५ कापोतलेश्यावाले ादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सं.	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ स.प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ प	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ कापो.	१ भ.	१ सासा.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

[१०]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगई णत्थि । पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ४१६ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा	१ स प	६	१०	४	३ न ति म	१ प	१ त्र.	१० म ४ व ४ औ.१ वै १	३	४	२ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कापो.	१ भ	१ सासा.	२ स	१ आहा	१ साका अना.

नं. ४१७ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	२ स अ	६अ.	७	४	३ ति म. दे	१ प.	१ त्र	३ औ.मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु. अच.	द्र २ का शु. भा १ का	१ भ	१ सासा.	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८] ।

काउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके

नं. ४१८ कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्य	स.प				न	पचे.	त्रस	म ४			अज्ञा	अस	चक्षु	भा १	भ.	सं	स	आहा	साका.
					ति			व ४			३		अच	का					अना.
					म.			औ १			ज्ञान								
								वै. १			मिश्र								

णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०]।

तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४१९ कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	२ स प. स अ	६प ६अ	१० ७	४	३ न ति म	१ प.	१ त्र	१३ आ.द्वि विना.	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं.	२ के.द विना	द्र.६ भा १ का	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

नं. ४२० कापोतलेश्याबाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ	का.	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	३ न ति म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ मति श्रुत. अव.	१ असं	२ के द. विना	द्र. ६ भा १ का.	१ भ.	३ औप. क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२१]।

तेउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

उन्हीं कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्या वाले जीवोंके अन्य आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं ४२१ कापोतलेश्यावाले अ सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ स अ	६अ	७	४	३ न. ति म	१ प	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म.	२ पु. न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र २ का शु. भा. १ का	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ स.	२ आहा. अना	२ साका. अना

छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ—गोमट्टसार जीवकाण्डके अन्तमें आलाप अधिकारके ऊपर पं. टोडरमल्लजी ने जो सदृष्टियां दी हैं उनमें इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा असंज्ञी पंचेन्द्रियके पर्याप्त अवस्थामें चार लेश्याएं, तेजोलेश्याके आलाप बताते हुए तेजोलेश्यामें संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्तके अतिरिक्त असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास और संज्ञीमार्गणाके आलाप बतलाते हुए असंज्ञियोंके चार लेश्याएं बतलाई हैं। परंतु जिस आलाप अधिकारके अनुसार पंडितजीने ये संदृष्टियां संग्रहीत की हैं उसमें केवल संज्ञीमार्गणाके आलाप बतलाते हुए ही असंज्ञियोंके चार लेश्याएं बतलाई हैं। किन्तु इन्द्रियमार्गणाके आलाप बतलाते हुए असंज्ञियोंके तीन अशुभ लेश्याएं और तेजोलेश्याके आलाप बतलाते हुए संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो ही जीवसमास बतलाये हैं। किन्तु धवलामें सर्वत्र असंज्ञियोंके तेजोलेश्याका अभाव या तेजोलेश्यामें असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासका अभाव ही बतलाया है। इससे इतना तो निश्चित हो जाता है कि गोमट्टसार जीवकाण्डमें संज्ञीमार्गणाके आलाप बतलाते हुए असंज्ञियोंके जो चार लेश्याएं बतलाई हैं वह कथन धवलाकी मान्यताके विरुद्ध है। परंतु गोमट्टसार जीवकाण्डके मूल आलाप अधिकारमें ही जो दो मान्यताएं पाई जाती हैं उसका कारण क्या होगा, इसका ठीक निर्णय समझमें नहीं आता है। एक बात अवश्य है कि पंडित टोडरमल्लजीने सर्वत्र एक ही मान्यता अर्थात् असंज्ञियोंके तेजोलेश्या या तेजोलेश्यामें असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासको स्वीकार कर लिया है, इसलिये उनके सामने सर्वत्र उक्त मान्यताका पोषक ही पाठ रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं। यदि पंडितजीने मूलमें दिये गये संज्ञीमार्गणाके निर्देशके अनुसार ही सर्वत्र सुधार किया होता तो कहीं न कहीं उन्होंने उसका संकेत अवश्य किया होता। जो कुछ भी हो, फिर भी यह प्रश्न विचारणीय है।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--आदिके सात

नं. ४२२ तेजोलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
७ मि. से अप्र	२ म प स अ	६प ६अ	२० ७	४	३ ति. म. दे	२ प	१ त्र	१५	१	४	७ केव. विना	५ सूक्ष्म. यथा विना	३ के. द विना	द्र ६ भा १ ते	२ म अ	६	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२३] ।

[२२४]तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच

गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारो संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बधी ग्यारह योग, तीनो वेद, चारों कषाय, केवल ज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पाच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यासिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान,

नं. ४२३ तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले.	भ.	स	सन्नि	आ	उ
७ मि से अप्र	१ स प	६	१०	४	३ ति म दे.	१ प.	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३	४	७ केव. विना	५ अस देश सामा छेदो परि.	३ के द विना	द्र ६ भा १ ते.	२ म अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना.

नं. ४२४ तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स.	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	सन्नि	आ.	उ
४ मि सासा अवि प्रम.	१ सं प	६अ	७	४	२ दे म	१ प.	१ त्र	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	२ पु. स्त्री	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का. शु भा १ ते	२ भ. अ.	५ सम्य विना.	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

णाण, तिण्णि संजम[1], तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२५]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

अ , सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तक बन्धी आलाप कहने पर—

[1] प्रतिषु ' असजमो ' इति पाठः।

नं. ४२५. तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.,	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ स प स अ.	६प. ६अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र	१२ म ४ व ४ ओ १ वै २ का. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा १ ते.	२ भ. अ	१ मि	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना.

तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, णिरयगदी णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८] ।

[५७]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां हैं, किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और ण योग ये

नं. ४२६ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	२ स प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ. १ वै १	३	४	३ ज्ञान	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	२ भ अ.	१ मि	१ स	२ आहा	२ साका अना

नं. ४२७ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ सं.	६अ.	७	४	१ देव.	१ पं	१ त्र.	२ वै. मि कार्म	२ पु स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का. शु भा १ ते	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

जोग, दो वेद, णवुंसयवेदो णत्थि; चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-

दो योग; पुरुष और स्त्री ये दो वेद होते हैं, किन्तु नपुंसकवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आह , अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने

नं. ४२८ तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ.
१	२	६ प	१०	४	३	१	१	१२ म ४	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	२	२
सा.	स प.	६ अ	७		ति	प	त्र	व ४			अज्ञा	अस	चक्षु.	भा.१	भ	सा.	सं	आहा.	साका.
	स अ.				म			औ १					अच	ते.				अना	अना.
					दे			वै २											
								का १											

सीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-
ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[***] ।

[***]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

पर—एक इन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों योग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात , चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग

नं. ४२९ तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ सा	१ स. प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पंचे	१ त्र	१० म. ४ व ४ औ १ वै १	२	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा १ ते	१ भ	१ सं	१ सं	१ आहा	२ साका अना.

नं. ४३० तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स. अ	६अ	७	४	१ दे	१ प	१ त्र	२ वै मि. कार्म.	२ पु. स्त्री.	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा १ ते	१ भ	१ सं सा	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा[४]।

वे दो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरक-गतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

ल. ४३१ तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र.	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान मिश्र.	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ ते.	१ भ	१ सम्य.	१ सं	१ आहा	१ साका. अना

तेउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों , चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक,

सं. ४३२ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	योग	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प.	१०	४	३	१	१	१३	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	२	२
अ	स प.	६अ.	७		ति	पं	त्र	आ द्वि			मति	अस	के द	भा	भ	औप	स	आहा	साका.
	स. अ.				म			विना			श्रुत.		विना	ते		क्षा		अना	अना
					दे.						अव					क्षायो			

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११३]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४]।

तेउलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आ कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान,

नं. ४३३ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय.	द	ले	भ.	स.	सन्नि.	आ.	उ
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	३ ति. म दे	१ प	१ त्र	१०म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ अस	३ के द. विना	द्र ६ भा १ ते	१ भ.	३ औप क्षा. क्षायो	१ स.	१ आहा.	२ साका अना

नं. ४३४ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	सन्नि	आ	उ
१ अ	१ स अ	६अ	७	४	२ दे म	१ प	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	१ पु.	४	३ मति. श्रुत अव	१ अस	३ के द. विना.	द्र २ का. शु भा १ ते	२ भ.	३ औप क्षा. क्षायो.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५५]।

[४५५]"तेउलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि

संज्ञी-पर्याप्त , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारो सज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये

नं. ४३५ तेजोलेश्यावाले सयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ	उ
१ देश.	१ स. प	६	१०	४	२ ति म	१ प.	१ त्र	९ म. ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ देश	३ क द विना	द्र ६ भा १ ते.	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. ४३६ तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स.	ग.	इ	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	सन्नि	आ.	उ
१ प्रम	२ स प. स अ	६प ६अ.	१०	४	१ म.	१ पञ्चे	१ त्रस.	११ म. ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत. अव मन	३ सामा छेदो परि.	३ के द. विना	द्र. ६ भा १ ते.	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका अना

संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७]।

पम्मलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ,

तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले अ संयत जीवोंके आ कहने पर—एक अ त गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार के शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों योग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार , आदिके तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों , सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों

नं. ४३७ तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके ाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स	सन्नि.	आ	उ.
१ मू. ले	१ सं	६	१०	३ मय मै. परि.	१ म.	१ पं	१ त्र	९ म. ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ३ ते.	१ भ.	३ औ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१८]।

[४१९]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो,

योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

नं. ४३८ पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
७ मि. से. अप्र.	२ स. प स अ	६प ६अ	२० ७	४	३ ति. म. दे	१ प	१ त्र	१५	३	४	७ केव. विना	५ अस देश सामा. छेदो. परि.	३ के. द विना	द्र ६ भा १ प	२ भ अ	२	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. ४३९ पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
७ मि से अप्र	१ स.प	६	१०	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ मि १ आ १	३	४	७ केव विना	१ अस देश. सामा छेदो परि.	३ के.द विना	द्र ६ भा १ प.	२ भ अ	२	१ स	१ आहा	२ साका अना.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७०]।

पम्मलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहा , अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग,

नं. ४५० पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
४ मि. सासा अवि प्रम.	१ सं अ	६अ	७	४	२ दे प	१ पं.	१ त्र	४ औ मि वै मि. आ मि कार्म	१ पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत. अव.	१ असं सामा छेदो	३ के.द. विना.	६ २ का. शु भा. १ प.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना	१ सं	२ आहा. अना	२ साका अना.

कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"[vvi]

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-

नं. ४४१ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इं	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा १ प	२ भ अ	१ मि	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ४४२ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	१ स प.	६	१०	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	२ भ. अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७]।

पम्मलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

पयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

नं. ४४३ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ प अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु भा. १ प	२ भ अ	१ मि	१ सं.	२ आहा अना.	२ साका अना

ाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[vvi]

[vvi]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, से पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों योग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों क , तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-

नं. ४४१ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	२ स. प. स अ	६प ६अ	१० ७	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा. १ प	२ म अ	१ मि	१ स.	२ आहा. अना	२ साका अना

नं. ४४२ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	२ स प.	६	१०	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	२ म. अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७२]।

पम्मलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

पयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक इस गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगी के विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

नं. ४५३ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ स अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र. २ का. शु भा. १ प	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[vvv]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[vvv]।

भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४४४ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ स.प. स.अ	६प. ६अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र.	१२ म. ४ व ४ औ. १ वै २ का. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

नं. ४४५ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा	१ स.प	६	१०	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र.	१० व ४ व ४ औ.१ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प.	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४६]।

[४४७]पम्मलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि,

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-

नं. ४४६ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मा.	१ स अ	६अ.	७	४	१ दे	१ प.	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु. अच.	द्र २ का शु मा १ प.	१ भ	१ सासा.	१ स	२ आहा अना	२ साकां अना

नं. ४४७ पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ मिश्र	१ स.प	६	१०	४	१ ति म दे	१ पंचे.	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ मा १ प	१ भ.	१ सं.	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पम्मलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४४८ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	२ स प. स अ	६प, ६अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ प.	१ त्र.	१३ आ द्वि विना.	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	२ स	२ आहा अना	२ साका अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०]।

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे - लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्य , संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं ४४९ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	३ ति. म दे	१ प	१ त्र	१०म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ अस	३ के द. विना	द ६ भा १ प.	१ भ	३ औप क्षा. क्षायो	१ स.	१ आहा.	१ अना.

नं. ४५० पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ अ	१ स अ	६अ	७	४	२ दे म.	१ प	१ त्र	३ औ.मि वै मि कार्म	१ पुं.	४	३ मति. श्रुत अव	१ अस	३ के द विना.	द २ का. शु भा.१ प	१ भ.	३ औप क्षा. क्षायो.	१ स	३ आहा. अना	२ साका. अना.

पम्मलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; उत्तं च पिंडियाए[1]—

लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्ममिस्सय दव्व ।
जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २२८ ॥

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[मू] ।

पम्मलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जी , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों य, आदिके तीन ज्ञान, संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या होती है। पिंडिका नामके ग्रन्थमें कहा भी है:—

लेश्या दो प्रकारकी है, द्रव्यलेश्या और भावलेश्या। नोकर्मवर्गणाओंसे मिश्रित कर्मवर्गणाओंको द्रव्यलेश्या कहते हैं। तथा जीवका कषाय और योगके निमित्तसे होनेवाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भावलेश्या कहलाती है ॥ २२८ ॥

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण,

१ आ प्रतौ ' पिण्डियाए ' इति पाठ ।

नं. ४५१ पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
देश.	सं. प				ति म	पं	त्र	म. ४ व ४ औ १			मति श्रुत अव.	देश	के द विना.	भा १ प.	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५-१]।

[४५-१]पम्मलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा-

नं. ४५२ पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का.	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ अप्र	२ स प स अ	६प ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ १ आ. २	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि.	३ के द. विना	द्र. ६ भा १ प	१ म.	३ औप. क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

नं. ४५३ पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ अप्र	१ स प.	६	१०	३ मय मै. परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व. ४ औ. १	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुक्कलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि अजोगि विणा तेरह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीआ, दस पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि आत्थ, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[५५]।

रि ायोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अयोगिकेवली गुणस्थानके विना आदिके तेरह गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण तथा सयोगिकेवलीकी अपेक्षा चार प्राण और दो प्राण, चारों ं एं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ४५४ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१३ अयो विना.	२ स. प. स अ.	६ प ६ अ	१० ७ ४ २	४ पंचेन्द्रिय.	३ ति. म दे.	१ पं	१ त्र	१५	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र.६ भा.१ शु	२ म अ.	६	१ स अनु.	२ आहा. अना.	२ साका अना तथा यु. उ

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा ॥ ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद अवगदवेदो वि अत्थि,

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय, तथा अकषायस्थान भी होता है, आठों ज्ञान, सातों सयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तविरत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, काय, अपर्याप्तकालसबन्धी चारों योग, पुरुषवेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा

नं. ४५५ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१३ अयो. विना	१ सं. प	६	१० ४	४	३ ति म ने.	१ पंचे	१ त्र	११म.४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ त्रय	४ त्रिक	८	७	४	द्र ६ भा.१ शु	२ भ. अ	२	१ स अनु	१ आहा	२ साका अना. तथा यु उ

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[५५६]।

[५५७]सुक्कलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद,

अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, औपशमिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद,

नं. ४५६ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अवि प्रम. सयो	१ स अ	६ अ	७ २	४ देवगति	२ दे म	१ प	१ त्र.	४ औ मि. वै मि. आ मि कार्म.	१ पुरुषवेद.	४ कषाय	६ विभ मन विना	४ असं सामा छेदो यथा.	४	६ २ का शु मा १ शु.	२ भ अ	५ सम्य विना.	१ स. अनु	२ आहा अना	२ साका अना. तथा. यु उ

नं. ४५७ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ स. प. स अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र	१२ म. ४ व ४ औ. १ वै २ का. १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ मा १ शु	२ भ. अ	१ मि	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना.

चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ,

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

नं. ४५८ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	सं.	ग	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ स प.	६	१०	४	३ ति. प. दे.	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ.१ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ शु	२ भ अ.	१ मि	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०९] ।

सुक्कलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । कारणं, देव-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं अमुणिय-परमत्थाणं तिव्व-लोहाणं संकिलेसेण तेउ-पम्म सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील-काउलेस्साणं एगदमा भवदि । सम्माइट्ठीणं पुण मणुस्सेसु चेव उप्पज्जमाणाणं मंदलोहाणं समुणिदपरमत्थाणं अरहंतभयवंतम्हि छिण्ण-जाइ-जरा-मरणम्हि दिण्णबुद्धीणं[1] तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ चिरंत-

शुक्ल लेश्यावाले, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग होते हैं, किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले, परमार्थके अजानकार और तीव्र लोभकषायवाले ऐसे मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके मरते समय संक्लेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं नष्ट होकर कृष्ण, नील और कापोत लेश्यामेंसे यथासंभव कोई एक लेश्या हो जाती है। किन्तु जो मनुष्योंमें ही उत्पन्न होनेवाले हैं, मंद लोभकषायवाले हैं, परमार्थके जानकार हैं, और जिन्होंने जन्म, जरा और मरणके नष्ट करनेवाले अरहंत भगवन्तमें अपनी बुद्धिको लगाया है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके चिरंतन (पुरानी) तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं मरण करनेके

१ प्रतिषु ' छिण्णबुद्धीण ' इति पाठ

ल. ४५९ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	१ देव. प	१	१ त्र.	२ वै. मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच.	६ २ का. शु भा १ शु.	२ भ अ.	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

च्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९९] ।

सुक्कलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, ाादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि ाण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९९] ।

भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व. संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना- होते हैं।

लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत- ाणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, र्याप्त, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, , त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों के तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भा भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सुक्कलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । कारणं, देव-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं अमुणिय-परमत्थाणं तिव्व-लोहाणं संकिलेसेण तेउ-पम्म सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील-काउलेस्साणं एगदमा भवदि । सम्माइट्ठीणं पुण मणुस्सेसु चेव उप्पज्जमाणाणं मंदलोहाणं समुणिदपरमत्थाणं अरहंतभयवंतम्हि छिण्ण-जाइ-जरा-मरणम्हि दिण्णबुद्धीणं[1] तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ चिरंत-

शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग होते हैं, किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले, परमार्थके अजानकार और तीव्र लोभकषायवाले ऐसे मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके मरते समय संक्लेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं नष्ट होकर कृष्ण, नील और कापोत लेश्यामेंसे यथासंभव कोई एक लेश्या हो जाती है। किन्तु जो मनुष्योंमें ही उत्पन्न होनेवाले हैं, मंद लोभकषायवाले हैं, परमार्थके जानकार हैं, और जिन्होंने जन्म, जरा और मरणके नष्ट करनेवाले अरहंत भगवन्तमें अपनी बुद्धिको लगाया है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके चिरंतन (पुरानी) तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं मरण करनेके

[1] प्रतिषु ' छिण्णबुद्धीण ' इति पाठ

ल. ४५९ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं. अ.	६अ	७	४	१ देव.	१ पं	१ त्र.	२ वै. मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र २ का. शु भा १ शु.	२ भ अ.	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

णाओ जाव अंतोमुहुत्तं ताव ण णस्संति। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९०]।

[९१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ

अनन्तर अन्तर्मुहूर्त तक नष्ट नहीं होती हैं, इसलिए शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवोंके औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या;

—

नं. ४६० शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ	उ.
१ सा	२ स.प. स ज	६प. ६अ	१० ७	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ शु.	१ भ.	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

नं. ४६१ शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा	१ स प	६	१०	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा. १ शु.	१ भ	१ सासा	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना.

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[६६१] ।

सुक्कलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया,

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक दन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके । शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों योग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. ४६२ शुक्ललेश्यावाले दनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	१ स अ	६अ.	७	४	१ दे	१ प.	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु . अच.	द्र २ का शु भा १ शु.	१ भ	१ सासा.	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११३]।

सुक्कलेस्सा-असजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४]।

शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व. संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४६३ शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ सम्य.	२ स प.	६	१०	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र.	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा १ शुक्ल.	१ भ	१ सम्य	१ स	१ आहा.	२ साका. अना

नं. ४६४ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि	२ स प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४	३ ति. म दे	१ प.	१ त्र.	१३ आहि विना.	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र.६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स.	२ आहा अना.	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आह , साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ४६५ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	३ ति म दे.	१ प	१ त्र	१० म ४ व. ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के. द विना.	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६५]।

सुक्कलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६६]।

सुक्कलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुण

नं. ४६६ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	२ दे म.	१ पं	१ त्र	३ औ वै मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस.	३ के द. विना	द्र. २ का. शु भा. १ शुक्ल	१ भ	३ औप. क्षा. क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

नं. ४६७ शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्र	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ स.प	६	१०	४	२ ति म.	१ पं.	१ त्र	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के.द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो.	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"[८८]।

"[८९]सुक्कलेस्सा-अपमत्तसजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहार-विशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य-सिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं. ४६८ शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१ प्रम.	२ स प स अ	६प. ६अ	१० ७	४	१ म	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ.१ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन.	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा.१ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना

नं. ४६९ शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि.	आ	उ.
१ प्रम	१ स	६	१०	३ भय मै. परि.	१ म.	१ प	१ त्र	९ म. ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द. विना.	द्र. ६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो; तेसु सुक्कलेस्सा-वदिरित्तण्णलेस्साभावादो। अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चेव।

एव लेस्सामग्गणा समत्ता।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो। णवरि भवसिद्धिया त्ति वत्तव्वं।

अभवसिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान ही होते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव है।

लेश्यारहित अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापोंके ही समान होते हैं।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहने पर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छ प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छ प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७१]।

छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ४७० अभव्यसिद्धिक जीवोंके अन्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२	४	४	५	६	१३ आ.द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु. अच	द्र ६ भा ६	१ अ	१ मि	२ स अस.	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ४७१ अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ. १ वै १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा ६	१ अ	१ मि.	२ स अस	१ आहा	२ साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७२]।

णेव-भवसिद्धिय-णेव-अभवसिद्धियाणमोघ-भंगो।

एवं भवियमग्गणा समत्ता।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि, वे जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्तकाल न्धी आलाप कहने पर— मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, अ क, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अ रोपयोगी होते हैं।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार भव्यमार्गणा स हुई।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंके न्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो तथा अतीतजीव स-

नं. ४७२ अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	७ सं. अप.	६अ. ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि वै मि. कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस.	२ चक्षु अच.	द्र २ का. शु भा. ६	१ अ.	१ मि	२ स. अस.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा चोद्दह जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१७५] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग के विना चौदह योग अथवा तीनों मिश्र योग और कार्मणकाययोगके विना शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यायें तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनो उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुद्घात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुद्घात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसीप्रकार सयोगकेवलीके दो प्राणोंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिए।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण दो प्राण, चारों संज्ञायें तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-

नं. ४७४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	यो	ह	का	वो	वे	क.	ज्ञा.	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
११ जावि से अयो.	१ स. प	६	१० ४ २ १	४ मनुष्य	४	१ पत्ते	१ त्र	१४ वै मि विना. अथवा ११ म. ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ क्षपगा.	४ अकषा	५	७	४	६ भा ६ अलेश्य.	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स जहु	२ आहा. अना	२ साका अना. तथा. पु. उ.

अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीदपाणा वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि,

स्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां और अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्व- स्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, संयम तथा , अ और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाह , साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--अविरतसम्यग्दृष्टि गुण- से लेकर अयोगिके गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश, , दो और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों

सं. ४७३ सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	सन्नि.	आ	उ
११अवि से अयो. अपर्या.	२ स.प. स अ. अपर्या.	६प ६अ अपर्या.	१० ७ ४ २ अपर्या.	४ क्षीणस.	४ सिद्ध	१ पं अनिन्द्रि.	१ त्र अकाय.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	५	७ केवल.	४	६ द्र ६ भा. लेश्या.	१ भ अभव्य.	३ औप क्षा. क्षायो	१ स अस.	२ आहा अना	२ साका. अना तथा यु. उ

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा चोद्दह जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[४७५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग के विना चौदह योग अथवा तीनों मिश्र योग और कार्मणकाययोगके विना शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुद्घात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुद्घात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसीप्रकार सयोगकेवलीके दो प्राणोंके सबन्धमें भी समझ लेना चाहिए।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-

नं. ४७४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	सय	द	ले.	भ.	स.	सज्ञि	आ.	उ.
११ अवि से अयो.	१ स. प	६	१० ४ २ १	४ सज्ञिक	४	१ पचे	१ त्र	१४ वै मि विना. अथवा ११म.४ व ४ औ १ वै २ आ १	३ त्रपुं	४ त्रकषा	५	७	४	द ६ भा ६ अलेश्य	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स अनु	२ आहा. अना	२ साका अना. तथा यु. उ.

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा[७५]।

उवरि असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो; तेसिं सव्वेसिं सम्मत्तसंभवादो।

जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवलज्ञान ये चार ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोप-स्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—यहांपर सम्यक्त्वमार्गणाके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए भावसे " लेश्याएं बतलाई गई हैं, और गोमट्टसार जीवकाण्डके आलापाधिकारमें सम्यक्त्वमार्ग- अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए एक कापोत और तीन शुभ इसप्रकार चार लेश्याएं ही ई हैं। परंतु गोमट्टसारमें ऐसा कथन क्यों किया यह कुछ समझमें नहीं आता, क्योंकि, आगे उसीमें वेदकसम्यक्त्वके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए छहों लेश्याएं कही गई हैं। संभव है यह लिपिकारकी भूल है जो बराबर यहां तक चली आई है। अस्तु, धवलाका कथन ठीक प्रतीत होता है।

ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्था ं सम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं, क्योंकि, उन सभी गुणस्थानवर्ती जीवोंके सम्य पाया जाता है।

नं. ४७५ सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ अवि प्रम. क्षयो	१ स अ	६अ	७ २	४ संज्ञा. अपर्या.	४	१ प	१ त्र.	४ औ.मि वै मि. आ मि कार्मे.	२ पु. न पुं. क्ली	४ क्षा. क्षा.	४ मति श्रुत अव. केव.	४ असं सामा. छेदो यथा.	४	द २ का शु. भा ६	१ स	३ औप क्षा. क्षायो	१ स. अनु	२ आहा अना	२ साका अना तथा यु उ

खइयसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ सिद्धगई वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१०९]।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीव थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सात , चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, त्रस- तथा अकायस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भा छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असं इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

सं. ४७६ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	आहा.	उ.
११ अवि. से. अयो.	२ स.प. स अ.	६प. ६अ.	१० ७ ४ २ १	४ क्षीणसं.	४ सिद्धग.	१ पं. अनीदि.	१ त्र. अकाय	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	५ मति श्रुत. अव. मन. केव.	७ अनु.	४	६ अ. ६ सा. ६ अले.	१ स. अभ.	१ क्षा.	१ स. अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस चत्तारि एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[७७] ।

तेसि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि,

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक ग्यारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण और चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों सम्यग्ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद तथा

नं. ४७७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
११ अवि से अयो	१ स प.	६	१०	४ क्षीण.	४	१ प	१ त्र	११म ४ व ४ औ. १ वै १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा	५ मात. श्रुत अव मन कव	७	४	६ मा ६ अले	१ भ	१ क्षा.	१ स अनु.	२ आहा अना.	२ साका. अना तथा यु

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा[७७८]।

[७७९]खइयसम्माइट्ठीणं असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असं-

अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवलज्ञान ये चार ज्ञान, असंयम, सामायिक छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा अनुभयस्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

नं. ४७८ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि. प्रम. सयो	१ सं. अ.	६अ	७	४ क्षीणक	४	१ प	१ त्र.	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	२ पु न नपुंस	४ क्रोधा	४ मति श्रुत अव केव	४ अस. सामा छेदो परि	४	द्र ६ का शु भा ४ का. तेज पद्म शुक्ल	१ भ	१ सं	१ स अनु	२ आहा अना	२ साका. अना. तथा यु.उ

नं. ४७९ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि.	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ प	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सं	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

जमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, त ओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, रुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८०]।

आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अ रोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप् न्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, अ , आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८० क्षायि यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त .

गु.	जी	प	प्रा.	स.	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	१०म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	६ मा ६	१ भ	१ क्षा.	१ स	१ आहा.	२ साका अना

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त प.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ अ	१ ल	६ अ	७	४	४	१ प	१ त्र	३ औ.मि वै मि कार्म.	२ पु. न	४	३ ति. श्रुत अव	१ अस	३ के द. विना	द्र २ का. भा ४ का तेज पद्म शुक्ल	१ भ.	१ क्षा.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णकाउ-तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८१]।

खइयसम्माइट्ठीणं सजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं,

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तक बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थ , एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारि ाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि.	१ स अ.	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र.	३ औ मि वै मि कार्म	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के द. विना	द्र २ का.शु. भा ४ का तेज. पद्म. शुक्ल.	१ भ	२ क्षा	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८२]।

खइयसम्माइट्ठीणं पमत्तसंजदप्पहुडि सिद्धावसाणाणं मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ खइयसम्मत्तं चेव वत्तव्वं।

[४८३]वेदगसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं,

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवों तकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र एक क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों , प्राण, चारों सं , चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार , असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये , आदिके

नं ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग.	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	१	१	१	२
संय	संज्ञि				म.	प	त्र	म. ४			मति	देश	के.द.	भा.३	भ.	क्षा	स	आहा	साका
ता	प							व. ४			श्रुत		बिना.	शुभ.					अना.
सं								औ १			अव								

नं. ४८३ वेदकसम्यग्दृष्टि [illegible] न्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
४	२	६प	१०	४	४	१	१	१५	३	४	४	५	३	द्र ६	१	१	१	२	२
अवि.	सं.	प.	७			प	त्र				मति	असं	के द	भा.६	भ	क्षायो	स.	आहा.	साका.
से.	प	अ									श्रुत	देश.	बिना					अना	अना
अप्र.											अव	सामा							
											मन	छेदो							
												परि							

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ; देवगदि-मणुसगदी। कद-करणिज्जं वेदगसम्माइट्ठिं पडुच्च णिरय-तिरिक्खगईओ लब्भंति। पंचिंदियजादी, तसकाओ,

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां होती हैं, क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु कृतकृत्य वेदकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे नरकगति और तिर्यंचगति भी पाई जाती हैं। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार

नं. ४८४ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
४ अवि से अप्र	१ सं पं	६	१०	४	४	१ प	२ त्र.	११ म ४ व ४ औ.१ वै १ आ.१	३	४	४ मति श्रुत अव मन.	५ असं. देश सामा छेदो. परि.	३ के. द विना	६ द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८५]।

वेदगसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८६]।

योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों , सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८५ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स	सन्नि	आ	उ
२ अवि. प्रम	१ स अ	६अ.	७	४	४	१ प.	१ त्र	४ औ मि वै मि आ.मि. कार्म	२ पु न	४	३ मति त. अवे	३ अस सामा छेदो	३ के. द विना	द्र २ का शु. भा. ६	१ भ	१ क्षायो.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना

नं. ४८६ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ अवि	२ स प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ प.	१ त्र.	१३ आ.द्वि विना.	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८७]।

[४८८]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारो वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

नं. ४८७ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स.	सन्नि	आ.	उ.
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व. ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के. द विना.	द्र ६ भा ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ स	१ आहा	२ साका अना.

नं. ४८८ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ.	स.	सन्नि	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ पं.	१ त्र	२ औ मि वै मि. कार्म	२ पु. न	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं.	३ के द. विना	द्र. २ का. शु भा. ६	१ भ	१ क्षायो	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना.

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेदगसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८९]।

वेदगसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण,

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त ^ समास, छहों पर्य ^ ि, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संय ^ म, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, ारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवस , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग;

नं. ४८९ वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ स. प	६	१०	४	२ ति. म.	१ प.	१ त्र	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	३ मति श्रुत. अव.	१ देश	३ के.द विना.	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ.	१ क्षायो	१ सं.	१ आहा	२ साका. अना.

^ णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेद म्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९०]।

वेदगसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ त्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९१]।

तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामा^ आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि अ संयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स.	ग	इ	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ प्रम	२ स प. स अ	६प ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ १ आ. २	३	४	४ मति श्रुत अव. मन.	३ सामा छेदो परि.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा ३ शुभ	१ भ.	१ क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका. अना

नं. ४९१ वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ अप्र	१ स प.	६	१०	३ मय मै. परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत अव. मन.	३ सामा छेदो परि.	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ.	१ भ	१ क्षायो	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

उवसमसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियामिस्स-आहार-आहारमिस्सेहि विणा बारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि ... य उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, परिहारसंजमेण विणा छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९९२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन तीन योगोंके विना शेष बारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों तथा

नं. ४९२ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
८ अवि से उप	२ स.प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४ मनु	४	१ प	१ त्र.	१२ म. ४ व ४ औ. १ वै २ का. १	३ त्रयं	४ क्रो मा	४ मति श्रुत. अव मन	६ परि विना	३ के द विना.	६ भा ६	१ म.	१ औप.	१ स	२ आहा अना	२ साका. अना.

कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९२]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९४]।

उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४९३ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ.
८ अवि. से उप	२ सं अप	६	१०	४ सं. ४	४	२ प	१ त्र	१० म ४ व. ४ औ.१ वै १	३ अपग.	४ लो.	४ मति. श्रुत अव मन	१ परि. विना	३ के.द विना	द्र ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४९४ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६अ	७	४	१ दे	१ प	१ त्र.	२ वै मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव	१ अस.	१ के.द विना	द्र २ का. ॐ भा ३ शुभ.	१ भ	१ औप.	१ स.	२ आहा अना.	२ साका. अना.

उवसमसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९९५]।

[९९६]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस

उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अ सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-

नं. ४९५ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	२ स. प स अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ प	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं	३ के द विना.	द्र ६ भा ६	१ भ	१ औप	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं ४९६ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय.	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि.	१ स.प	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै. २	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ औप	१ स	१ आहा.	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७]।

उवसमसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ४९७ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ संज्ञी अप	६ अप	७	४	१ दे.	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ पु.	४	३ मति. श्रुत अव	१ असं	३ के द. बिना	द्र २ का शु भा ३ शुभ	२ भ.	१ औप.	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना.

काओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८]।

उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जवणाणेण सह उवसमसेढीदो ओयरिय पमत्तगुणं पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणं लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदस्स; तत्थुप्पत्ति-संभवाभावादो। दो संजम, परिहारसंजमो णत्थि। कारणं, ण ताव मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-संजदा

औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औप[ ]कसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीव स, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टिके मनःपर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मनःपर्ययज्ञानके साथ उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवके मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतके मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है। ज्ञान आलापके आगे सामायिक, और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए प्र[ ]सम्यग्दृष्टि सयत जीव तो परिहारविशुद्धिसंयमको प्राप्त होते नहीं है, क्योंकि,

नं. ४९८ उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इं.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि
१	१	६	१०	४	२	१	२	९	३	४	३	१			१	१	१
देश.	स प.				ति म	प	त्र	म ४ व ४ औ. १			मति. श्रुत अव	देश				औप.	स.

परिहारसंजमं पडिवज्जंति; अइट्ठ-उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे तदुप्पत्तिणिमित्तगुणाणं संभवाभावादो। णो उवसमसेढिं चढमाणा; तत्थ पुव्वमेवमंतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिद-विहारादो। ण तत्तो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णट्ठे उवसमसम्मत्तेण विहारस्सासंभवादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१११]।

उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम, तीर्थंकर-चरणमूल-वसति, प्रत्याख्यानपूर्व-महार्णवपठन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव है। और न उपशमश्रेणीपर चढ़नेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना है, क्योंकि, उपशमश्रेणिपर चढ़नेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमी अपने गमनागमनादि विहारको उपसंहरित अर्थात् संकुचित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है, क्योंकि, श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमीका विहार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

सं. ४९९ उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ स.प	६	१०	४	१ म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ.१	३	४	४ मति श्रुत अव. मन.	२ सामा. छेदो	३ के द विना	द्र.६ भा ३ शुभ.	१ भ.	१ औप	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना.

काओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८]।

उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जवणाणेण सह उवसमसेढीदो ओयरिय पमत्तगुणं पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणं लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदस्स; तत्थुप्पत्ति-संभवाभावादो। दो संजम, परिहारसंजमो णत्थि। कारणं, ण ताव मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-संजदा

औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उप सम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीव स, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टिके मनःपर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मनःपर्ययज्ञानके साथ उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवके मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतके मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति संभव नहीं है। ज्ञान आलापके आगे सामायिक, और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीव तो परिहारविशुद्धिसंयमको प्राप्त होते नहीं है, क्योंकि, सर्वोत्कृष्ट भी

नं. ४९८ उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ.
१ देश.	१ स प.	६	१०	४	२ ति म.	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ देश	३ के. द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ औप.	१ स	१ आहा	२ साका. अना

परिहारसंजमं पडिवज्जंति; अइट्ठ-उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे तदुप्पत्तिणिमित्तगुणाणं संभवाभावादो। णो उवसमसेढिं चढमाणा; तत्थ पुव्वमेवमंतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिदविहारादो। ण तत्तो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णट्ठे उवसमसम्मत्तेण विहारस्सासंभवादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९९]।

उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम, तीर्थंकर-चरणमूल-वसति, प्रत्याख्यानपूर्व-महार्णवपठन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव है। और न उपशमश्रेणीपर चढ़नेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना है, क्योंकि, उपशमश्रेणिपर चढ़नेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमी अपने गमनागमनादि विहारको उपसंहरित अर्थात् सकुचित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है, क्योंकि, श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमीका विहार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

सं. ४९९ उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	ग.	ग.	इ	का	यो.	वे	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ स.प	६	१०	४	१ म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ.१	३	४	४ मति श्रुत. अव. मन.	२ सामा. छेदो	३ के द विना	द्र. ६ भा ३ शुभ	१ भ.	१ औप	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

णत्थि । उत्तं च—

मणपज्जवपरिहारा उवसमसम्मत्त दोण्णि आहारा ।
एदेसु एक्कपयदे णत्थि त्ति य सेसय जाणे[1] ॥ २२९ ॥

तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, साभारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[100] ।

कहा भी है—

मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम, प्रथमोपशमसम्यक्त्व, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इनमेंसे किसी एकके प्रकृत होनेपर शेषके आलाप नहीं होते हैं, ऐसा जानना चाहिए ॥ २२९ ॥

विशेषार्थ—गोमट्टसार जीवकाण्डमें भी यही गाथा पाई जाती है, परंतु उसमें ' मसम्मत्त ' के स्थानमें ' पढमुवसम्मत्त ' पाठ पाया जाता है जो संगत प्रतीत होता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक इन सबके होनेका विरोध है औपशमिकसम्यक्त्वके साथ नहीं। यद्यपि औपशमिकसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक नहीं होते हैं फिर भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी अपेक्षा औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञानका होना संभव है, इसलिये गाथामें 'उवसमसम्मत्त' ऐसा सामान्य पद रखनेसे औपशमिकसम्यक्त्वके साथ भी मनःपर्ययज्ञानके होनेका निषेध हो जाता है जो आगम विरुद्ध है। तो भी 'उवसमसम्मत्त' पदका अर्थ प्रथमोपशमसम्यक्त्व कर लेने पर कोई दोष नहीं आता है यही समझकर पाठमें परिवर्तन नहीं किया है।

संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ मणपज्जव परिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा । एदेसु एक्कपगदे णत्थि त्ति असेसय जाणे ॥
गो. जी. ७२९.

नं. ५०० उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आ .

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ल.	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ अप्र.	१ स प	६	१०	३ आहा. विना.	१ म	१ प.	१ त्र.	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत अव मन	२ सामा. छेदो	३ के द. विना.	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ	१ औप.	१ स	१ आहा	१ साका अना.

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति ताव ओघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ उवसमसम्मत्तं भाणियव्वं।

मिच्छत्त-सासणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ओघ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-भंगो।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

पाधण्णपदे अवलंबिज्जमाणे सव्वाणुवादाणं मूलोघ-भंगो होदि; तत्थ सव्वे वियप्प-संभवादो। गुणणामे अवलंबिज्जमाणे ण होदि। पाधण्णपदे अणवलंबिज्जमाणे असंजमादीणं कधं गहणं? ण; वदिरेगमुहेण संजमादि-परूवणट्ठं तप्परूवणादो। तेण दोण्णि वि वक्खाणाणि अविरुद्धाणि। एसत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र उपशमसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके आलाप क्रमशः मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके आलापोंके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

प्राधान्य पदके अवलंबन करनेपर सभी अनुवादोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं, क्योंकि, मूल ओघालापमें विधि प्रतिषेधरूप सभी विकल्प संभव हैं। किन्तु गौणनाम-पदके अवलंबन करनेपर सभी विकल्प संभव नहीं हैं, क्योंकि, इस नामपदकी दृष्टिसे गुण-नामोंके भंगोंके ही आलाप कहे जायेंगे, दूसरोंके नहीं।

शंका—तो फिर प्राधान्यपदके अवलंबन नहीं करनेपर संयमादिके प्रतिपक्षी असंयमादिका ग्रहण कैसे किया जा सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व्यतिरेकद्वारसे संयमादि विकल्पोंकी प्ररूपणाके लिए ही असंयमादि विपक्षी विकल्पोंकी प्ररूपणा की जाती है, तभी विवक्षित मार्गणाद्वारा समस्त जीवोंका मार्गण हो सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिए संयमादि अन्वयरूप और असंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यान अविरुद्ध हैं। यही अर्थ सभी मार्गणाओंके विषयमें कहना चाहिए।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीव, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

[१०]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ

त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना शेष सात , सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. ५०१ संज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ मि से क्षी	२ स प स अ.	६प ६अ	१० ७	४ क्षीणक.	४	१ प	१ त्र	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	३ के द विना.	६ द्र.६ भा.६	२ भ अ.	६	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५०२ संज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	सय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१२ मि से क्षी.	१ स. प	६	१०	४ क्षीणक	४	१ प	१ त्र	११म.४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ अपग	४ अकषा	७ केव विना	७	३ के.द विना	६ द्र ६ भा ६	२ भ. अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७१] ।

सण्णि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत, और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, सं , आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

नं. ५०३ संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि सासा अवि प्रम	१ सं.	६अ	७	४	४	१ पं	१ त्र.	४ औ मि व मि आ मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ असं सामा छेदो	३ के द विना	द्र ३ का. शु भा. ६	२ भ अ	५ सम्य विना.	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५]।

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों क , तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्या लसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवस , छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०४ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१ मि.	२ स. प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ प	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा. ६	२ भ अ.	१ मि	१ स.	२ आहा. अना	२ साका. अना

नं. ५०५ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ मि.	१ सं पं	६	१०	४	४	१ प	१ त्र.	१० म. ४ व ४ औ. १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०६]।

[५०७](सण्णि-) सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तका बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सदन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीव स, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

१ प्रतिषु त्वन्यत्र कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्तीति ज्ञेयम्।

नं. ५०६ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मि.	१ सं अ	६अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु. अच	द्र २ का शु. भा.६	२ भ. अ.	१ मि	१ स	२ आहा. अना	२ साका. अना.

नं. ५०७ सज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सा.	२ स.प. स अ	६प. ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र.	१३ आ द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ.	१ सासा.	१ स	२ आहा अना.	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारो कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान,

---

सं. ५०८ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ.	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा.	१ स.प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र.	१० म ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ अस.	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ साला	१ स	१ आहा	२ साका अना.

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०९] ।

(सण्णि-)सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१०] ।

असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०९ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	१ स अ.	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र.	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ४ का शु. भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५१० संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ स.प	६	१०	४	४	१ प.	१ त्र	१० म ४ व ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु. अच.	द्र ६ भा ६	२ भ.	१ सम्य	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

(सण्णि-) असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

[११] तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारो वचनयोग, औदारिक-

नं. ५११ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	२	६प.	१०	४	४	१	१	१३	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	२	२
अवि	स प. स अ	६अ	७			प.	त्र.	आ द्वि विना.			मति श्रुत अव.	अस	के द विना	भा ६	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा अना	साका अना.

नं. ५१२ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अवि.	म.प					प	त्र	म ४ व. ४ औ १ वै १			मति श्रुत अव	अस	के. द. विना.	भा ६	म.	औप क्षा क्षायो.	स	आहा	साका अना

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

कार्ययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके संज्ञी जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापोंके समान होते हैं।

नं. ५१३ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ पं.	२ त्र	३ औ मि वै मि. कार्म	२ पु न	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं.	३ के द. विना	द्र. २ का. शु भा. ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, पंचिंदियजादी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६] ।

दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्तके बिना शेष छह अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, छहों काय, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५१५ असंज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	१ पर्या. स पं. विना	५ ४	९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति	५	६	२ व अनु. १ औ १	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस.	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ.	१ मि.	१ अस	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५१६ असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ मि	१ अप स अ विना	५अ ४अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति	५	६	२ औ मि. कार्म.	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ.	१ मि.	१ स.	२ आहा अना	२ साका अना

णेव-सण्णि-णेव-असण्णीणं सजोगि-अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[1]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, चोद्दस जोग कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1] ।

संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित सयोगिकेवली, अयोगिकेवली और सिद्ध भगवान्‌के आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं।

इसप्रकार संज्ञी मार्गणा समाप्त हुई।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच [illegible]प्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, सयोगिकेवलीके चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चौदह योग होते हैं, क्योंकि, यहांपर कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अक[illegible] थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

नं. ५१७ आहारक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ
१३ मि से सयो	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२ ४,२	४ क्षीण.	४	५	६	१४ कार्म. विना	३ अप.	४ अपग.	८	७	४	द्र ६ भा ६	२ म अ.	६	२ स असं. अनु.	१ आहा	२ साका. अना. तथा यु उ

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, एगारह जोग, ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगा णत्थि। तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा"[८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

उन्हीं आहारक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--आदिके तेरह गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग होते हैं, क्योंकि, यहांपर औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग नहीं होते हैं। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं आहारक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी

नं. ५१८ आहारक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ मि से सयो	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ४ ६ ४	४ संज्ञा क्षीण	४	५	६	११म.४ व ४ औ १ वै १ आ २	३ त्रय	४ त्रय	८	७	४	द ६, मा ६	२ म-अ	६	२ स असं अनु.	१ आहा	२ साका. अना. तथा यु. उ.

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा (सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[१])।

आहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[१]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, बारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि

है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्र-काययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, विभंगावधि और मन:पर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं, किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों

१ कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति।

सं. ५१९ आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि सा अवि. प्रम. सयो.	७ सं. अ.	६अ ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ संज्ञा	४	५	६	३ आ मि व मि आ मि.	३ त्रय	४ क्षय	६ कुम मति श्रुत अव. केव	४ असं. सामा छेदो यथा	४	द्र. १ का भा सा	६ अ	५ मि सासा आप क्षायो	२ स. असं अनु.	१ आहा	२ साका. अना तथा यु. उ

वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२८]।

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यायें, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञायें, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यायें, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ५२० आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ मि.	२४	६प	१०,७	४	४	५	६	१२	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ स असं.	१ आहा.	२ साका. अना.
		६अ.	९,७					म ४											
		५प	८,६					व. ४											
		५अ	७,५					औ.२											
		४प.	६,४					वै २											
		४अ	४,३																

नं. ५२१ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प.	प्रा.	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा.६	२ भ अ	१ मि.	२ स असं	१ आहा	२ साका अना.
		५	९					म. ४											
		४	८					व ४											
			७					औ १											
			६ ४.					वै. १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२१]।

[२२२]आहारि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ,

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों

नं. ५२२ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ अप	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	२ औ मि वै मि	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का मा. ६	२ भ अ.	१ मि	२ स असं.	१ आहा	२ साका. अना

नं. ५२३ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ मा.	२ सं. प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ प	१२ म ४ व ४ औ २ वै २	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ मा. ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना

पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तका बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों ं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक. काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, अ , आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सं , आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात , चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और

नं. ५२४ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग.	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय.	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ सा	१ स.प	६	१०	४	४	१ प	२ त्रस	१०म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	१ भ	१ संज्ञा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२]।

आहारि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२३]।

वैक्रियिक[ ] काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिक-काययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सं[ ], आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२५ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६ अ	७	४	३ ति. म दे	१ प	१ त्र	२ औ मि वै मि	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. १ का भा ३	१ भ.	१ सासा.	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

नं. ५२६ आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ
३ सम्य	१ सं. प	६	१०	४	४	१ प.	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै. १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच.	द्र ६ भा ६	१ भ.	१ सम्य	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद. चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२७]।

[५२८]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों ,

नं ५२७ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	स.	ग.	इ.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि.	२ स.प. स.अ.	६प ६अ.	१० ७	४	४	१ प	१ त्र	१२ म ४ व. ४ औ.२ वै २	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के.द. बिना.	द्र ६ भा.६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	२ स	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५२८ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	स	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय.	द.	ले	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि	१ स.	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	१० म. ४ व. ४ औ १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं	३ के द बिनां	द्र. ६ भा.६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो	१ स	१ आहा.	२ साका अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९]।

आहारि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकत्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात , चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्य-

नं. ५२९ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अवि.	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ प.	१ त्र	२ औ मि वै मि.	२ पु. न	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के द. विना	द्र. १ का. भा. ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण,संजमासजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०]।

[१११]आहारि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और आहारककाययोगद्विक ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक,

नं. ५३० आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ देश.	१ स प	६	१०	४	१ ति म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत अव	१ देश	३ के. द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ म	३ औप. क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका. अना

नं. ५३१ आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	स	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले.	भ	स	संज्ञि	आ.	उ.
१ प्र	२ स प ६अ.	६प ६अ.	१०	४	१ म	१ प.	१ त्र	११ म ४ व. ४ औ. १ आ. २	३	४	४ मति. श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द. विना	द्र. ६ भा ३ शुभ	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ स.	१ आहा	२ साका. अना.

तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एत्थ पज्जत्तापज्जत्ता आलावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ।

आहारि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२]।

आहारि-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस आहारक प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप भी कहना चाहिये। इसीप्रकार जहां पर संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास होवें वहां भी सामान्य आलापके अतिरिक्त दोनों प्रकारके आलाप और कहना चाहिए।

आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुण-

---

नं. ५३२ आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	सय	द	ल	भ.	स	सज्ञि	आ	उ
१ अप्र.	१ स प	६	१०	३ आहा विना.	१ म	१ पं.	१ त्र	९ म ४ व ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत अव मन	३ सामा. छेदो परि.	३ के द विना	द्र.६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५३१]।

[५३२]आहारि-पढम अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा,

स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य-

नं ५३३ आहारक अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अपू	१ स प.	६	१०	३ आहा विना	१ स	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन .	२ सामा छेदो	३ के.द. विना	द्र. ६ भा.१ शुक्ल.	१ भ	२ औप क्षा	१ स.	१ आहा.	२ साक. अना

नं. ५३४ आहारक अनिवृत्तिकरणके प्रथम भागवर्ती जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ.	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि प्रम	१ छं छ	६	१०	२ मै. परि	१ म	१ पं.	१ त्र.	४ म. ४ व ४ औ. १	३	४	४ मति श्रुत. अव. मन .	२ सामा छेदो	३ के द. विना	द्र ६ भा.१ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा.	१ स	१ आहा.	२ साका. अना.

भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सेस-चदुण्हमणियट्टीणं ओघ-भंगो।

आहारि-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोहकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५]।

आहारि-उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

सिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके शेष चार भागोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके चार ज्ञान, सूक्ष्म साम्परायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक येदो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग,

---

नं. ५३५ आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सूक्ष्म	१ सं. प.	६	१०	१ परि.	१ म.	१ प	१ त्र.	९ म ४ व ४ औ. १	० अपग.	१ लो. सू.	४ मति श्रुत अव मन.	१ सूक्ष्म	३ के. द विना.	६ भा. १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, अवगदवेदो, उवसंतलोहकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५९] ।

आहारि-खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[६०] ।

अपगतवेद, उपशान्तलोभकषाय, आदिके चार ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, अकषाय, आदिके चार ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ५३६ आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो.	वे	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सन्नि.	आ.	उ.
१ उप.	१ स प	६	१०	०	१ म	१ प	१ त्र.	९ म ४ व ४ औ.१	०	०	४ मति श्रुत अव मन	१ यथा.	३ के द. विना.	द्र ६ भा १ शुक्ल.	१ भ	२ औप. क्षा	१ स	१ आहा	२ साका. अना.

नं. ५३७ आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का	यो	वे.	क	ज्ञा	सय	द.	ले.	भ	स	सन्नि	आ	उ
१ क्षीण	१ स प.	६	१०	०	१ म	१ प	१ त्र.	९ म ४ व ४ औ १	०	०	४ मति श्रुत अव मन	१ यथा.	३ के द. विना	द्र ६ भा १ शुक्ल.	१ भ	१ क्षा.	१ स	१ आहा	२ साका. अना

आहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, छ जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि; अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[५३८]।

एवं पज्जत्तापज्जत्तालावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अणाहारीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, अट्ठ

आहारक सयोगिकेवली जिनके आ कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अ , छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, वचनबल, काय-बल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा कायबल और आयु ये दो प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दो वचनयोग, औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग ये छह योग होते हैं, किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसी सयोगिकेवलीके पर्याप्त और अपर्याप्त अ कहना चाहिए। इसी-प्रकार सर्वत्र कहना चाहिए।

अनाहारक जीवोंके न्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, सयोगिकेवली और अयोगि ि ये पांच गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, अपर्याप्त और अयोगिकेवली गुणस्थानसंबन्धी एक पर्याप्त इसप्रकार आठ

नं. ५३८ आहारक सयोगिकेवली जिनके

गु.	जी.	प.	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	सन्नि	आ	उ
१ सयो.	२ प. अ.	६प. ६अ	४ २	० छद्मस्थ	१ म	१ प	१ त्र.	६ म २ व २ औ २	० अवग.	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ के द.	६ ६ भा १ शुक्ल	१ भ.	१ क्षा	० अनु	१ आहा	२ साका-अना-पु उ

जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाण वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगई वि अत्थि, पंच जादीओ अदीदजादी वि अत्थि, छ काय अकाओ वि अत्थि, कम्मइयकायजोगो अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, दो संजम णेव संजमो णेव अ ' मो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ार-अणागारेहिं जुगवदु-वजुत्ता वा[पर] ।

समास तथा अतीतजीवसमास भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, प्राण, सात प्राण, छह , , चार प्राण, तीन , दो , तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों सं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों ि तथा सिद्धगति भी है, पांचों जातियां तथा अतीत स्थान भी है, छहों काय तथा अकायस्थान भी है, कार्मणकाययोग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि तथा मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह , असंयम और यथाख्यातसंयम ये दो संयम तथा , अ और संय यम इन तीनों से रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यायें तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों ्पोंसे रहित भी स्थान है, सम्यग्मिथ्यात्वके विना सम्यक्त्व, संज्ञिक, असं तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों ्पोंसे रहित भी स्थान है, अनाह , साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ५३९ अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	स.	ग	इ	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि सा अवि. सयो अयो. अ गु.	८ अप ७ अयो प १ अती जीव	६प ६अ ५ ,, ४ ,, अती प	७ ७ ६ ५ अती ४ ३ २ १	४ क्षीणस.	४ सिद्ध.	५ जाती का	६ अकाय.	१ कार्म. काययो	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभ मन विना.	२ असं. यथा अन्त	४	६.६ भा.६ अले	२ म अ.	५ सम्य विना	२ सं असं. अनु.	१ अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

अणाहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७]।

[५८]अणाहारि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगदी णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु यहांपर नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

नं. ५४० अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा.	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ अप	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु. अच	द्र १ शु भा ६	२ भ अ.	१ मि	२ स असं.	१ अना	२ साका. अना

नं. ५४१ अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ सा.	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति. म दे	१ पं	१ त्र	१ कार्म	३	४	२ कुम. कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र १ शु भा ६	१ भ.	१ सासा	१ स	१ अना	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

अणाहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तस-काओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५४१]।

अणाहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाण, मण-वचि-उस्सासपाणा णत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं,

कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं, किंतु यहांपर मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रि-यजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धि-

नं. ५४२ अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
२ अवि.	१ सं अ	६ अ १	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१ कार्म	३ पु. न.	४	३ मति श्रुत. अव.	१ असं.	३ के द. विना.	द्र. ३ शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा क्षायो	१ सं.	१ अना.	२ साका. अना.

जहाक्खादविहारसुद्धि[1] मो, केवलदंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सरीरणिप्पायणत्थं णोकम्मपोग्गलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति[५४३]।

[५४४]अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीव सो, छ पज्जत्तीओ, एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण

संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ल अथवा छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, शरीर-निष्पादनके लिये आने वाली नोकर्म पुद्गलवर्गणाओंके अभाव हो जानेसे अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर अनाहारक सयोगिकेवलियोंके लेश्या आलापका कथन करते सभी प्रतियोंमें 'दव्वेण छ लेस्साओ' इतना ही पाठ पाया जाता है परंतु पूर्वमें कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप बतलाते समय द्रव्यसे शुक्ललेश्या अथवा छहों लेश्याएं कही गई हैं, इसलिये यहांपर भी उसीके अनुसार सुधार कर दिया गया है।

अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस काय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन,

१ प्रतिषु 'दव्वेण छ लेस्साओ' इति पाठः ।

नं. ५४३ अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क.	ज्ञा.	सय	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सयो.	१ अप	६ छह.	२	० क्षीणस.	१ म	१ प	१ त्र	१ कार्म.	० अपग.	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ के.द.	द्र १ शु अ.६ भा १ शु.	१ भ.	१ सं.	० अनु.	१ अना	२ साका अना- यु. उ.

नं. ५४४ अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ.
१ अयो.	१ प	६	१ आयु	० क्षीणस.	१ म	१ प	१ त्र	० अयोग.	० अपग.	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ के.द	द्र ६ भा ० अले	१ भ	१ सं.	० अनु	१ अना	२ साका अना- यु. उ

छ ले ओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा।

अणाहारि-सिद्धाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादी, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसण, दव्व-भावेहिं अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति ॥

एवं आहारमग्गणा समत्ता।

तहेव च

संत-परूवणा समत्ता।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञि इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप कहने पर--अतीतगुणस्थ , अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अतीतजाति, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, , असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और से अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त हैं।

इसप्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई। और इसीप्रकार उसके साथ
सत्प्ररूपणा भी समाप्त हुई।

नं. ५४५ अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप.

गु	जी	प.	प्रा	स.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
० अती. गु.	० अती जी.	० अती. प.	० अती. प्रा.	० क्षीणस.	० सिद्धग.	० अती. जा	० अकाय.	० अयोग.	० अपग	० अकषा	१ केव.	० असं.	१ के.द.	० अलेश्य	० भव्य	१ क्षा.	० असं.	१ अना	२ साका. अना. यु उ.